निमाई भट्टाचार्य/
रिपोर्टर

पुस्तक पढने के मेरे अभिभावक
श्री शचीन्द्र नाथ मुखोपाध्याय
और भाभी जी को।

—निमाई

रिपोर्टर

•

उन्नीस सौ तीस मे गाँधी जी की पुकार पर सारे देश मे कानून भंग का आन्दोलन छिड गया। वज्रमुष्टि जाति ने अंग्रेजो को भारत छोडने की तैयारी करने का संकेत किया। गाँधी जी के इस निमंत्रण को अंग्रेज सरकार ने स्वीकार कर लिया था। 'एटिकेट' और 'मैनर्स' के बादशाह अंग्रेजो ने खाली हाथ ही निमंत्रण की रक्षा नही की थी, हिन्दुस्तानियो को बुलेट दिया था, बहुतो को मेजबानी करने के लिए जेल के सीखचो मे बन्द कर दिया था। उस दिन की बात आज किस्सा-कहानी जैसी लगती है, हिन्दुस्तान के बाशिन्दे इसे भूलते जा रहे हैं।

सुनने मे आया है, इस आन्दोलन के समय वन्दविला ग्राम ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। चरखे से शोभित तिरंगा झण्डा फहराकर इस पूर्व बंगाल के नगण्य गांव मे राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की गयी थी। उस ग्राम केन्द्रिक राष्ट्रीय सरकार ने राजस्व की वसूली से लेकर डाक-टिकट तक बेचना शुरू कर दिया था। कुछ दिनो तक वन्दे मातरम् ध्वनि से मुखरित उस आनन्दमय क्षुद्र ग्राम ने दिल्ली मसनद तक को अँगूठा दिखा दिया था। लेकिन ऐसा कुछ दिना के लिए ही हुआ।

अचानक एक दिन सूरज उगते न उगते वन्दविला के चारो ओर अंग्रेज सेना और देशी पुलिस आ धमकी। आजादी के दीवाने मुट्ठी-भर निहत्ये गाँव के औरत-मर्द बच्चा पर लाठी और बुलेट से आक्रमण किया गया। उन्मत्त सैनिको ने पुआल के घरा मे आग लगा दी। प्रभात-स्नान के

सूरज ने रक्तिम प्रकाश को मलिन बनाकर उस आग की विनाश-कारी लपलपाती जिह्वा ने आधे गाँव को अपने आलिंगन में भर लिया। इतना ही नहीं, भोजन के बाद जिस तरह भोजन-दक्षिणा दी जाती है उस तरह वन्दविला में वास करने वाली युवती और प्रौढाओं के भाग्य में कुछ और ही बदा था। अतिथियों के लाड-प्यार के कारण बहुतों के शरीर से रक्त का फव्वारा चलने लगा था, हमारी निष्पाप-निष्कलंक मातृ-जाति के शोणित से वन्दविला की काली माटी लाल हो गयी थी।

कई घण्टों के बाद यह खेल समाप्त हुआ। लेकिन दुबारा जब वन्दे मातरम् ध्वनि सुनाई पडी तो सूर्य माथे पर आ चुका था। जगन्नाथ डाक्टर छुरी-कैंची से नेपुदा के कंधे से बुलेट बाहर निकाल कर जब पट्टी बाँधने लगे तो सूर्य पश्चिम की ओर तनिक झुक चुका था।

कांग्रेस ऑफिस के बरामदे पर बैठ कर नेपुदा उसके बाद की कहानी कहने के पूर्व फफक-फफक कर रो पडा। फटे कुरते से आँखों के आसू पोंछते हुए कहा था, 'दुनिया में अपना आदमी कहने के लिए सिर्फ मेरी मा ही थी। मा मुझे रख कर सोलह या सत्रह साल की उम्र में विधवा हुई थी। लेकिन जब मुझे होश आया तो घर आने पर देखा, मा सफेद बिना किनारे की साडी उतार लाल छपी साडी पहने, बरामदे पर लेटी है। बाद में समझ में आया कि मा की सफेद बिना किनारी की साडी किस तरह लाल हो गयी थी।

मुझे यह समझ में नहीं आया कि सफेद बिना किनारे की साडी के बाद लाल सफेद साडी पहनने से नेपुदा के लिए दुख करने की कौन-सी बात है। मैंने अचकचा कर उसके चेहरे की ओर देखा। शायद मेरी दृष्टि से ही मेरे मन का प्रश्न झाक गया। नेपुदा ने मुझे गले से लगा कर कहा, "बच्चू, अभी तुम छोटे हो। बडे हो जाओगे तब मेरा दुख तुम्हारी समझ में आयेगा।

इसके बाद नेपुदा का पैतृक मकान कांग्रेस ऑफिस और ससुराल जेलखाना हो गया। पैतृक मकान में काम का कोई ओर-छोर नहीं था,

किमी दिन दो मुट्ठी अनाज नसीब होता था और किमी दिन नहीं होता था। मगर ससुराल मे दामाद के आहार-विहार, यहाँ तक कि प्रहार मे भी कोई त्रुटि नही की जाती थी।

नेपुदा कभी लीडर नही रहे। किसी सभा-समिति मे उन्हे भाषण देते नहीं देखा था। लेकिन नेपुदा न होते तो काग्रेस की कोई मीटिंग ही नही होती थी। छिपकली की तेज निगाह से बचकर काग्रेस कमेटी की गोपनीय मिटिंग होगी तो इसका इन्तजाम कौन करेगा ? नेपुदा। पुलिस की नाक के सामने कोतवाली के मैदान मे १४४ धारा का उल्लघन कर स्वाधीनता दिवस की मीटिंग होगी, इसकी व्यवस्था कौन करेगा तो नेपुदा। गुप्त सस्था के कार्यकर्त्ताओ के हाथ मे कुछ रुपया-पैसा पहुँचाना ह तो यह काम भी नेपुदा को करना है। नेपुदा काग्रेस ऑफिस के सर्वे-सर्वा नही थे मगर काग्रेस के हर काम मे मुस्तेद जरूर रहते थे। इसके अलावा उस समय आज की तरह काग्रेस ऑफिस मे देश प्रेमिको की भरमार भी नही थी।

लगभग पाच हजार छात्रो से साथ हडताल करने के बाद मैंने जब देश-सेवा की शुरुआत की, उमी समय पहले-पहल नेपुदा के सपर्क मे आया। नेपुदा आठ-दस स्कूल के लडके-बच्चो को हडताल कराकर सब का जुलूस एक साथ लिए म्युनिसिपैलिटी के मैदान मे आता था। अपने स्कूल के आशिसदा, विमलदा, टाउन स्कूल के कनकदा और मोडर्न स्कूल के सुखमयदा जैसे उस्तादो को नेपुदा की बात पर उठते-बैठते देख-कर मेरे होश गुम हो जाते थे। मेरे कैशोर मन के अपरिपक्व मन ने नेपुदा के ऊँचे दर्जे के नेता के रूप मे कल्पना कर ली थी। बडे-बडे नेताओ को नेपुदा को गले से लगाकर प्यार करते जब देखता तो मैं आश्चर्य चकित हो जाता था।

उम्र बढने पर मेरी समझ मे यह बात आयी कि नेपुदा लीडर नही, स्वय सेवक है। उसे बस काम मिलना चाहिए—देश का काम, काग्रेस का काम। उस काम के साथ महगाई के भत्ते की बढोत्तरी या टैक्सी के

परमिट का प्रश्न जुडा नही था। थी तो केवल देश-माता की जजीर तोडने की अदम्य कामना। मध्यवित्त घर मे पैदा होने के बावजूद नेपुदा की उस कठोर साधना से मैं उस कच्ची उम्र मे अवाक हो जाता था। गरमी के दिनो मे नेपुदा के बदन पर खादी का फटा कुरता और पाजामा रहता था। माघ की सरदियो मे जवाहर बण्डी, ब्रेकफास्ट, लच या डिनर के तौर पर दिन ढलने पर एक ही साथ एक हाडी खिचडी पकायी जाती थी। खिचडी पक कर तैयार हो कि इसके पहले ही नेपुदा केले का पत्ता बिछाकर बैठ जाता था। उसके बाद दो-चार मिनटो मे ही उस महाघ खिचडी को खाकर नेपुदा उठकर खडा हो जाता था। कच्ची उम्र रहने के बावजूद मेरी समझ मे आ जाता कि उस खिचडी से नेपुदा का पेट नही भरा है, मगर ऐसा होने पर भी वह चेहरे पर हँसी लेकर उठ कर खडा हो जाता था। मैं हैरत मे आकर सोचने लगता था। सोचता, जाने किस मत्र के बल नेपुदा जैसे लोग फटी-पुरानी खादी के नीचे इतनी कामनाओ को छिपाकर रख लेते हैं! और आज? आज साफ-सुथरे खद्दर के नीचे कितना वैभव छिपा हुआ है! खैर, यह बात रहे।

जो लोग काग्रेस के लीडर थे उनसे मुझे कोई सहारा नही मिलता था। इसलिए स्कूल की हडताल और नेपुदा की मुसाहबी से ही मैं सतुष्ट रहता था। बदले मे नेपुदा भी मुझे प्यार करता था। जब कुछ साल इसी तरह बीत गये तो समझ मे आया कि मैं नेपुदा से प्रेम करने लगा हूँ। मुझे यह अहसास होने लगा कि मैं नेपुदा के आत्म-त्याग पर मुग्ध हो गया हूँ, उसकी नि स्वार्थ देश-सेवा के कारण मैं उसे श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगा हूँ। सबके अनजाने ही हमारे बीच प्रीति का एक सपर्क स्थापित हो गया है। उसके बाद?

उसके बाद इतिहास ने आधी की तरह एक नया मोड लिया। बयालीस के आदोलन, तैतालीस के मन्वन्तर और छियालीस के दगे के बाद बगाल का दो हिस्सो मे विभाजन हो गया। आइ० सी० एस० अन्नदा शकर ने लिखा "तैल की शीशी टूटने पर लोग जिस तरह बच्चो

पर झल्ला उठते हैं, उसी तरह बूढे बच्चो ने बगाल को तोडकर विभाजित कर दिया।" लाखा आदमी की तरह मैं भी इस धमाके से छिटक कर दूर फिक गया। बीते जीवन पर एक काला ड्रापसिन गिर पडा। सब कुछ खो गया और बदले मे मिला सिफ सघर्ष कर जीवन जोने की तीव्र अनुभूति।

लगभग डेढ साल बाद को बात है। सबेरे ट्यूशन करके लौट रहा था तो टु ए बस मे नेपुदा से मुलाकात हो गयी। होश हवास खोकर हम दोना आनन्द से चिल्ला उठे। वस मे ठसाठस भरे लोग पेशानी पर बल लाकर हमारी आर देखने लगे। दो-चार आदमी सभवत हमे पूर्व बगाल के रहने वाले सोचकर मुसकरा उठे थे।

ठनठने कालीतल्ला मे उतर नेपुदा का अपने खडहरनुमा डेरे पर ले आया। नेपुदा के सम्मान मे खोका की दुकान से तैल के पकौडे और दो चुक्कड चाय मँगवायी। पकौडे खाने और चाय पीने के बाद धोती के छोर से हाथ पोछते-पोछते मैं नेपुदा को आत्म-जीवनी का तत्कालीन प्रचलित अध्याय भी बता गया। बहुत दिनो के बाद एक परम आत्मीय शुभैषी को पाकर तोशक के नीचे से एक सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका निकालकर गर्व के साथ अपनी साहित्य-सेवा का एक ज्वलन्त प्रमाण मैने नेपुदा को दिखाया।

पलग पर गोलाकार बधे तोशक पर निढाल पडा नेपुदा एकाएक उठकर बैठ गया। नीले धागे की कडवी-मीठी बीडी से सुख का एक जोरदार कश लेते हुए नेपुदा बोला, "बच्चू, अपनी रचना पढ जाओ।'

मास राककर मैं अपनी रचना पढ गया। नेपुदा की स्नेहिल आखें मेरे किसी उद्यम को निन्दा नही करेंगी, यह बात मुझे मालूम थी। फिर भी उसकी प्रशसा सुनकर मेरा मन खुशियो से झूम उठा। बहुत दिनो के बाद, बहुतेरे सघर्षो के बीच से गुजरकर जीवित रहने के आनद का मुझे वास्तविक स्वाद प्राप्त हुआ।

अग्रेजी मे कहावत है, मिसफॉरचुन नेवर कम्स एलोन। मुझे लगता

है, सौभाग्य भी कभी अकेला नही आता । अगर इसमे सच्चाई नही है तो फिर नेपुदा से मेरी मुलाकात ही क्यो होती और अगर होती भी तो वह मुझे दैनिक सवाद, के सपादक से परिचय करा देने का वचन ही क्यो देता ? नेपुदा ने मुझसे कहा था, 'दैनिक सवाद' के सपादक हरिसाधन बाबू उसके खास मित्र है और एक लबे अरसे तक राजनीतिक सहकर्मी रह हैं । इस बात पर विश्वास नही करूँ, ऐसा कोई कारण नही दीख रहा था । लेकिन मन ही मन अविश्वास हो रहा था, वह क्या मुझे लिखने का सुयोग प्रदान करेंगे ?

खोका की दुकान मे और एक चुक्कड स्पेशल डब्ल हाफ पीकर उस दिन नेपुदा वहा से चला गया । जाने के समय गली के नुक्कड पर खडा होकर कह गया, "अगले बुधवार को तीसरे पहर घर पर रहना, हरिसाधन के पास ले चलूगा ।"

बहुत दिन पहले 'डेविड कोपरफिल्ड' पढाने के समय हेड मास्टर सत्य बाबू अक्सर रवीन्द्रनाथ की एक पक्ति कहा करते थे । आज मुझे एकाएक वह पक्ति याद आ गयी—दुख की बरसात मे जैसे ही आखो के आँसू का बहना शुरू हुआ, वक्षस्थल के दरवाजे पर तभी मित्र का रथ आकर रुका ।

मैंने खडे-खडे देखा, नेपुदा कानवालिस स्ट्रीट की भीड मे खो गया । मैं खाली हाथ घर लौट आया । जगते हुए सपना देखा रोटरी मशीन से अखबार छप रहा है । जिस तरह जाग्रत देवता के चरणा पर अनगिनत लोग माथा टेकते हैं, उसी तरह रोटरी मशीन के चरणो के नीचे हजारो अखबार लोट रहे हैं । हवाई जहाज, रेलगाडी और मोटर से वह अखबार देश-देशान्तर जा रहा है, हॉकर साइकिल पर अखबार का ढेर लिए राह बाट, शहर नगर मे चीत्कार कर रहे हैं और लाखो लाग उस अखबार का सुप्रभात मे स्वागत कर रहे हैं । और ? और उस अखबार के हर पन्ने पर मेरा ।

सपना टूट गया । सोचा, ऐसा कही होता है ? मैं क्या नशे मे था ?

हो सकता है, नशे मे ही था। होश आने पर महसूस किया, सपने की भी कोई न कोई सीमा होनी चाहिए। मास्टर-प्रोफेसरो से खासी जान-पहचान रहने के बावजूद स्कूल कॉलेज के मेगजीन मे एक पक्ति छपवाने मे हालत खराब हो जाती है। और यह तो अखबार है। स्कूल-कॉलेज के मैगजीन मे रचना प्रकाशित होने के दो महीने पहले नोटिस निकलता है। उन रचनाओ पर अनुभवी प्रोफेसर और कुशल मास्टरो के सेंसर बोड की लगभग तोन महीने तक कची चलती रहती है। उसके बाद और तीन महीने तक प्रेस के गर्भ मे पडे रहने के बाद धूम-धडाके के साथ मैगजीन प्रकाशित होता हे। ठीक उसी तरह जिस तरह कि लबे अरमे तक पूजा पाठ, व्रत-पालन और गण्डा-तावीज धारण करने और दरिद्र नारायण की सेवा करने के बाद सतानहीन पेसे वाले के घर मे पहली सतान का आविर्भाव होता है। और अखबार ? वह मानो अस्पताल का लेबर-रूम है। नये शिशु के जन्म के लिए प्रतीक्षा करने की ज़रूरत नही पडती। हर रोज सबेरे उसका जन्म होता है, तीसरे पहर उसका बुढापा आ जाता है और रात के अंधेरे मे विदा के लग्न मे चुपके से उसकी मौत आ धमकती है। जन्म के साथ-साथ ही वह बालिग हो जाता है। चौबीस घण्टे के सीमित जीवन मे एकमात्र अखबार ही लाखो लोगो के स्नेह का भागीदार होता है, धनिया के महल से लेकर बस्ती के जमे हुए अँधेरे के जीवन मे उसका एक जेसा ही स्वागत होता है। लोग-बाग एक जेसी ही आवश्यकता महसूस करते हैं। वह बेरोक-टोक हर जगह पहुँच जाता है समाज-सस्कार के तमाम अच्छे-बुरे का मिलन-मदिर समाचार-पत्र का कार्यालय है। कलकत्ते के चित-पुर, दिल्ली की चादनी और बबई के चौपाटी की तरह अखबार के गणदेवता के तमाम वैचित्र्य का नित्य दिन उत्सव होना रहता है। नेपुदा मुझे उस उत्सव का एक फेरी वाला बना लेगा ? यह क्या सभव है ?

दो-चार दिन के बाद ही मुझे अहसास हुआ कि मैं थोड़ा-बहुत चचल हो गया हूँ। किसी एक सभावना मोह और प्रत्याशा से मेरे मरे मन मे उत्साह की बाढ़ आ गयी है। वह बहुत कुछ प्रेम-विवाह के पूर्व की जैसी स्थिति थी। या फिर हजारों दरख्वास्त भेजने और इटरव्यू देने के बाद जैसे अचानक एक्सप्रेस डेलिवरी से नियुक्ति-पत्र प्राप्त हो जाय। जिस दुनिया की जिन्दगी के प्रति मुझमे नफरत का भाव जग गया था वही दुनिया सुहावनी लगने लगी। धरती को जननी कहकर मैंने प्रणाम किया। लगा, कलकत्ते की इस दूषित वायु का बीच-बीच मे वसन्त स्पर्श कर जाता है। जिस कनवालिस स्ट्रीट, कॉलेज स्ट्रीट, हैरिसन रोड के लाखों व्यक्तियों को पहले मैं अनदेखा करना चाहता था, उन्हें प्यार करने लगा। मैंने महसूस किया, किसी दिन इस सेंट्रल कलकत्ता के जनारण्य मे बगालियों की मनीषा के अग्रदूत एकाकार हो गये थे, आज भी शायद उसी तरह कोई आदमी इस भीड़ मे एकाकार हो गया है। ये लोग मेरे लिए प्रणम्य हैं। खुशियों मे आकर मैंने पूरे कलकत्ते को छान डाला—टाला से टालीगज तक की परिक्रमा पूरी कर ली। दोपहर-भर चिड़ियाखाने की घास पर लेटकर मूगफली चिबाता रहा। शाम की धुंधली रोशनी मे, गोधूलि के पुण्य पवित्र लग्न मे, लेक के किनारे टहलता रहा। लगा, मेरे अनन्त जीवन की अभिसारिका मेरे आसपास चेहरे पर हसी ले चोटी हिलाती हुई कह रही है—बन्धू, आगे बढ़ते जाओ। मन की मौज मे आकर लेक के पानी मे ढेला फेंका, बैठकर गुनगुनाते हुए गीत भी गाया।

ठनठनिया मे उतरकर डेरे के दरवाजे पर जाकर ताला खोलने गया तो देखा ताला नदारद है। लगा, मैं भरसक गलत मकान मे चला आया हूँ या फिर एटलाण्टिक को पूरी तरह पार किये बगैर वारमुरा मे आकर न्यूयार्क के फिफ्थ एवेन्यू की खोज कर रहा हूँ। मैं वापस जा रहा था। अचानक एक औरताना आवाज सुनकर पीछे की ओर मुड़ा। दो-चार सेकण्डो के बाद वह आवाज मेरे कान के निकट ही गूज उठी।

लेकिन ठीक-ठीक समझ नही सका। वात उसी समय समझ मे आयी जब मेरे श्रवणयन को एक जोडा कोमल हाथा ने जोरो से खीचा। पीछे मुडकर देखा, हम लोगो की छोटी-सी गृहस्थी की एकमात्र लेडी माउन्ट बेटेन, मेरी भाभी जी, मौजूद हैं।

"उफ, जान निकल रहा है, कान छोड दो, भाभी।"

मा काली की जात है न! उन लोगो पर मीठी वात का असर नही होता। रोने धोने पर भी कोई नतीजा नही निकला। तब हाँ, आजीवन कारावास की सजा के वदले दस वरसो की सश्रम कारावास की सजा मिली। यानी दोनो कानो की जगह एक कान पकड भाभी जी मुझे खीचती हुई ले आयी और भया के विछावन पर बिठा दिया। उसके वाद सरयू बाला की तरह नाटकीय मुद्रा मे गभीर स्वर मे बोली, "बच्चू, तुम क्या नशे मे हो कि दरवाजे तक आकर लौटे जा रहे थे?"

मैंने भी छवि विश्वास की मुद्रा मे जवाब दिया, "देटस नोट ए फैक्ट, माइ डियर गल। तुम शकुन्तला की तरह पति के घर लौट आयी हो, इसका मुझे पता केसे चलता?"

हम दोनो हँस पडे। भाभी ने मेरा कान छोड दिया। लेकिन मेरी मुसकराहट देखकर भाभी को सन्देह हुआ। मेरे कान मे फुसफुसाकर वाली, "भाई बच्चू, किसके साथ ?'

"तुम्हारी बहन के साथ '

भाभी जी जब रोने-गिडगिडाने लगी तो मुझे सच्ची वात वतानी पडी मगर उसे विश्वास नही हुआ। सामने से चोटी को पीछे की ओर फेंकती हुई बोली, "तुम्हारे जैसा शरारती आदमी अखबार मे घुसेगा तो मैं अखवार पढना ही वन्द कर दूगी।'

सुवह-शाम ट्यूशन और उसके वीच भाभी से झगडा-टटा, मार-पीट करने के वावजूद लगा कि दिन जसे आगे वढने का नाम नहा ले रहा है। कानेज-स्ट्रीट के हॉकर्सों के पास खडा हो देनिक पत्र-पत्रिकाओं की

नुमाइश देखने लगा। अपनी सामर्थ्य के बाहर हर रोज ढेर सारा अखबार भी खरीदना शुरू कर दिया।

कुछ दिन ऐसे ही गुजर गये। उसके बाद हाथ मे कोई काम न रहने पर 'दैनिक सवाद' के दफ्तर के सामने चहल कदमी करना शुरू कर दिया। सवेरे भवानीपुर मे छात्र को पढाकर सीधे पाक सर्कस के 'दैनिक सवाद' के कार्यालय के सामने चला जाता था। कार्यालय के आसपास चहल-कदमी करता था। भविष्य का सपना लिए मन ही मन प्रसन्न होता था।

इसी तरह लुढकते-लुढकते किसी तरह बुधवार आया। सवेरा दोपहर मे बदला, दोपहर तीसरे पहर मे। उसके बाद शाम होने-होने का वक्त भी आ गया मगर नेपुदा का कोई पता नही चला। भाभी ने पहले मजाक करना शुरू किया, उसके बाद सात्वना देने लगी मगर मेरे अशान्त मन मे शान्ति नही आयी। गली मे चप्पल-जूते की आवाज होते ही कान खडे हो जाते थे, खिडकी से झाँक कर देखता, लेकिन नेपुदा दिखायी नही पडता था। मेरे मन के अँधेरे के साथ-साथ कलकत्ते के सीने पर भी साँझ का अधेरा उतर आया। घर-घर मे रोशनी जल उठी।

क्रोध, शोक, दुख के कारण अभिमान से आहत मन मुक्ति के लिए छटपटाने लगा। धोती-कुरता पहन कुल मिलाकर पैरो मे चप्पल डालने जा ही रहा था कि तभी चिर चचला भाभी ने उतरे हुए चेहरे से मेरी ओर चाय की प्याली बढा दी। इनकार नही कर सका। अपने दुख से भाभी को दुखित होते देखकर मुझे आत्म तृप्ति का अनुभव हुआ। चाय की प्याली हाथ मे ले खाट पर बैठ गया, मेरे चेहरे पर सभवत हँसी की लकीर भी उभर आयी। एकाएक कुडी खटखटाने की आवाज़ सुन-कर मैं और भाभी एक साथ ही 'कौन' कहकर अजीब ही तरह से चिल्ला उठे। हम दोनो दौडते हुए सिटकनी खोलने गये। सिटकनी खोलते ही नेपुदा अन्दर आया। नेपुदा को देखकर ऐसा लगा जैसे मेरे

सिर पर भूत का जो बोझा था, वह नीचे उतर गया। कमरे मे आकर हम दानो बेठे, भाभी अन्दर चली गया।

नेपुदा की व्यस्तता के कारण नाश्ता चाय के बाद ही हम दोना फौरन उठकर खडे हो गये। कॉलेज स्ट्रीट तक पैदल चलकर पाक सकस की चलती ट्रामगाडी मे कूद कर चढ गये। मोड मे हमे बातचीत का मौका नही मिला। मैं चुपचाप खडा रहा लेकिन मन मे निकटवर्ती भविष्य की आशका की आधी चलने लगी। कैसे स्यालदह, मौलाली, एन्टोली मार्केट वगेरह पार कर पाक सकस पहुँचा, इसका पता नही चला। नेपुदा ने जब पुकारा ता देखा, ट्राम पाक सकस के मैदान के निकट से हाती हुई डिपो के अन्दर चली जा रही है। छलाग लगाकर नोचे उतर गया।

जब मैं 'देनिक सवाद के दफ्तर मे पहुँचा उस समय रात के आठ या सवा आठ बज चुके थे। लेकिन इतनी रात मे इस दफ्तर मे बहुतेरे व्यक्तियो को देखकर मेरा अनभ्यस्त मन थाडा-बहुत आश्चर्य चकित हा गया। तग गलियारे से आगे बढते-बढते देखा, दाहिने प्रेस और बाये 'दैनिक सवाद केबिन मे कपोज और चाय बनाने का दौर चल रहा है। थाडी दूर और बढने पर एक छोटा-सा बरामदा मिला। बरामद के आखिरी छोर की एक टूटी सीढी तयकर नेपुदा ऊपर चला गया। म चुपचाप उसके पीछे चलने लगा।

सीढिया तयकर ऊपर पहुँचते ही सामने के कमरे के एक बोड पर नजर पडी। लिखा था श्री हरिसाधन मित्र—प्रधान सपादक। दरवाजा खुला हुआ ही था। नेपुदा यद्यपि अन्दर चला गया लेकिन मैं बाहर ही खडा रहा। कमरे से बहुत से आदमी की बातचीत के टुकडे मेरे कान मे आ रहे थे। मैं मन ही मन साच रहा था, जो हरिसाधन मित्तिर अनगिनत राष्ट्रीय समस्याओ पर युनिवर्सिटी इस्टिटयूट मे भाषण देते हैं, सावजनिक दुर्गापूजा के उद्घाटन पर वेद-वेदान्त-दशन पर सारगर्भित भाषण देते हैं, रेडियो पर अन्तर्राष्ट्रीय समस्या प

बोलते हैं, वही महापडित इस साधारण परिवेश मे वास करते हैं ! जाने, कितने हो विदग्ध व्यक्तियो का यहा आगमन होता होगा !

कई मिनट बाद नेपुदा बाहर निकला और मुझे बुलाकर अन्दर ले गया। नयी दुल्हन की तरह मैं सलज्ज डग भरता हुआ, सिकुडा-सिमटा सा कमरे के अन्दर गया । सपादक जी मन्त्रि मण्डल के साथ विराजमान थे । पुराने सेक्रेटेरियेट टेबल पर कई सौ अखबार पत्र पत्रिका और चिट्ठियो का अबार था । एक दवात, दो-तीन कलम और प्रागैतिहासिक युग का एक कॉलिंग बेल भी देखा । इसके अलावा एक टेलीफोन था । मेज के बीच जो व्यक्ति बैठ थे, वही हरिसाधन बाबू हैं, यह समझने मे कोई कठिनाई नही हुई । लबा-चौडा दुहरे बदन का आदमी । रग सावला ही कहा जायेगा । पहरावा धोती-कुरता । कुरसी के हत्थे पर चादर पडी थी । आँखो की दृष्टि यद्यपि भाव-व्यजक और सुदूर प्रसारी थी लेकिन उसमे विफलता और निराशा की छाप थी। बहुत कुछ मुफस्सिल के बगला के लेक्चरर जैसा । बहुत उम्मीद और सपना ले युनिवर्सिटी दाखिल होना। वसन्तोत्सव मे इन्द्राणी चटर्जी के साथ ज्वाइन्ट प्रोग्राम। उसके बाद काफी-हाउस की जन-सभा मे एक क्षण के लिए एकान्त में मिलना-जुलना, इडेन के किनारे पदावली की चर्चा । बीच बीच में नोट आपस मे अदलने-बदलने के बहाने काकुनिया रोड के डेरे पर भेंट-मुलाकात । सिक्स इयर मे पहुँच जाने पर एक साथ मैटिनी शो या महाजाति सदन के उत्सव का उपभोग । इसी बीच ट्राम की टिकट की पीठ पर माइकेल की तरह अतुकान्त छन्द मे सॉनेट के एक बन्द की रचना करना—नो लाइफ विदाउट वाइफ । या फिर युनिवर्सिटी जरनल म 'शेष की कविता' के निष्काम प्रेमतत्व को लेकर दार्शनिक आलोचना करना । उसके बाद जीवन-मरण के सहगल की तरह एकाएक बेहला का तार टूट जाना । क्लास से इन्द्राणी लापता हो जाती है । पन्द्रह-बीस दिन के बाद छोटे लिफाफे मे निमन्त्रण-पत्र मिलता है—आना ही है ।—तुम लोगो की इन्द्राणी । इसके बाद बिगडी सेहत और अशान्त मन लेकर

परीक्षा देना और किसी तरह सेकेण्ड क्लास मे पास कर रामपुर महाराजा हरिश्चन्द्र कॉलेज मे लेक्चरर का पद प्राप्त करना।

नेपुदा ने कहा, "हरिसाधन बाबू, यह हम लोगो का बच्चू है। बहुत अच्छा लिखता है। इसीलिए यहाँ काम मे लगा देने के लिए तुम्हारे हाथो मे सौप रहा हूँ।"

मार्केनटाइल फर्म के बडे साहब की तरह बिना कुछ बोले अखबार पढते पढते घण्टी बजायी। अठारह-उन्नीस साल के एक नौजवान ने जसे ही कमरे के अन्दर प्रवेश किया, हरिसाधन बाबू बोले, "तारापद को बुला ला।"

थोडी देर बाद ही एक मध्यवयस्क सज्जन ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया। पहरावा पैंट-शट। चेहरे से बुद्धिमत्ता टपक रही थी।

"तारापद, तुमने कहा था कि तुम्हारे रिपोर्टिंग सेक्शन मे आदमी की कमी है। इसीलिए इसे तुम्हारे डिपाटमेट मे दे रहा हूँ।" अगूठे से हरिसाधन बाबू ने मेरी ओर इशारा किया।

तारापद बाबू जरा तिरछी हँसी हँसकर बोले, "इस तरह और कितने दिनो तक काम चलाइएगा ? दो-चार अच्छे रिपोटर के बिना अब काम चलना नामुमकिन है।'

अब तारापद बाबू ने मेरी ओर गिद्धदृष्टि से देखा। पूछा, "इसके पहले किसी अखबार मे आपने काम किया है ?"

"नही।"

लगा, सवाल और उसके जवाब का मर्म हरिसाधन बाबू की समझ मे आ गया। बस, इतना ही कहा, "दो-चार महीने देख लो, उसके बाद जैसा होगा, किया जायेगा।"

तारापद बाबू ने मुझे अपने साथ चलने को कहा। मैंने एक बार नेपुदा और हरिसाधन बाबू की ओर देखा और फिर तारापद बाबू के पीछे-पीछे चल दिया।

तारापद बाबू दो मजिले के कमरे के अन्दर गये। दरवाजे पर लिखा

था रिपोटर्स। समझ गया, यह स्टाफ रिपोटरो का कमरा है। यानी ये ही लोग तकदीर के सिकदर की जमात के हैं जो प्राइम मिनिस्टर के साथ दौरे पर निकलते हैं, चीफ मिनिस्टर के प्रेस-कान्फ्रेंस मे प्रश्नो की झडी लगा देते हैं। ये ही लोग उत्तर बगाल की बाढ का सवाद भेजते हैं, कांग्रेस की सफलता पर रिपोट पेश करते हैं, राजनातिक उस्तादो को कलम की नोक से परेशान कर मारते हैं, चेम्बर आफ कोमस की निन्दा करते हैं, वैज्ञानिको की खोज मे गलती निकालते हैं। कला-प्रदशनी की तारीफ करते हैं। इतना ही नहीं, अप्रसिद्ध लोगो को ये लोग प्रसिद्ध और प्रसिद्ध को अप्रसिद्ध बना देते हैं। सपादक की टिप्पणी अखबार के भीतरी पन्ने पर एक कोने मे छपी रहती है मगर स्टाफ रिपोटरो की रिपोट पहले पृष्ठ पर मोटे-मोटे अक्षरो मे छपी रहती है। अत उन सौभाग्यशालियो के दल मे शामिल होने की खुशी से मैं रोमाचित हो उठा।

कमरे मे और तीन-चार आदमी बैठे हुए थे। अपनी मेज की ओर बढते हुए तारापद बाबू ने सभी लोगो की ओर मुखातिब होकर कहा, "येट अनदर डिसकवरी आफ हरिदा।

तारापद बाबू के सहकर्मियो मे से कोई-कोई मुसकरा दिया, किसी ने टिप्पणी की। मैंने सुनकर अनसुना और देखकर अनदेखा कर दिया। आदेशानुसार मैं तारापद बाबू की बगल की कुर्सी पर बैठ गया। उन्होने दूसरे-दूसरे रिपोटरो से परिचय कराया, रिपोर्ट करने के बारे मे थोडा-बहुत उपदेश दिया। उसके बाद मुझे दो-चार पी० टी० आई०, यू० पी० आई० की लोकल कापी का अनुवाद करने को दिया। मैंने अत्यन्त सकोच और सावधानी के साथ अनुवाद कर कापियाँ तारापद बाबू की ओर बढा दी। सरसरी निगाह से देखकर उन्होने बेयरा के हाथ कापियाँ भेज दी। मैंने और भी कई लोकल कापियो का अनुवाद किया। उन्हे भी भेज दिया गया।

इसके बाद तारापद बाबू की कृपा से मुझे एक गिलास चाय मिली।

कृतज्ञता से मैं द्रवित हो गया। रात दस बजे के बाद छुट्टी मिली। नमस्कार कर जब मैं चलने लगा तो तारापद बाबू ने दूसरे दिन शाम के समय आने को कहा।

जल्दी-जल्दी बाहर आ मैंने ट्राम पकडी। कॉलिज स्ट्रीट के मोड पर उतरने पर मन मे हुआ कि चिल्लाकर सबको सूचित कर दू कि मैं रिपोर्टर हो गया हूँ। कॉलिज स्ट्रीट के मोड पर मैं भले ही चिल्लाया नही लेकिन घर के दरवाज़े की सीढी पर आकर साँड की तरह चिल्लाकर भाभी को पुकारा। दरवाजा खोलते ही भरत नाट्यम नृत्य करता हुआ मैं अन्दर गया। भाभी को एक धक्का देकर हटा दिया और जूता-कपडा पहने ही बिस्तर पर निढाल पड गया।

रवीन्द्र की मुद्रा मे आनन्द से गद्गद होकर कहा, "जानती हो, भाभी, दिन अभी-अभी आया है।"

भाभी ने मुसकराकर अगूठा दिखाया। लेकिन मेरे उत्साह मे तनिक भी कमी नही आयी। कहा, "देख लेना, अब मिनिस्टर के कधे पर हाथ रखकर बातचीत करूँगा, एम० पी० और एम० एल० ए० लोग चैरिटी की टिकट और सिनेमा के पास के लिए भाड लगायेंगे। यही नही, तुम्हारी किस्मत मे और भी बहुत कुछ देखना लिखा है। लुत्फा को तरह तुम्हारी बहन मेरे चरणा पर लोटेगी, कहेगी प्राण-नाथ "

भाभी ने भी क्षीरोद प्रसाद विद्याविनोद का स्मरण किया। बोली, "सो ता हुआ सिराज, मगर अब तुम खाना खाकर मुझे मुक्ति दो।"

"जरूर।'

दूसरे दिन सवेरे ही उठकर निकल पडा। बेचू चेटर्जी स्ट्रीट के मोड पर हॉकर से 'दैनिक सवाद' की एक प्रति खरीदी। पिछली रात लिखे हुए समाचार को छपे हरूफो मे देखने की असीम उत्सुकता के

कारण वही खडा होकर अखवार देखने लगा। कन्यादान की समस्या से ग्रस्त पिता जिस तरह सुविधानुसार सुपात्र की उम्मीद मे पात्र-पात्री का कॉलम पढता है, मैंने उससे भी अधिक उम्मीद और सपना लेकर अखबार देखा। ज्यादा वक्त नही लगा। पहले पृष्ठ के नीचे की ओर छपी एक खबर पर निगाह गयी। शुरू मे विश्वास नही हुआ, लेकिन बाद मे अविश्वास करने का कोई कारण नही मिला। पन्ना उलटा। दूसरे पृष्ठ पर विज्ञापन था। तीसरे पृष्ठ पर सभा-समिति, विवरण, पाट के गोदाम के अग्निकाण्ड, स्यालदह की औरत पाकेटमार की गिरफ्तारी के साथ साथ अपनी लिखी हुई दो खबर देखी। अब मैं चुपचाप खडा नही रह सका। भाभी को अखवार दिखाने के लिए मन बेचैन हो उठा।

बिना घोडे के, छत्रपति शिवाजी की तरह बहादुरी के साथ उछलता-कूदता घर के अदर गया। देखा, भैया अस्पताल चला गया है, भाभी एक प्याली चाय और अखबार ले फर्श पर बैठी है। बिना कुछ बोले भाभी के हाथ से अखवार छीन लिया।

"मन बडा ही उदास है। आज से जिन्दगी-भर के लिए तुम्हारा अखवार पढना बन्द हो गया क्योंकि आज से इस अपरिपक्व कुष्माण्डक का लेखन छपना शुरू हो गया है।'

जवाब न देकर भाभी ने अखबार मेरे हाथ से छीन लिया। अहकारवश मै अपना जोश दबाकर नही रख सका। कहा, "रे मूख नारी, पहले पृष्ठ के पाचवे कॉलम की आखिरी खबर का ध्यान से देखो।'

फिर भी भाभी समझ नही सकी। तब लाचार होकर दिखा दिया कि आज वराहनगर, सिंथी, काशीपुर और दक्षिण लैंसडाउन रोड और देशप्रिय पार्क अचलो मे तीसरे पहर तीन से चार बजे तक विशुद्ध जल की आपूर्ति बन्द रहने की तरह जो महत्त्वपूर्ण समाचार प्रकाशित हुआ है वह इस बन्दे के द्वारा ही लिखा गया है।

एडिटर हो।' 'कृष्णकलि मैं उसको कहता'—यह पक्ति मैंने रवीन्द्रनाथ के गीत मे पढी थी लेकिन उसका पहले-पहल परिचय लावण्य को देखकर मिला। इतना गहरा काला रग इसके पहले देखा होऊँ, ऐसा याद नही आता। लावण्य यद्यपि काले रग का था लेकिन उसका चेहरा खूबसूरत था और उसमे बेहद प्राण-शक्ति थी। उस प्राण-शक्ति ने मुझे पहले दिन ही आकर्षित कर लिया था। मैं जितने दिनो तक वहाँ आता जाता रहा, लावण्य के प्रति आकर्षण उतना ही बढता गया। बाद मे जब मुझे मालूम हुआ कि सात बरसो से काम करते रहने के बावजूद लावण्य को बाईस रुपया वेतन मिलता है और उसे अकेले हो अधे बाप, बूढी माँ और तीन भाई-बहनो का भार ढोना पडता है तो मैं अवाक् हो गया कि किस तरह यह अशिक्षित युवक चेहरे पर हँसी ले जीवन की तमाम सच्चाइयो को स्वीकार रहा है। जब और कुछ दिन बीत गये तो पता चला कि लावण्य यद्यपि अशिक्षित है लेकिन बेवकूफ नही, दरिद्र है, लेकिन हीन नही। गीता मे लिखा है—यत करोमि जगन्मात, तदेव तव पूज्यते। शेक्सपीयर ने कहा है—लाइफ इज बट एन वकिंग शेडो, लेकिन जिन लोगो ने दरभगा बिल्डिंग के क्लास-रूम मे आकर यह सब पढा है, वे मन से इस सीख को ग्रहण नही कर सके हैं, जीवन के हर पग पर वे ठोकर खाते हैं और हाहाकार मचाने लगते है। और लावण्य ? उसने गीता नही पढी है, शेक्सपीयर का नाम नही सुना है, दशन-वेद-वेदान्त-उपनिषद का स्पर्श नही किया है, फिर भी जावन को जितनी सहजता के साथ स्वीकार कर लिया है, किसी दूसरे को उस तरह चेहरे पर हसी ले जीवन के सामने खडे होते नही देखा है। आगे चलकर मुझे पता चला था, हमारे देश के पढे-लिखे लोग अभद्र होते है, हीन और नीच होते हैं। ये लोग कला-कौशल से भले आदमी का जीवन जीते हैं, गाहस्थ्य जीवन के धर्म का पालन करते हैं, मेनुमेट के तले भाषण देकर लोगो की जमात को जोश मे लाकर पुलिस की लाठी, मिलिटरी की गोली के सामने बढा देते हैं और स्वय सिफ वक्तव्य देते हैं और लोगो

की निगाह से बचकर तमाम सभावित इन्द्रिय सुख का उपभोग करते हैं।

कई महीनो के अखबारो की फाइल सिर पर लादे कमरे मे प्रवेश करते ही उसकी निगाह मुझ पर गयी और उसने चिल्लाकर मेरी उपस्थिति की घोषणा की। उस चिल्लाहट से मेरी छाती की धडकन जैसे थम गयी। कई सेकेण्डो के दौरान ही लावण्य फिर चिल्ला उठा, "बाजी मात कर दिया, नया रिपोर्टर बच्चू बाबू आ गया।"

बाजी मात कर दी हो, इस पर विश्वास नही हुआ मगर इतना पता चल गया कि कोई क्षति नही पहुँचायी है। कमरे के तमाम लोगो ने मुडकर मेरी ओर देखा। चीफ रिपोटर तारापद बाबू ने मुझे अपने पास बुलाया।

"विप्लव दा, यह बच्चू है—रिपोटर आफ टु डे ऑल्ड," तारापद बाबू ने सामने के सज्जन से कहा।

इतने दिनो तक जिस क्रान्तिकारी विप्लव चैटर्जी की तस्वीर अखबार के पन्नो पर देखता आ रहा हूँ, जिसका भाषण सुनकर छात्र-जीवन मे उत्तजना का अनुभव करता था, उसी सर्वजन्य धन्य जन-नेता को अपने निकट पाकर स्वय को धन्य समझा। श्रद्धा और भक्ति से मेरा सिर झुक गया, गौरव से सीना तन गया। इस महान् क्रान्तिकारी को अपने निकट पाकर सभवत मेरे चेहरे पर एक चमक आ गयी थी।

सस्नेह मेरी पीठ पर एक धौल जमाकर विप्लवी वीर उठकर खडे हो गये। बोले, "मेरा स्टेटमेट तुमने बहुत अच्छे ढग से पेश किया है। अच्छी तरह मन लगाकर काम करो।"

कमरे से बाहर जाने के दौरान डॉक्टर विप्लव चैटर्जी पीछे की ओर मुडे। "तारा, मेरे स्टेटमेट का वेलकम करते हुए जो सब टेलिग्राम आये हैं, उनके बेसिस पर एक न्यूज तैयार कर देना। समझे न ?"

जननेता ने विदा ली, कर्मचारियो का दल उनके पीछे-पीछे चलने लगा। मैं मुग्ध दृष्टि से दरवाजे की ओर देखता रहा।

डॉक्टर विप्लव चैटर्जी सिर्फ बगाल के नही, पूरे हिन्दुस्तान के सर्वप्रिय श्रद्धेय राजनीतिक और श्रमिक नेता हैं। बाग बाजार के बम केस के मुजरिम के तौर पर इन्हे अँग्रेज़ो के कारावास मे लगातार बारह साल बिताने पडे हैं। अधेड होने पर जेल से निकल रातो-रात लाखो आदमी का नेतृत्व ग्रहण कर उन्होने पूरे देश को चौंका दिया है। क्रान्तिकारी जीवन की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी इनकी पुस्तक 'नोट ए बेड ऑफ रोजेज' को बगाल के नौजवानो के बीच राजनीतिक बाइबिल के रूप मे समादर प्राप्त हुआ है। आज देखकर लगा, उम्र अब भी चार के खाने मे ही होगी। खडी नाक, प्रशस्त ललाट और चौडी छाती ने उनके क्रान्तिकारी जीवन की बहुत-सी कहानियो का स्मरण करा दिया।

डॉक्टर चैटर्जी से प्रशसा प्राप्त करने के कारण दफ्तर मे मेरा रुतबा थोडा-बहुत बढ गया। कई दिनो के दरमियान मैं रिपोर्टिंग सेक्शन का एक मान्य सदस्य हो गया। वेलिंगटन, विडन, हाजरा और श्रद्धानन्द पार्क नोटबुक लेकर आना-जाना शुरू कर दिया। शुरू में बडी-बडी सभाओ मे रिपोटरो की मेज पर बैठने मे लज्जा का अनुभव होता था। दूर श्रोताओ की निगाह से बचकर नोट लिखता था। आहिस्ता-आहिस्ता लज्जा का भाव दूर हो गया, मैंने रिपोर्टरो की मेज पर बैठना शुरू कर दिया। हज़ारो लाखो स्त्री-पुरुष उन जन सभाओ मे आते थे और पूरी जनता की भीड आश्चर्य और श्रद्धा से रिपोटरो की ओर ताकती रहती थी। मैं तिरछी निगाह से सब कुछ ध्यान से देखता था। ध्यान इस बात पर जाता कि मैं हाथ मे नोट बुक थामे खडा हूँ और हज़ारो आदमी मेरी ओर ताक रहे हैं।

यही नही, प्रेस-कान्फ्रेंस मे भी आना-जाना शुरू कर दिया। सयोजको के प्रतिनिधि होटल के दरवाज़े और रेस्तराँ की सीढी पर स्वागत करते थे। सम्मान के साथ अन्दर ले जाते और वेजिटेबल सैण्डविच और समोसे का प्लेट बढा देते थे। एक प्याली चाय खत्म होते न होते चाय की दूसरी प्याली मिल जाती थी। एकमात्र बरातियो का ऐसा

स्वागत-सत्कार मिलता है, लेकिन ऐसा सुयोग तो कभी-कभार ही मिलता है। रिपोर्टर होने के बाद प्राय हर रोज चौरंगी-एसप्लेनेड के किसी न किसी होटल-रेस्तरां मे बराती होकर जाने लगा।

आफिस के माहौल मे भी बदलाव आ गया। मैं अब पहले की तरह चुपचाप दुल्हन सजकर चीफ रिपोर्टर की मेज़ पर नही बैठता था। कमरे के अन्दर जाते न जाते पुकार लगाता, "लावण्य, चाय।"

चीनी या दूध कम होता तो केबिन के बेयरा को डाँट पिलाता, दो आने की कीमत का वेजिटेबिल चॉप थोडा ठण्डा रहता तो केबिन के मालिक वनमाली को पुकार कर दो-चार कडवी बात सुना देता। लावण्य मेरी बात पर रद्दा जमाता था। जमीदार की हवेली के नायब की तरह वह वनमाली का और अधिक डाटता-फटकारता, "देखो वनमाली अगर कोई बच्चू बाबू को खराब चीज देगा तो मैं बाहर के केबिन से "

वनमाली लावण्य की बात का मर्म समझता था। सारी गलती मानकर भविष्य मे ग्रैण्ड, ग्रेट ईस्टन की तरह अच्छी खाने की सामग्री देने का वचन देकर वहाँ से विदा होता था।

नायब जिस तरह मेरी देख-रेख करता था, मैंने भी उसी तरह उसकी देख-रेख करना शुरू कर दिया। "जाओ लावण्य, मेरे नाम से केबिन मे एक प्याली चाय ले लो।"

"पतितपावन, बच्चू बाबू के नाम पर मुझे एक प्याली चाय भेज दो ।" लावण्य विदा हो जाता तो तमाम अखबारो की फाइलें उलट-पुलट कर देखता, डायरी खोलकर दूसरे दिन के एन्गेजमेन्ट की सूची देख लेता। उसके बाद सब एडिटर के कमरे मे जाता। बिना कुछ बोले सीधे टेलीप्रिंटर के पास चला जाता। इस मशीन से टाइप की तरह खट-खट आवाज करता हुआ सारी दुनिया का समाचार आता रहता था। मंजे हुए सवाददाताओ की तरह मैं एक ही झलक मे टेलीप्रिंटर के समाचार का दैनिक प्रवाह देख लेता था। उसके बाद गली देखता। 'गैली' शब्द सुनकर शुरू मे सोचा था, विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलेलियो का

अपभ्रंश है। लेकिन अब जान गया हूँ कि गैली से गैलेलियो का कोई सबध नही। समाचार कपोज होकर लोहे की जिन शलाखो मे गुथे जाते हैं उन्हें ही गैली कहा जाता है। इसके बाद दो-चार सब-एडिटरो की मेज़ पर ताक झाँक लगाता, स्पोर्ट्स रिपोर्टरो से विजय मर्चेन्ट की बैटिंग या शैलेन मन्ना के लाग किक की खबर जान लेता। इच्छा होती तो एक बार प्रेस भी चला जाता। उसके बाद रात नौ या साढे नौ बजे और तीसरे पहर तीन बजे प्रेस कान्फ्रेन्स की या साढे चार बजे वेलिंगटन की जन-सभा की रिपोट लिखने बैठ जाता। रात दस या सवा दस बजे डेरा लौटने के समय पूछता, "तारा दा, कल क्या करना है ?"

दूसरे दिन के निर्दिष्ट कार्य की जानकारी प्राप्त कर मैं पाक सर्कस-हावडा की ट्राम की पिछली बॉगी पर सवार हो जाता और कॉलेज स्ट्रीट मे उतर जाता। उसके बाद डेरे पर पैदल चला आता था।

अब मैं सवेरे-सवेरे जगकर अखबार देखने बेचू चेटर्जी स्ट्रीट के मोड पर नही जाता था, ऑफिस का प्यून घर पर ही कॉम्पलिमेन्टरी अखबार दे जाता था। प्यून खिडकी से मेरे बिस्तर पर अखबार फेंक जाता था। उसी की आवाज़ या चोट से मेरी नीद टूट जाती। और मैं ऐसी मुद्रा मे सरसरी निगाह से अखबार की सुर्खिया देख जाता जैसे तन्द्रा हो, मगर नीद नही, देह हो, लेकिन मन नही। अब 'दैनिक सवाद' का मेरे डेरे पर अनादर नही किया जाता बल्कि उसे सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।

इसी तरह मेरी ज़िन्दगी आगे बढ रही थी, मन का आकाश रगीन हो उठा था। लगभग छह महीने बाद एक शाम अचानक इस बात का पता चला कि मेरे रगीन आकाश को धुंधला बनाकर इन्द्र धनुष उग आया है। अजस्र रगो के समारोह से मैं बेचैन हो उठा।

तब सात बजने मे पाँचेक मिनट बाकी थे। मिस्टर चौधरी के महल के सामने मोटर की कतार देखकर समझ गया कि मेहमानो का आगमन शुरू हो गया है। मोहिनी मिल्स की दस-चौआलीस धोती और अज्ञात मिल के मामूली पपलिन की कमीज़ पहन अन्दर जाने मे सकोच का अनुभव हुआ। हाजरा पार्क की जन-सभा मे पहले दिन रिपोटरो की मेज़ पर बैठने के लिए जाने पर जिस संकोच का अनुभव हुआ था, उससे बहुत ज्यादा सकोच ने आज मुझे घेर लिया। एक बार मन मे हुआ कि लौट चलू मगर हिम्मत नही हुई। 'इण्डिया इन वर्ल्ड एफेयस' के सबध मे राष्ट्र राजदूत मिस्टर फटफटिया भाषण देंगे। यह भाषण कल अखबार मे न छपेगा तो मेरा सर्वनाश हो जायेगा, यह बात मुझे मालूम थी। इसके अलावा तारा दा ने कहा था, सावधानी से रिपोट करना।

वर्दीधारी दरबान और सेक्रेटरीनुमा लोगो की एक जमात ले जो व्यक्ति फाटक पर सबका स्वागत-सत्कार कर रहे हैं, वे चौधरी साहब हैं, यह समझने मे मुझे परेशानी नही हुई। गाडी आकर जैसे ही रुकती हैं, वर्दीधारी दरबान उसका दरवाजा खोलकर सलाम करता है और अभ्यागतो का दल बायें हाथ से बटन होल के गुलाब की कली को ठीक करता हुआ दाहिना हाथ आगे बढा देता है। "गुड इवनिंग चाउधरी।"

"इवनिंग।" मिस्टर चौधरी सक्षेप मे उत्तर देते है।

गेट के सामने पहुँचकर मैंने चौधरी साहब को जिज्ञासु नेत्रो से अपनी ओर देखते हुए पाकर कहा, "प्रेस।"

भौहो पर बल लाकर उन्होने कहा, "आइ सी। गेट इन माइ ब्वॉय।"

भाव ऐसा था जैसा आना ही होगा, न आओगे तो कहाँ जाओगे? इतने दिनो तक जहा-जहाँ गया हूँ बरातियो के जैसा स्वागत-सत्कार मिला है, इनमे से ज्यादातर लोगो न स्वागत करने के समय समाचार-पत्र के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है, व्यक्तिगत तौर पर रिपोटरो को उनके

आगमन के उपलक्ष्य मे धन्यवाद दिया है। आज की शाम उसके ठीक विपरीत दूसरी ही तरह का अनुभव हुआ।

अन्दर जाने पर देखा, लॉन के एक किनारे सभा का आयोजन किया गया है। श्रोताओ का दल बेंत की कुरसी पर आसीन है। मिस्टर फटफटिया और मिस्टर चौधरी के लिए दूसरी ओर दो सोफे और एक छोटी तिपाई रखी हुई है। रिपोटरो के लिए अलग से कोई इन्तजाम नही किया गया था। मैं श्रोताओ के दल के बीच एक कुरसी खीचकर बैठ गया। एयरपोट के रिवॉलविंग विकन लाइट की तरह मैंने अपनी आखें चारो तरफ घुमायी। देखा, लॉन के एक छोर पर चौधरी साहब की विशाल इमारत है और उसके एक किनारे लबी मेज के सामने सफेद झकमकाती वर्दी पहने बेयरा की एक जमात ढेर सारी बोतल और गिलास लिए पत्थर की मूरत की तरह धुंधली रोशनी मे खडी है। मेरे चारो तरफ जो लोग बैठे थे उनमे औरत-मर्दो की सख्या बराबर ही होगी। ज्यादातर लोगो की उम्र चार या पाच के खाने मे होगी, लेकिन उनकी वेश-भूषा, तौर-तरीके और चाकचिक्य से ऐसा लगा जैसे वे अनन्त यौवन के साधक साधिकाएँ है। लगा, ये लोग पैसे के बल पर जवानी को हाथ की मुट्ठी मे रखे हुए हैं। मध्यवित्त घर मे पैदा होकर औरतो को देखा है लेकिन उनके जिस्म के जिन कोमल भागो को इसके पहले देखने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त नही हुआ है, उन अगो की लुका-छिपी आज पहले-पहल देखने को मिली।

इस बीच चौधरी साहब और मिस्टर फटफटिया आसन ग्रहण कर चुके हैं। मिस्टर चौधरी ने एक सक्षेप भाषण मे कहा, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इतिहास मे जिन नये अध्यायो की शुरुआत हुई है उसमे भारत एक नयी भूमिका निभा रहा है। भारत की इस ऐतिहासिक भूमिका का जिन लोगो ने सफल बनाया है उनके बीच मिस्टर फटफटिया का स्थान अद्वितीय है।

राष्ट्र के राजदूत फटफटिया ने दो पृष्ठो का टाइप किया हुआ

ा पढकर विश्व इतिहास मे भारत की भूमिका का विश्लेषण किया।
क ऐसा लगा, नेहरू के 'डिसकवरी आफ इण्डिया' का सूची पत्र
या। बहरहाल भाषण की एक टाइप की हुई प्रति मिलने पर मैं
ही खुश हुआ। चारो तरफ हल्की तालियो की तडतडाहट होने
मिस्टर फटफटिया ने विनत मस्तक समवेत सज्जना का अभिवादन
ार किया।

'लेडीज एण्ड जेन्टल मेन'', चौधरी साहब ने घोषणा की, ''आइ
नाउ रिक्वेस्ट यू ऑल टु मुव टु ड्रिंक्स।''

बके जोरो से तालियो की गडगडाहट हुई। बेयरा की जो जमात
क पत्थर की मूरत की तरह खडी थी, एकाएक चलने-फिरने
। वे लोग रग-बिरगे ड्रिंक्स तरह तरह के गिलास और जामो मे
लगे। बेयरा की जमात के कुछ लोग भीड के बीच सोडावाटर
पानी का जग लेकर घूम-फिर रहे थे लेकिन किसी अभ्यागत या
गता को उन्हे छूते न देखकर मुझे बडा मजा आ रहा था। वह
बहुत कुछ बडे जक्शन की रेलगाडी की पटरी के जैसा लग रहा
चारो तरफ से ट्रेन आ-जा रही है, अचानक लगता है कि अब
लगा कि अब लगा मगर ट्रेन खूबसूरती के साथ बगल की पटरी
परीत दिशा मे निकल जाती है।

ायरा मेरे पास भी ट्रे लेकर हाज़िर हुआ। मैंने एक गिलास सात्विक
दार्थ यानी ऑरेंज स्केश उठा लिया। बेयरा ने एक बार आख
र देखा, शायद सोचा, बगैर हाईकोर्ट देखे स्यालदह से सीधे यहा
गया हूँ।

स्कैश का गिलास हाथ मे थामे चहलकदमी के लिए निकलना
ा ही था कि देखा, बेलबूटे की तरह निमन्त्रित लोग चारो तरफ
र गये हैं। स्त्री-पुरुष सभी के हाथ मे शराब है, करीब-करीब सभी
ठो मे अत्यन्त सावधानी के साथ सिगरेट झूल रही है। इसके पहले
ो औरतो को तबाकू पीते देखा था, मगर औरतो का सिगरेट पीना

यह पहले-पहल देखा। इसके अलावा इतने दिनों से सुनता आया था कि जो लोग शराब पीते हैं वे कमरे का दरवाज़ा बन्द कर बीवी को बिना जताये यह सब करते हैं। आज देखा, इतने दिनों से जो कुछ देखना-सुनता आ रहा था, वह सब झूठ है। सार्वजनिक दुर्गा पूजा की तरह स्त्री-रत्न को साक्षी बनाकर औरत-मर्दों का एक साथ शराब पीना ही आधुनिक सभ्यता की मर्मवाणी है।

एक कोने मे पड़ी एक पिपिंग कुरसी पर जाकर बैठ गया। मेरी बगल मे एक और व्यक्ति था, वह गिलास से आखिरी घूँट लेकर उठ गया। कई मिनट बाद ही एक अधेड़ व्यक्ति एक ऍग्लो इंडियन युवती को खीचते हुए ले आया और मेरी बगलवाली कुरसी पर बैठ गया। एक ही गिलास से दोनो ड्रिंक करने लगे। शरम से मैं न तो उठ पाता था और न ही बैठ पा रहा था। मुझे बेचैनी का अहसास होने लगा। मेट्रो लाइट हाउस मे सिनेमा देखने के लिए जाने पर जो दृश्य हर वक्त दिखायी नही पडता वैसा ही एक दृश्य मेरी बगल मे अभिनीत हुआ। मेरे चेहरे पर लाली दौड़ गयी है, इसका मुझे अच्छी तरह पता चल गया।

बेयरा जैसे ही सामने पहुँचा, भले आदमी ने पुकारा, "बेयरा"।

खानदानी गाहक सोचकर बेयरा ने भले आदमी के गिलास में ट्रे से दो गिलास शराब ढाल दी। इसके साथ छँटाक-भर साडावाटर लेने के लिए भले आदमी ने जैसे ही मुह घुमाया कि मैं चौक पडा। पाचेक दिन पहले इन्ही के भाषण की मैंने रिपोर्टिग की थी। यह सज्जन बगाल के नामी शिक्षाविद है। इनकी लिखी पुस्तक बगाल के लाखो छात्र-छात्राएँ स्कूल मे पढते हैं। मैंने भी इनकी पुस्तक पढी है। लेकिन आज यह दृश्य देखकर घृणा से मेरा मन विषाक्त हो उठा।

अब मैं देर किये बगैर दफ्तर चला आया। रिपोट लिखते-लिखते तारा दा से पूछा, "अच्छा, यह तो बताइये, डॉक्टर सामन्त शराब पीते है ? औरतो के साथ "

मेरी जबान से बात छीनकर तारा दा ने जवाब दिया, "यह तुम नही जानते थे ?"

नेपुदा के साथ पहले पहल जिस दिन इस दफ्तर मे आया था तब से अब तक लगभग एक साल का अरसा बीत चुका है। इस बीच मैं बहुत चक्कर लगा चुका हूँ। प्रधान सपादक हरिसाधन मित्तिर अब मेरे केवल हरि दा ही नही रह गये है बल्कि जरूरत पडने पर उनसे बहस-मुबाहसा भी कर लेता हूँ अखबार के रिपोटरो के अतिरिक्त बाकी लोगो को अब मैं आदमी के तौर पर गिनता ही नही। ठीक-ठीक स्वीकार न करने के बावजूद मैं रिपाटर का धर्म पालन कर घमण्डी हो गया हूँ—सबसे श्रेष्ठ रिपोटर होता है, उससे बडा कोई नही, यह भाव मुझमे पैदा हो गया है।

सिफ बाहरी लोगो को ही नही, अपने सहकर्मियो को भी मैंने कृपा-दृष्टि से देखना शुरू कर दिया है। उपसपादको को अनुवादक समझने लगा हूँ, स्पोटस रिपोर्टरो को मैदान का रिपोटर, सहसपादक को कॉलेज का लेक्चरर और प्रूफ रीडरो को किरानी। नये रिपोटर के रूप मे एक साल के दौरान मेरी प्रगति की ख्याति अच्छी ही कही जायेगी।

इतने दिनो के बाद हिसाब-किताब करने के बाद मैंने एक नये मुद्दे की खोज की। एक साल के दरमियान मुझे 'दैनिक सवाद' से एक भी पैसा नही मिला है, यह बात मेरी समझ मे आयी। दो-चार दिन बाद सुविधानुसार तारा दा को इसकी सूचना दी तो उन्होने मुसकराकर कहा, "हरि दा से कहो।' हरि दा कभी अकेले नही मिलते, हर वक्त उन्हे उन्हे एक दल मुसाहिब और ताबेदार घेरे रहते हैं। मैं बिना तनख्वाह का रिपोटर हूँ, यह बात किसी से कहने मे शर्म लगती है, यही वजह है कि हरि दा के कमरे मे झाँककर लौट आता हूँ। इसी त

माह बीत गये मगर हरि दा को मन की बात बता नहीं सका। आखिर-कार कोई दूसरा उपाय न देखकर एक स्लिप लिखकर लावण्य के हाथ भेज दिया। स्लिप लिखकर भेजने से कोई काम हुआ या नही, यह समझ नही सका।

कई सप्ताह के बाद दोपहर के समय दफ्तर आया। न्यूज डिपाट-मेन्ट मे बैठकर हम रिपोटर और सब एडिटर बूढे कोट रिपोर्टर बाबू के बलात्कार के मामले की रिपोर्ट लिखने के आश्चर्यजनक कला-कौशल और सामर्थ्य पर बातचीत कर रहे थे कि तभी खजाची बाबू अन्दर आये। कुछ देर तक बगैर कुछ बोले चेहरे पर हँसी ले हम लोगो की बातचीत के रस का उपभोग करते रहे। बातचीत के बाद न्यूज डिपाट-मेन्ट से विदा होने के पहले मेरे कान मे फुसफुसाकर कह गये, "अगले महीने से आपको दस रुपया भत्ता मिलेगा।"

आनन्द और उल्लास से मैं चिल्ला उठा, "लावण्य दस चाय, दस वेजिटेबल चॉप।"

'दैनिक सवाद' का रिपोटर होने के बावजूद ग्रैण्ड, ग्रेट ईस्टन मे लच डिनर लेता हूँ। उपसपादक गण वाइसराय के लॉज के बैनक्वेट या लाट साहब के महल के स्टेट डिनर की खबर लिखते हैं। लेकिन 'दैनिक सवाद' के दफ्तर मे इस तरह का बैनक्वेट या डिनर बहुत दिनो से नही हुआ है। दस प्याली चाय, दस अदद चॉप! सबने अवाक होकर मेरे चेहरे की ओर ताका। सब-एडिटरो की कलम रुक गयी, प्रूफरीडरो ने प्रूफ का शुद्धीकरण करना बन्द कर दिया। न्यूज डिपाटमेन्ट के सभी एक-दूसरे के कान मे फुसफुसाने लगे और मेरी ओर तिरछी निगाह से ताकते हुए हँसने लगे। टीका टिप्पणी चल ही रही थी कि लावण्य गर्व के साथ वनमाली के केबिन के पूरे बटालियन यानी पतितपावन और केदार चन्द्र को अपने साथ लिए भीतर आया। लावण्य हमे एक-एक चॉप और एक-एक प्याली चाय देकर खुद भी चाय और चॉप लेकर बैठ गया। चारो तरफ से अहाहा, उफ्, लवली इत्यादि आवाज ध्वनित

हुई। खाने के बाद आनुष्ठानिक धन्यवाद जताये वगैर सब-एडिटर अलक ने मुझे गोद मे लेकर जैसे ही एक बार चारो ओर घुमाया, लावण्य चिल्ला उठा, "थ्री चियर्स फॉर बच्चू बाबू।"

"हिप हिप फुर्रे "

"हिप-हिप फुर्रे "

चारो तरफ से 'हिप-हिप फुर्रे' ध्वनि जगी।

इस तरह की परिस्थिति मे अगर मैं एक संक्षिप्त भाषण न दू तो बेमानी जैसा लगेगा। कुरसी पर खडे होकर मैंने कहा, "लेडीज एण्ड जेन्टलमेन!"

सभी हँसी से लोट-पोट हो गये। अलक ने टिप्पणी की, "हम लोगो के बीच श्रीमती की खोज तुमने कैसे कर ली?"

मेरे उत्साह मे जरा भी कमी नही आयी। कहा, "मित्रो! आज आनन्द के इस तरह के क्षण मे मान लेना होगा कि यहाँ हम लोगो के बीच अनगिनत सुन्दरियाँ उपस्थित है।"

मैंने इसके बाद शुरू किया, "मित्रो, आज इस आनन्द के दिवस पर मैं आप लोगो को अगले कल का एक बेनर हेडलाइन का समाचार बताना चाहता हूँ और वह यह कि महामहिम मान्यवर हरि दा ने मुझे दस रुपया मासिक भत्ता देना स्वीकार कर लिया है।"

सुनकर सभी प्रसन्न हुए। अब मैं भी अपने सहकर्मियो के साथ इन्स्टॉलमेन्ट वेतन के लिए डाकू वासुदेव खजाची के कमरे मे भीड लगाकर चिल्लाऊँगा, इन्कलाब-जिन्दाबाद नारा लगाऊँगा, यह सोचकर सबने मेरा अभिनन्दन किया।

दस रुपया वेतन मिलने पर मेरी सूखी नदी मे चाहे बाढ न आये मगर ज्वार-भाटा जरूर ही आने लगा। अब वनमाली के केबिन मे नकद पैसा देकर खाना नही खाता, माहवार इन्तजाम चालू हो गया। तारा दा के रिपोर्टिंग डिपार्टमेन्ट के तीन व्यक्तियो के बीच मुझे तीसरा स्थान प्राप्त हो गया। उपसपादको से भी मेरा सबध आहिस्ता-

आहिस्ता घनिष्ठ होने लगा। मेरा कौन समाचार डब्ल कॉलम और कौन पहले पृष्ठ पर जायेगा, यह मैं स्वय चौबीस प्वाइन्ट जयन्ती बोल्ड टाइप मे हेडिंग तय कर सीधे प्रेस भेज देता हूँ। कभी-कभी टेलीप्रिंटर की खबर शार्टकर उपसपादक को देता हूँ। जरूरत पडने पर कहता हूँ, "अलक, पार्लियामेन्ट का लीड आया है" या फिर चन्द्रकान्त बाबू के हाथ मे कापी देकर कहता हूँ, "अपनी सिक्यूरिटी कौंसिल की कापी लीजिये। इमसे उपसपादकगण खुश ही होते थे। उनमे से बहुतेरे लोग मेरी सहायता भी करते थे। चेम्बर ऑफ कोमर्स की वार्षिक सभा मे मेरे जाने की बात थी। भाभी की बहन को चिडियाखाना ले जाकर यह बात बिलकुल भुला ही बैठा। लेकिन कठिनाई का सामना नही करना पडा। ऑफिस टेलीफोन किया कौन ? मनमोहन दा ? चेंबर की वार्षिक बैठक में जाने का एसाइनमेन्ट था मगर जा नही सका। आप जरा पी० टी० आई० की कापी देखकर रिपोर्ट कर दीजिएगा। किसी को इस बात का पता नही चला, दूसरे दिन 'दैनिक सवाद' के प्रथम पृष्ठ पर स्टाफरिपोटरो के डब्ल कॉलम मे खबर छपी—आगामी कल के हिदुस्तान को उद्योग की दिशा मे आत्म-निर्भर बनाने के लिए निवेदन करते हुए चेंबर ऑफ कोमर्स की ८३वी वार्षिक सभा के अध्यक्ष सर हरिदास टनठनिया ने मेहनतकशो को शान्ति के साथ तमाम उद्योग सबधी विरोधो को मिटाने की सलाह दी। उन्होने ऐसा कहा, उन्होने यह भी कहा, उन्होने खासतौर से कहा, उन्होने उदारता के साथ कहा, उन्होने उपसहार मे कहा, उन्होने अन्त मे कहा, इत्यादि रूप मे चेंबर के सर हरिदास का भाषण पूरे डेढ कॉलम मे छपा था।

इस प्रकार के तकनीकी सहयोग के अलावा हम लोगो के बीच और एक तरह का लेन-देन चलता था। और वह था रुपये-पैसे का लेन-देन। अपने कमरे मे सिर झुकाये मैं रिपोर्ट लिख रहा हूँ, अचानक कान के पास फुसफुसाकर मोहन दा कहते हैं, "दो आना दो तो बच्चू।' मैं बिना कुछ बोले जेब से एक दुअन्नी निकालकर दे देता हूँ। किसी-किसी

पकौडे रखकर चिल्ला उठता, "हे गरोमी, तुमने मुझे महान् बनाया है, तुमने मुझे ईसा जैसा दान दिया है।"

फरकी और तेल के पकौडे खाते-खाते ही हम आँख दबाकर एक-दूसरे की ओर देख लेते थे। अस्वस्थ मनमोहन दा की जेब मे एक लिफाफा रख देते। मनमोहन दा बस इतना ही कहते, "तुम लोग मेरे लिए तकलीफ क्या उठा रहे हो?"

इस बात का जवाब देने की कोई जरूरत नही पडती। अलक चिल्ला उठता, "शट अप गेट आउट ऑफ दिस रूम।" इतना ही नही, सब एडिटर लोग कहते, "मनमोहन दा तुमने तीन विक ऑफ नही लिया है, अगले तीन दिनो तक तुम्हे नही आना। अब शनिवार के मार्निंग शिफ्ट मे आना।'

इसके बाद मनमोहन दा कुछ बोल नही पाते थे। आँखें यद्यपि छल-छला आती थी लेकिन दबी हुई प्रसन्नता की एक रेखा भी उनके चेहरे पर उभर आती थी। शुरू मे धीरे-धीरे उसके बाद जल्दी-जल्दी मन-मोहन दा दफ्तर से बाहर निकल जाते।

मनमोहन दा के विदा होते न होते न्यूजरूम फिर शोर-गुल से भर जाता। टेलीप्रिन्टर के कदम से कदम मिलाते हुए न्यूज रूम की कार्य-तालिका पुन शुरू हो जाती।

मेट्रोपाल होटल के प्रेस कान्फ्रेन्स और हाजरा पार्क की पब्लिक मीटिंग की कार्यवाही का सवाद लेकर शुक्रवार के बाद दफ्तर के अन्दर जाते ही ठिठककर खडा हो गया। सस्वर समवेत अँग्रेजी गीत सुनकर एकाएक ऐसा लगा जैसे पार्क सर्कस स्थित 'दैनिक सवाद' कार्यालय आने के बजाय डालडा मार्का अँग्रेजा के ठिकाने पर पहुँच गया हूँ। मैंने चारो तरफ गौर से देखा। नही, ठीक ही स्थान पर आया हूँ। फिर हमारे दफ्तर मे अँग्रेज़ी गीत क्यो चल रहा है? विस्मय मे आकर न्यूजरूम की ओर बढने लगा। दो-चार कदम आगे बढते ही कानो मे आवाज़ आयी, "लाग लिव ऑवर डर्लिंग मनमोहन दा, हाउ लवली इज ऑवर

भाभी जी एण्ड गॉड ब्लेस दि नेफ्यू ।" अब मुझे समझने मे तकलीफ नही हुई। न्यूज रूम मे कदम रखते ही देखा, मेज को प्लेटफार्म बनाकर एक कुरसी पर मनमोहन दा को बिठा दिया गया है और उनके सामने सब-एडिटर और प्रूफरीडरो की लबी कतार है। मेरे जाते ही गीत थम गया। अब देखा, एक-एक कर सभी मनमोहन दा के पास जाते हैं और उनके हाथ से कुछ लेकर मुंह मे दबा लेते हैं। मैं जैसे ही वहाँ पहुँचा बारीन ने इशारे से मुझे कतार मे खडे होने को कहा और यथा समय बदस्तूर नारियल के दो लड्डू मेरे मुंह के अन्दर चले आये।

बाद मे पता चला, पाँच लाख के पाँच पेनसिलिन इन्जेक्शन से मनमोहन दा का लडका दो दिन मे स्वस्थ हो गया और खुश होकर मनमोहन भाभी ने हम लोगो के लिए लड्डू का यह सन्देश भेजा है।

सुख दुख, अभाव-आनन्द के बीच हम एक-दूसरे के निकट खिच रहे थे। एक खासे लबे अरसे के बाद सब एडिटर प्रकाश सेन की विचित्र जीवन कहानी से परिचित हुआ। कब, किस क्षण प्रकाश दा के प्रति मुझमे श्रद्धा उमड आयी है, इसका मुझे पता ही नही चला। दामोदर नदी की बाढ जैसी उनकी उच्छलता आज व्यतीत की कहानी हो गयी है। पूजा की छुट्टी के दौरान वाराणसी की बाई जी की हवेली की उनकी उच्छृखलता आज पिरामिड के तले दब गयी है।

विजया दशमी के दो चार दिन बाद बिडन स्ट्रीट होकर जाते समय मिठाई के लोभ मे प्रकाश दा के घर पर गया। हाथ लगा कर पैर छुऊँ कि इसके पहले ही बाधा का सामना करना पडा। प्रकाश दा बोले, "छि छि, तुम मेरे जैसे विधर्मी का पैर क्यो छूने जा रहे थे ?"

"और किसी कारण नही, मिठाई खाने के लोभ से।"

मिठाई मिल गयी थी, मगर मैं प्रणाम नही कर सका। बहुत दिनो के बाद सरदियो की एक रात मैं और प्रकाश दा देह पर चादर लपेटे

दफ्तर के फाटक पर एक ही रिक्शे पर सवार हुए। हम दोनो ने मिलकर रिक्शेवाले को स्यालदह-बहू बाजार के मोड पर दस आना किराया दिया और उसे वही छोड दिया। इसके बाद हम दोनो ने केदार-बदरिका आश्रम के तीर्थयात्रियो की तरह पदयात्रा करना शुरू कर दिया। स्यालदह स्टेशन की घडी मे देखा, रात के एक बजकर बीस मिनट हो चुके हैं। गहरायी रात मे कलकत्ता नगरी मायाविनी हो जाती है, देह-मन को अभिभूत कर लेती है। उस वक्त कलकत्ता नगरी घोर ससारी को भी वैरागी बना देती है। प्रकाश दा भी उस दिन अपने आपको विस्मृत कर बैठे थे। बीते जीवन के टालीगज बनारस वाली बाई जी के जलसाघर मे लौट कर चले गये थे। बनारस के दशाश्वमेध घाट, पचगगा घाट, मणिकर्णिका और हरिश्चन्द्र घाट के महाश्मशान की परिक्रमा की थी।

तीन विषयो मे 'लेटर' लेकर सतीश सेन के लडके प्रकाश ने जब प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक की परीक्षा पास की तो पूरे कूचबिहार शहर मे हलचल मच गयी। बार से सभी लोगो ने सतीश बाबू का अभिनन्दन किया। वृद्ध सरकारी वकील हिमाशु बाबू ने कहा, "सतीश, लडके पर जरा ध्यान रखा करो। इस तरह के इटेलिजेट लडके बहुत कम ही होते हैं। प्रकाश अनायास ही प्रेसिडेसी कालेज मे भर्ती हो गया। दो वर्ष के बाद आई० ए० का इम्तिहान देकर कूचबिहार लौट आया। परीक्षा-फल निकलने के दिन सतीश बाबू और उनकी पत्नी दुर्गा नाम का जाप करते हुए टेलिग्राम-प्यून के इन्तजार मे सामने के बरामदे पर बैठे रहे, लेकिन प्रकाश बगैर चिन्तित हुए मुहल्ले के लडको के साथ क्रिकेट खेलने राजा की हवेली के मैदान मे चला गया।

बहुत देर तक इन्तजार करने पर भी जब डाकिया नही आया तो सतीश बाबू भोजन करने घर के अन्दर चले गये। कुल मिलाकर एक कौर मुँह मे रखा ही होगा कि तभी बाहर साइकिल की घण्टी की आवाज सुनकर सतीश बाबू की पत्नी हडबडा कर वहाँ भागी पहुँची।

दुर्गा नाम जपते-जपते टेलिग्राम का लिफाफा लिए तेज कदमो से अन्दर चली गयी। लिफाफा खोलकर तार पति की ओर बढा दिया। तार पढकर खुशी और उत्तेजना से चिल्लाते हुए सतीश बाबू जूठे हाथ ही पूजाघर के अन्दर चले गये और गृह देवता को कोटि-कोटि प्रणाम निवेदित किया। पूजाघर से चिल्लाते हुए सतीश बाबू ने पूरे कूचबिहार शहर को जना दिया कि उनकी एकमात्र सन्तान प्रकाश को युनिवर्सिटी-भर मे तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। आवाज सबके कानो मे न पहुँचने के बावजूद तीसरे पहर के पहले ही सारे शहर को मालूम हो गया कि प्रकाश प्रतियोगी हुआ है। प्रकाश को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। जिसके चलते इतनी उत्तेजना थी उसमे नाम मात्र की भी उत्तेजना नही थी। मानो, अस्वाभाविक कुछ भी नही हुआ है।

शाम के बाद सतीश बाबू का बाहरी कमरा शहर के नामी-गिरामी व्यक्तियो से भर गया। सतीश बाबू की पत्नी ने सबके हाथ मे मिठाई की थाली थमा दी और प्रकाश ने माथा नवाकर सबका आशीर्वाद ग्रहण किया। सेशन जज राय बहादुर सान्याल ने कहा, "लडके को बैरिस्टरी पढाने का इन्तजाम कीजिये। हेडमास्टर सवज्ञ ने कहा, "सतीश दा, प्रकाश को पी० आर० एस० बनने दो।" किसी ने कुछ और होने की सलाह दी। सतीश बाबू ने सबके प्रस्ताव पर 'जी हा-जी हा' कहा।

आखिर मे प्रकाश ने अग्रेजी मे ऑनर्स लेकर पढना शुरू किया। दो वर्ष बाद गाउन पहन सिनेट हॉल से गोल्ड मेडल लेकर बाहर निकला। अग्रेजी लेकर एम० ए० पढने के समय भी वह अपनी ख्याति को बनाये रहा।

कुछेक साल मुफस्सिल कॉलेज मे काम करने के बाद प्रकाश दा को कलकत्ते के नामी कॉलेज मे लेक्चरर होने का मौका मिला। कलकत्ते मे सुविधाजनक डेरा न मिलने के कारण प्रकाश दा ने बालो के बांडुज्ये मुहल्ले मे मकान किराये पर लिया और वही से कलकत्ता आना-जाना शुरू कर दिया। नौ बजकर पैंतालीस मिनट की तारकेश्वर लोकल से

प्रकाश दा जाता और पाँच बजकर पाँच मिनट मे खुलने वाली वडेल या पाच बजकर पद्रह मिनट मे खुलने वाली वधमान लोकल से वाली वापस आता था। इसी तारकेश्वर लोकल मे अचानक एक दिन अप्रत्याशित तौर पर प्रकाश दा को अपने छात्र-जीवन के मित्र विमलेन्दु से मुलाकात हो गयी।

पैदल चलते-चलते हमलोग राजा बाज़ार पार कर चुके हैं। प्रकाश दा ने एक पासिंग शो सिगरेट सुलगाकर धुएँ का गुवारा निकाला। बोले, "जानते हो बच्चू, मेरे जीवन की कहानी पर उपन्यास लिखा जा सकता है, सिनेमा बनाया जा सकता है। तब हाँ, इतना जान लो, जब मैंने सुना कि विमलेन्दु को फिल्म लाइन मे ख्याति प्राप्त हो चुकी है तो मैंने शुरू मे रोमाच का अनुभव किया। उसका कपडा लत्ता और रग-ढग देखकर समझ गया कि विमलेन्दु को अच्छी आमदनी हुई है। तारकेश्वर लोकल मे बैठे-बैठे फिल्म लाइन की बहुत सारी कहानियाँ सुनी। तीन-चार महीने बाद मुझे पता चला कि विमलेन्दु फिल्म का निर्देशन कर रहा है। बाद मे कॉलेज से गैरहाजिर रहकर मैं फिल्म की शूटिंग देखने टालीगज जाने लगा। धीरे-धीरे फिल्म लाइन के बहुतेरे व्यक्ति और 'ए जीवन पूण कर' फिल्म की नायिका गायत्री देवी से मेरी जान-पहचान हो गयी।

"ब्रिफकेस बगल मे रखकर मैं एक फोल्डिंग चेयर पर फ्लोर पर बैठ जाता और दिन-भर शूटिंग देखता रहता था। दो साल बाद छात्रो को लेक्चर देने के बदले टालीगज स्टूडियो के फ्लोर के प्रति मेरा आकर्षण बढ गया। स्टूडियो के सभी आदमी मुझे प्रोफेसर कहकर पुकारते थे, बहुतेरे लोग श्रद्धा भी करते थे। ऐसा एक भी आदमी न था जो मेरा मजाक उडाये। मगर अचानक एक दिन ।"

शूटिंग के बाद मेकअप उतारकर घर जाने के समय गायत्री वैनिटी वैग नचाते नचाते प्रकाश दा के सामने आकर खडी हो गयी। गायत्री ने शरारत भरी मुसकराहट के साथ प्रकाश दा की ओर ताका। उसके बाद

आहिस्ता से प्रकाश दा का हाथ पकडकर कहा, "कम ऑन प्रोफेसर।" कॉलिज के क्लास रूम मे बेठकर जो प्रकाश सेन भाषण की झडी लगा देता था, उसी प्राफेसर के मुँह से आज एक भी शब्द नही निकला। चरित्रवान् और वीर्यवान होने के बावजूद आज गाडी मे गायत्री की बगल मे बैठे प्रकाश दा को सिहरन का अनुभव होने लगा। बहुत दूर से विधाता का अट्टहास तैरता हुआ प्रकाश दा के काना मे आया।

लैंसडाउन-मनोहरपुकुर के पास एक बहुत बडी इमारत के पास गाडी आकर खडी हुई। गायत्री ने नीचे उतरकर कहा, "आइये प्रोफेसर साहब, एक प्याली चाय पीते जाइये।" प्रकाश दा बगैर कुछ बोले अभिनेत्री के पीछे-पीछे ऊपर चला गया। सामने के सोफे पर वैनिटी बैग फेंक गायत्री देवी ने पुकारा, "ललिता।"

सिर पर घूघट रखे ललिता दरवाजे की सीढी पर आयी। ऊँची एडीवाले जूते को खोलते-खोलते गायत्री देवी बोली, "चाय-नाश्ता भेज दो और चादनी पिक्चस के मैनेजर साहब आयें तो कह देना कि मेरी तबीयत खराब है। कल सवेरे मुझे फोन करे।"

ललिता अन्तर्धान हो गयी मगर कई मिनट बाद ही दो प्लेट नाश्ता और दो प्याली चाय लिए कुछ क्षणा के लिए आयी।

प्रकाश दा ने नाश्ता किया, चाय पी और अभिनेत्री के सान्निध्य का उपभोग किया। प्रकाश दा की छाती की धडकन बढ गयी, धमनियो मे लोहू तेजी से प्रवाहित होने लगा। गायत्री देवी की उष्ण उसांस का भी अनुभव हुआ। लेकिन आखिरी ट्रेन पकड डेरे पर लौटने की व्यग्रता के कारण प्राफेसर प्रकाश सेन ने यौवन का निमत्रण ठुकरा दिया। गायत्री देवी ने देहरी पर खडी होकर विदा किया। होठा को दाँत से काटती हुई अपलक खडी रही। ब्रिफकेस थामे प्रकाश दा हतप्रभ जैसा हो गया था। गायत्री ने बस इतना ही कहा था, "प्रोफेसर फिर आना।" प्रकाश दा ने सिर हिलाकर स्वीकृति जतायी थी।

आखिरी ट्रेन के पिछले डिब्बे मे बैठा प्रकाश दा गायत्री

के मोड के दो मंजले मकान मे चला गया था। उस दिन प्रकाश दा चुपचाप नही रह सका था, गायत्री से हास-परिहास, आमोद-विनोद मे तल्लीन हो गया था। दूसरे दिन प्रकाश दा कॉलेज से फिर गायत्री भवन चला गया था। लखपति उर्वशी सी सुन्दरी अभिनेत्री गायत्री के अन्तरग सान्निध्य मे बहुत देर तक रहने के कारण प्रकाश दा के मन मे शायद कुछ दुबलता भी उमड आयी थी। शायद लैंसडाउन से हावडा होते हुए बाली न जाकर यही थके-माँदे शरीर को सुख की सेज पर निढाल छोड देने की धुधली उम्मीद और आकाक्षा उसके मन मे मचलने लगी थी। मगर ऐसा नही हो सका। सवा नौ बजते न बजते गायत्री ने कहा था, "प्रोफेसर, तुम्हारी आखिरी ट्रेन दस बजकर बीस मिनट पर है न ?"

"हाँ।"

"फिर तैयार हो जाओ। इसके बाद रवाना होगे तो दौडकर जाना पडेगा।'

प्रकाश दा बायें हाथ से धोती की चुनट और दाहिने से ब्रिफकेस थामे नीचे उतर आया। दोनो आखो से गायत्री की ओर जी-भर निहारा। मन-ही-मन सोचा, तुम्हारे अलावा और किसका नाम जीवन-भर जपता रहूँ ? प्रकाश दा ने जबान से बस इतना ही कहा, "चलू।"

"कहो, फिर आऊँगा।"

चेहरे पर हँसी लेकर प्रकाश दा विदा हुआ था। प्रोफेसरी करता था न, इसलिए किंचित् भावुक होना स्वाभाविक है। तारकेश्वर लोकल के आखिरी डिब्बे मे बैठकर सोचा था, यह विदाई नही, कल के मिलन की तैयारी है।

इसी तरह दिन बीतते जा रहे थे। सात दिनो के बाद सप्ताह बीत गया, सप्ताह के बाद महीना और महीने पर महीने लुढकने के बाद साल पूरा होने का वक्त भी आ गया। अब दुगुना पैसा मिलने पर भी गायत्री पाँच बजे के बाद शूटिंग नही करती, हालाकि पूरे टालीगज मे

उसको चाहने वालो की भरमार है। निर्माताओ का दल असन्तुष्ट है मगर उनके सामने दूसरा कोई उपाय नही। प्रकाश दा छह बजे कॉलेज से वापस आये कि इसके पहले ही नाश्ते का प्लेट लिए गायत्री बार बार घडी की ओर देखती है। उसके बाद जब दोनो नाश्ता करने लगते हैं तो गायत्री पूछती है, "आज क्या-क्या पढाया ?"

एक अदद पूरी और आलूदम के एक पूरे आलू को मुँह मे रख प्रकाश दा विकृत उच्चारण के साथ कहता, "मर्चेन्ट ऑफ वेनिस।"

फिर सवाल किया जाता, "अच्छा, प्रोफेसर मित्र की बीवी कैसी हैं ? डॉक्टर ने कहा कि ऑपरेशन करना ही होगा ?"

प्रकाश दा खाते-खाते ही सवालो का जवाब देता। गायत्री नाश्ता करते-करते ही कालेज की सारी खबरो से वाकिफ हो जाती।

"अच्छा, तुमने बताया था कि तुम लोगो के थड इयर के मृणाल घोष के पिताजी का देहान्त हा गया है। अब उन लोगो की फैमिली की देख-रेख कौन करेगा ?'

विमलेन्दु और फिल्मी दुनिया के बहुतेरे लोग प्रकाश दा को सन्देह की निगाह से देखने लगे। लैंसडाउन-मनोहर पुकुर के नौजवानो की नज़र प्रकाश दा पर पडती तो वे बेरोकटाक प्रकाश दा के खिलाफ अशोभनीय राय जाहिर करते। एकमात्र ललिता को ही उस पर कोई सन्देह नही था। वह जानती थी कि दीदी जो प्रोफेसर बाबू को प्यार करती है। जानती थी कि दोनो एक-दूसरे को एकात मे पाना चाहते हैं लेकिन उस चाह और प्राप्ति मे रक्त-मास का रिश्ता नही है, इन्द्रिय-दुबलता का नामोनिशान नही है। ललिता एक [illegible] ेन्री पर खडी होकर सुन रही थी

"अच्छा यह तो बताओ गायत्री, तुमने इ[illegible] आद-मियो को देखा-परखा है, बहुतो के सपक मे [illegible] उन्ह छोडकर मुझसे प्रेम क्या करने लगी ?"

दीदी जी हँस देती हैं। उसके बाद कहती है, "उत्तर देना क्या जरूरी है?"

प्रोफेसर बाबू कहते हैं, "अगर दो तो मुझे प्रसन्नता होगी।"

उसके बाद दीदी जी कहती हैं, "जानते हो प्रोफेसर, मुझे मालूम है कि लाखो आदमी मुझे चाहते हैं। जिन्दगी मे जिन्हें अपने-आस-पास पाया है, वे मेरे जिस्म के प्रत्येक रोएँ को लालची निगाह से देखते हैं। वे मेरी सपत्ति पाना चाहते हैं। लेकिन स्टूडियो के फ्लोर मे एकमात्र तुम्ही को एक ऐसे व्यक्ति के रूप मे पाया जो मेरी देह की ओर हिंसक पशु की तरह नही ताकता।"

ललिता देहरी से झांककर देख रही थी, दीदी जी प्रोफेसर के हाथो को नचाती हुई बोली, "यही वजह है कि मैं तुमसे प्रेम करने लगी। तुम्हे अपने निकट पाना चाहा। तुम्हे अपनी भावी सतान के पिता के रूप म स्वीकार कर लिया।"

प्रोफेसर बाबू ने दीदी जी को पकडकर कहा, "गायत्री!"

दीदी जी ने प्रोफेसर साहब के कधे पर अपना सिर निढाल छोड-कर टूटे हुए स्वर मे कहा, "बोलो।"

ललिता अब वहाँ रुकी नही, हडबडा कर रसोईघर मे चली गयी थी।

दुर्गापूजा के समय प्रकाश दा को कूचबिहार जाने का मन नही था मगर गायत्री की खातिर जाना पडा। प्रकाश दा ने एक और पासिंग शो सिगरेट सुलगायी। उसके बाद मुझसे कहा, "जानते हो बच्चू, मेरा घर जाने का मतलब नही है, यह सोचकर गायत्री ने क्या कहा था? कहा था, मेरे कारण अगर तुम्हे माँ-बाप के स्नेह से वचित होना पडे ता वैसी स्वार्थी औरत बनकर मैं तुम्हे पाना नही चाहती। तुम किसी चीज से वचित हो जाओगे, यह सोचकर मैंने तुमसे प्रेम नही किया है। हम-तुम किसी अतिरिक्त वस्तु को प्राप्त करेंगे, इसी उद्देश्य से इस प्रेम ने जन्म लिया है।"

प्रकाश दा ने घर का ताला खोला। घर के अन्दर जाकर सि
दवाकर बत्ती जलाते ही मेरी निगाह सामने की मेज की घडी की
गयी। देखा, पाँच बजने मे लगभग दस मिनट बाकी हैं। प्रकाश द
स्टोव पर चाय का पानी रख दिया। बोले, "बच्चू ललिता के अल
मेरे जीवन की कहानी और कोई नही जानता। आज तुम भी
गये। प्याली-तश्तरी-चाय-चीनी-दूध निकाल कर बोला, "शायद अ
से तुम मुझे नफरत की निगाह से देखना शुरू कर दोगे, मुझे दुश्चा
समझने लगोगे। तुम्हे जो भी मर्जी हो मेरे बारे मे सोच सकते
लेकिन गायत्री के बारे मे कहने पर मुझे अपार शान्ति मिलती
लगता है, वह मेरे आस-पास है, बात कर रही है, हँस रही है।
अतीत मेरे सामने आकर खडा हो जाता है।"

दो प्याली चाय लेकर हम पलग पर बैठ गये। बिना कुछ ब
चाय पीना खत्म कर मैं उठकर खडा हो गया। रात-भर प्रकाश दा
बेधक जीवन-कथा का सिनेमा देखकर मेरी वाक्-शक्ति अवरुद्ध
गयी थी।

बाहर उजास छा गया है। प्रकाश दा के घर से निकलने क ब
ही डेरे पर लौटने की व्यग्रता महसूस की। पैदल चलकर डेरे पर लौट
के बाद याद आया, विद्यार्थी-जीवन मे गायत्री देवी की फिल्म देख
के लोभ मे कितनी ही बार कतार मे खडा हो चुका हूँ। उनका अभि
नय देखकर मुग्ध हुआ था। वाराणसी मे इस अभिनेत्री की मृत्यु हा
के सबध मे कैफे-रेस्तराँ मे अनेक अश्लील और अजीब कहानियाँ सु
चुका हूँ। अपराधी मन लेकर मैं अपने डेरे पर लौट आया।

जिन असिस्टेन्ट एडिटर, सब एडिटर, स्पोर्टस एडि
और प्रूफरीडरो को पहले मैं आदमी समझता ही
मुझे अच्छे लगने लगे हैं। और सिर्फ ... लगने

ाथ मंदिर देख आये हर रोज शाम के वक्त हम तुलसी-
न्द्र घाट, दशाश्वमेध घाट, मणिकर्णिका घाट, पचगगा घाट
करते थे। एकबार टिकट लौटाकर हमने और तीन-चार
ा निश्चय किया। लेकिन दूसरे दिन महाराणा चैतसिंह
' मे लौटने के समय हमारा ताँगा एक लॉरी से टकरा गया
जा-सजाया बाग उजड गया। लगभग दो घण्टे के बाद
ार अस्पताल मे गायत्री का क्षत-विक्षत प्राणहीन शरीर
मला। उसके बाद मैं रोया था या नही, यह बात याद नही।
ना जरूर याद है कि हरिश्चन्द्र घाट के महाश्मशान मे
। अन्त्येष्टि क्रिया की थी।'

' के छोर से प्रकाश दा ने आँखो का कोर पाछा।

ते हो बच्चू, इसके बाद मैं विक्षिप्त जैसा हो गया। नहाना,
ा छोडकर अस्पताल के चारो ओर और हरिश्चन्द्र घाट के
ायत्री को खोजे चलता था।"

या को कँपाने वाली लबी सास लेकर प्रकाश दा ने इसके बाद
मने बाद मैं अस्वाभाविक स्थिति मे आ गया। दिन के वक्त
ुमारी दूर होते ही अस्पताल और हरिश्चन्द्र घाट भागा-भागा
। रात के समय मीना बाजार लौट आता था।

सिगरेट का कश लेते हुए प्रकाश दा ने कहा, "इसके बाद कभी मुझे यह हिम्मत नही हुई कि कहूँ कि छुट्टी के बाद घर नही जाऊँगा। इसके अलावा मेरे जाने का सारा इन्तजाम गायत्री ही कर देती थी। कॉलेज मे छुट्टी होने के दो-तीन सप्ताह पहले ही गायत्री माँ के लिए साडी-सेमीज, बाबूजी के लिए धोती-कुरता और मेरे लिए धोती-कमीज-रूमाल—यहाँ तक कि हमारे किराये के मकान के नौकर विक्रम के लिए कपडे-लत्ते खरीद देती थी।"

मानिकतल्ला का मोड पारकर हम विडन स्ट्रीट मे चले आये। दो चार मिनट चलने के बाद प्रकाश दा के डेरे के सामने पहुँचे। प्रकाश दा के स्वर मे भारीपन आ गया है, इसका मुझे पता चल गया। आवाज जैसे रुधती जा रही थी। अँधेरे मे प्रकाश दा का चेहरा भलीभाति देख नही सका, लेकिन यह समझने मे कोई कठिनाई नही हुई कि उसकी आँखें छलछला आयी है।

प्रकाश दा बोला, "चूकि गायत्री की कहानी है इसलिए इसका अन्त नही हो सकता। इतना ही जान लो कि उसका प्रेम पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया था। घटना चक्र से मेरे माँ-बाप को भी गायत्री के बारे मे पता चल गया था। उन्होने मन ही मन गायत्री को पुत्रवधू के रूप मे स्वीकार भी कर लिया था। लगभग दो साल बाद हाई ब्लड प्रेशर के कारण बाबू जी का देहान्त हो गया। बहुत दिनो के सकोच को परे ठेल कर गायत्री मुझे अपने साथ ले कूचबिहार गयी थी। गायत्री के सेवा-जतन और सात्वना से मा बहुत ही खुश हुई थी। बाबू जी का मृत्युशोक मा ने गायत्री को अपने पास पाकर झेल लिया था।

"मामा माँ को अपने साथ लेकर जब रगपुर चले गये तो हम कलकत्ता लौट आये। लगभग एक सप्ताह बाद एक फिल्म के आउटडोर शूटिंग के सिलसिले मे वाराणसी जाने का कार्यक्रम बना। मुझे भी जबरन खीचकर ले गये। तीनेक दिन मे शूटिंग का काम खत्म हुआ लेकिन हम वही रुक गये। हम सारनाथ गये, हिन्दू युनिवर्सिटी, रामनगर

पैलेस, विश्वनाथ मदिर देख आये हर रोज शाम के वक्त हम तुलसी-घाट, हरिश्चन्द्र घाट, दशाश्वमेघ घाट, मणिकर्णिका घाट, पचगगा घाट को परिक्रमा करते थे। एकबार टिकट लौटाकर हमने और तीन-चार दिन ठहरने का निश्चय किया। लेकिन दूसरे दिन महाराणा चेतसिंह के राजमहल से लौटने के समय हमारा तांगा एक लॉरी से टकरा गया और मेरा सजा-सजाया बाग उजड गया। लगभग दो घण्टे के बाद होश आने पर अस्पताल मे गायत्री का क्षत-विक्षत प्राणहीन शरीर देखने को मिला। उसके बाद मैं रोया था या नही, यह बात याद नही। तब हा, इतना जरूर याद है कि हरिश्चन्द्र घाट के महाश्मशान मे गायत्री की अन्त्येष्टि क्रिया की थी।'

चुन्नट के छोर से प्रकाश दा ने आँखो का कोर पोछा।

"जानते हो बच्चू, इसके बाद मैं विक्षिप्त जैसा हो गया। नहाना, खाना-पीना छोडकर अस्पताल के चारो ओर और हरिश्चन्द्र घाट के मसान मे गायत्री का खोजे चलता था।"

पसलियो को कँपाने वाली लबी सास लेकर प्रकाश दा ने इसके बाद कहा, "इसके बाद मैं अस्वाभाविक स्थिति मे आ गया। दिन के वक्त नशे की खुमारी दूर होते ही अस्पताल और हरिश्चन्द्र घाट भागा-भागा जाता था। रात के समय मीना बाजार लौट आता था।

"बाद मे सुनने को मिला, इसी तरह मैंने लगभग एक साल गुजार दिया। ललिता और मा ने गायत्री को लौटा लाने का वचन देकर बडी मुश्किल से बाई जी के कोठे की ठुमरी और शराब की मजलिस से मेरा उद्धार किया। कलकत्ता लौटकर एकाध साल तक चुपचाप बैठा रहा। शेक्सपीयर-बायरन शेली टेनिसन सबको भूल गया। माँ के देहान्त के बाद नब्बे रुपये के कैनवसर का काम स्वीकार कर जबलपुर चला गया। उसके बाद बरेली मे सिनेमा-हॉल की मेनेजरी की। आठ-दस साल तक जहा-तहाँ मारे-मारे फिरने के बाद पुरी मे मनमोहन दा से परिचय हुआ और तीन बरसो से 'देनिक सवाद' मे काम कर रहा हूँ।"

सिगरेट का कश लेते हुए प्रकाश दा ने कहा, "इसके बाद कभी मुझे यह हिम्मत नही हुई कि कहूँ कि छुट्टी के बाद घर नही जाऊँगा। इसके अलावा मेरे जाने का सारा इन्तजाम गायत्री ही कर देती थी। कॉलेज मे छुट्टी होने के दो-तीन सप्ताह पहले ही गायत्री मा के लिए साडी-सेमीज, बाबूजी के लिए धोती-कुरता और मेरे लिए धोती-कमीज-रूमाल—यहाँ तक कि हमारे किराये के मकान के नौकर विक्रम के लिए कपडे-लत्ते खरीद देती थी।"

मानिकतल्ला का मोड पारकर हम बिडन स्ट्रीट मे चले आये। दो चार मिनट चलने के बाद प्रकाश दा के डेरे के सामने पहुँचे। प्रकाश दा के स्वर मे भारीपन आ गया है, इसका मुझे पता चल गया। आवाज जैसे रुँधती जा रही थी। अधेरे मे प्रकाश दा का चेहरा भली-भाति देख नही सका, लेकिन यह समझने मे कोई कठिनाई नही हुई कि उसकी आखे छलछला आयी है।

प्रकाश दा बोला, "चूँकि गायत्री की कहानी है इसलिए इसका अन्त नही हो सकता। इतना ही जान लो कि उसका प्रेम पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया था। घटना चक्र से मेरे मा-बाप को भी गायत्री के बारे मे पता चल गया था। उन्होने मन ही मन गायत्री को पुत्रवधू के रूप मे स्वीकार भी कर लिया था। लगभग दो साल बाद हाई ब्लड प्रेशर के कारण बाबू जी का देहान्त हो गया। बहुत दिनो के सकोच को परे ठेल कर गायत्री मुझे अपने साथ ले कूचबिहार गयी थी। गायत्री के सेवा जतन और सात्वना से मा बहुत ही खुश हुई थी। बाबू जी का मृत्युशोक माँ ने गायत्री को अपने पास पाकर झेल लिया था।

"मामा माँ को अपने साथ लेकर जब रगपुर चले गये तो हम कलकत्ता लौट आये। लगभग एक सप्ताह बाद एक फिल्म के आउटडोर शूटिंग के सिलसिले मे वाराणसी जाने का कार्यक्रम बना। मुझे भी जबरन खीचकर ले गयी। तीनेक दिन मे शूटिंग का काम खत्म हुआ लेकिन हम वही रुक गये। हम सारनाथ गये, हिन्दू युनिवर्सिटी, रामनगर

पैलेस, विश्वनाथ मंदिर देख आये हर रोज शाम के वक्त हम तुलसी-घाट, हरिश्चन्द्र घाट, दशाश्वमेध घाट, मणिकर्णिका घाट, पचगगा घाट की परिक्रमा करते थे। एकबार टिकट लौटाकर हमने और तीन-चार दिन ठहरने का निश्चय किया। लेकिन दूसरे दिन महाराणा चैतसिंह के राजमहल से लौटने के समय हमारा तागा एक लॉरी से टकरा गया और मेरा सजा-सजाया बाग उजड गया। लगभग दो घण्टे के बाद होश आने पर अस्पताल मे गायत्री का क्षत-विक्षत प्राणहीन शरीर देखने को मिला। उसके बाद मैं रोया था या नही, यह बात याद नही। तब हाँ, इतना जरूर याद है कि हरिश्चन्द्र घाट के महाश्मशान मे गायत्री की अन्त्येष्टि क्रिया की थी।"

चुन्नट के छोर से प्रकाश दा ने आँखो का कोर पोछा।

"जानते हो बच्चू, इसके बाद मैं विक्षिप्त जैसा हो गया। नहाना, खाना-पीना छोडकर अस्पताल के चारो ओर और हरिश्चन्द्र घाट के मसान मे गायत्री को खोजे चलता था।"

पसलियो को कपाने वाली लबी सास लेकर प्रकाश दा ने इसके बाद कहा, "इसके बाद मैं अस्वाभाविक स्थिति मे आ गया। दिन के वक्त नशे की खुमारी दूर होते ही अस्पताल और हरिश्चन्द्र घाट भागा-भागा जाता था। रात के समय मीना बाजार लौट आता था।

"बाद मे सुनने को मिला, इसी तरह मैंने लगभग एक साल गुजार दिया। ललिता और मा ने गायत्री को लौटा लाने का वचन देकर बडी मुश्किल से बाई जी के कोठे की ठुमरी और शराब की मजलिस से मेरा उद्धार किया। कलकत्ता लौटकर एकाध साल तक चुपचाप बैठा रहा। शेक्सपीयर-बायरन शेली टेनिसन सबको भूल गया। माँ के देहात के बाद नब्बे रुपये के कैनवसर का काम स्वीकार कर जबलपुर चला गया। उसके बाद बरेली मे सिनेमा-हॉल की मैनेजरी की। आठ-दस साल तक जहाँ-तहा मारे-मारे फिरने के बाद पुरी मे मनमोहन दा से परिचय हुआ और तीन बरसो से 'देनिक सवाद' मे काम कर रहा हूँ।"

प्रकाश दा ने घर का ताला खोला। घर के अन्दर जाकर स्विच दबाकर बत्ती जलाते ही मेरी निगाह सामने की मेज की घडी की ओर गयी। देखा, पाँच बजने मे लगभग दस मिनट बाकी हैं। प्रकाश दा ने स्टोव पर चाय का पानी रख दिया। बोले, "बच्चू ललिता के अलावा मेरे जीवन की कहानी और कोई नही जानता। आज तुम भी जान गये। प्याली-तश्तरी-चाय-चीनी-दूध निकाल कर बोला, "शायद आज से तुम मुझे नफरत की निगाह मे देखना शुरू कर दोगे, मुझे दुश्चरित्र समझने लगोगे। तुम्हे जो भी मर्जी हो मेरे बारे मे सोच सकते हो, लेकिन गायत्री के बारे मे कहने पर मुझे अपार शान्ति मिलती है। लगता है, वह मेरे आस-पास है, बात कर रही है, हँस रही है। पूरा अतीत मेरे सामने आकर खडा हो जाता है।"

दो प्याली चाय लेकर हम पलग पर बैठ गये। बिना कुछ बोले चाय पीना खत्म कर मैं उठकर खडा हो गया। रात-भर प्रकाश दा की बेधक जीवन-कथा का सिनेमा देखकर मेरी वाक्-शक्ति अवरुद्ध हो गयी थी।

बाहर उजास छा गया है। प्रकाश दा के घर से निकलने के बाद ही डेरे पर लौटने की व्यग्रता महसूस की। पैदल चलकर डेरे पर लौटने के बाद याद आया, विद्यार्थी-जीवन मे गायत्री देवी की फिल्म देखने के लोभ मे कितनी ही बार कतार मे खडा हो चुका हूँ। उनका अभिनय देखकर मुग्ध हुआ था। वाराणसी मे इस अभिनेत्री की मृत्यु होने के सबध मे कैफे-रेस्तराँ मे अनेक अश्लील और अजीब कहानिया सुन चुका हूँ। अपराधी मन लेकर मैं अपने डेरे पर लौट आया।

जिन असिस्टेन्ट एडिटर, सब एडिटर, स्पार्ट्स एडिटर, फोटोग्राफर और प्रूफरीडरो को पहले मैं आदमी समझता ही नही था, अब वे लोग मुझे अच्छे लगने लगे है। और सिर्फ अच्छे लगने की बात नही है, उनमे

से बहुतो को मैं प्यार करने लगा हूँ, बहुतो को श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगा हूँ। समाचार-पत्र प्रकाशन के मामले मे इनके व्यक्तिगत और सामूहिक महत्त्व को धीरे-धीरे समझने लगा हूँ। बाजार मे अनगिन प्रकार की साग-सब्जी, अनाज, मछली, मास, तेल, मसाला मिलते हैं, लेकिन ठीक से चीजो को खरीदकर, अच्छी तरह रसोई पकाकर सुस्वादु भोजन तैयार करना एक प्रशसनीय काम है। उसी तरह समाचार-पत्र के कार्यालय मे दुनिया-भर की खबरें चौबीसो घण्टे आती रहती हैं और उन्हें ठीक से परख कर उनके महत्त्व के अनुसार सहेज-सँवारकर हर रोज सवेरे हरेक आदमी के निकट रखना बुद्धि और सामर्थ्य की बात है। अपने सहकर्मियो की इस बुद्धि और सामर्थ्य पर मैं मुग्ध हूँ।

कई वर्षों तक काम करने के बाद मेरी समझ मे यह आ गया है कि आधुनिक सैन्य वाहिनी की तरह समाचार-पत्र कार्यालय का कोई व्यक्ति नगण्य नही है। खास-खास परिस्थितियो मे किसी-किसी का प्रयोजन और महत्त्व देखकर मैं अवाक् हो जाता था। आधुनिक सैन्य-वाहिनी के रसोइये तक को अस्त्र-शस्त्र चलाने की बाकायदा ट्रेनिंग लेनी पडती है, क्योकि फारवड एरिया मे जाने पर रसोइये को भी साथ मे जाना पडता है और जरूरत पडने पर लडाई लडनी पडती है। लडाई के समय सैन्य-वाहिनी विक्षिप्त हो जाती है तो सेना के निचले तबके के कर्मचारियो को नेतृत्व स्वीकार कर दुश्मनो के खिलाफ लडना पडता है। खास-खास इलाके मे आर्मड कोर के लोगो को इजीनियरिंग विभाग का काम करना पडता है, सिगनल के लोगो को राइफल सँभालनी पडती है। अखबार के दफ्तर मे भी बीच बीच मे ऐसा ही होता है। रात दस बजे गैली देखने के लिए जाने पर पता चला, सपादकीय नही है। तलाश करने पर मालूम हुआ, प्रेस मे भी उसकी कोई प्रति नही गयी है। किसी कारणवश हरिसाधन दा या कोई दूसरा असिस्टेन्ट एडिटर नही आ सका है, लेकिन ऐसा होने से क्या सपादकीय प्रकाशित नही होगा ? मनमोहन दा बोले, "अलक, तुम पार्लियामेंट के फॉरेन एफेयस डिबेट के प्राइम मिनिस्टर

का रिप्लाइ तैयार करो और मैं झटपट सपादकीय लिख देता हूँ। मैं और बारीन दो तीन 'यत्किंचित' लिख देता था। विधान-सभा के किसी प्रस्ताव के सबध मे सपादकीय लिखने की बात आती तो अक्सर हरि-साधन दा कहते, "तारा, तुम्हें तो सारी पृष्ठभूमि मालूम है, एक कॉलम का सपादकीय लिख दो।' एक ही दिन तीन फिल्मो का प्रेस-शो होने की बात है लेकिन सिनेमा एडिटर के लिए तीन शो देखकर समालोचना लिखना असभव है। मैं और तारा दा ने दो फिल्म देखकर समालोचना लिख दी अभिनय मबसे अच्छा रहा है श्रीमती देवी का। लेकिन ध्वनि और प्रकाश मे त्रुटि रहने के कारण उनके अभिनय की कुशलता पूणरूपेण चरितार्थ नही हो पायी है। "

डलहौजी स्क्वायर मे खाद्य-आन्दोलनकारियो पर गोली चलायी गयी है। समूचे शहर मे हलचल मच गयी है, राजनीतिक दलो मे उत्तेजना है। लाल बाजार पुलिस हेड क्वाटर के कट्रोल-रूम मे इस हालत मे मुख्य मत्री और हम तीन रिपोटरो को सास लेने का भी वक्त नही मिल रहा है। रात ग्यारह बजे के बाद एकाएक तारा दा को याद आया, आज टेलीफोन ड्यूटी पर कोई नही है। सब एडिटर लोग भी बहुत व्यस्त है, इसलिए लावण्य को बुलाया गया। मँजे हुए रिपोटर की तरह लावण्य दाहिने हाथ मे पेंसिल और बाये हाथ मे टेलीफोन लेकर बैठ गया। "हैलो, हावडा रिपोट-सेन्टर आज कोई खबर है? क्या कहा? गोला-बाडी मे अवैध शराब की भट्ठी मे छापा मारकर सात सौ व्यक्तियो को गिरफ्तार ठीक है। हैलो, फायर-ब्रिगेड काशीपुर पटसन की मशीन मे अग्निकाण्ड?" लावण्य पूछता है, कितने की हानि हुई? कितने घण्टे तक आग लगी रही और कितनी दमकलें आप लोग अपने साथ ले गये थे? किसी की मौत हुई है? टेलीफोन के ऑपरेटर भी भरपूर सहायता करते थे। लावण्य टेलीफोन उठाकर कहता, "अब अस्पताल दीजिए?" ऑपरेटर मुलायम आवाज मे कहता, "नही भाई, आज कोई खबर नही है। सिर्फ कंबल मे दस कॉलेरा का केस हुआ है और पुलिस फायरिंग

या लाठी चाज से आहत हुए लोगो का नाम, पता, सख्या अस्पताल से नही बताये जायँगे, मेडिकल कॉलेज ने अभी तुरन्त यह बात डेली न्यूज को सूचित की है।"

लावण्य के अतिरिक्त जो व्यक्ति रिपोटर का काम करता था, वह था ड्राइवर प्रेम लाल। अखबार के काम से प्रेम लाल को पूरे कलकत्ते का चक्कर काटना पडता था और इस परिक्रमा के दौरान उसकी नजर किसी चीज पर पड जाती तो वह हम लोगो को इसकी सूचना देता था। ड्राइवर होने के बावजूद राम लाल खबर और अखबार के बारे मे बहुतेरे रिपोटरो से अधिक जानकारी रखता था। एक दिन की घटना की याद आती है। स्कूल-कॉलेज के छात्रो की फीस बढोत्तरी के खिलाफ बहुत-सी जगहो मे सभा आयोजित की गयी थी। मुझे इस कार्यवाही का सवाद लेने के अतिरिक्त रेल कर्मचारियो की एक आवश्यक सभा मे हावडा मैदान जाना था। एकाध घण्टे के दौरान ही इन तीन-चार मीटिंगो की कार्यवाही का सवाद कैसे लूगा, समझ मे नही आ रहा था। हतप्रभ होकर मैंने प्रेम लाल से कहा, "आज हवाई जहाज की तरह गाडी चलाओ वरना बहुत बडी मुश्किल मे पड जाऊगा।'

जीप चालू कर गियर लेने के पहले प्रेम लाल ने मेरी ओर देखा और कहा, "क्यो क्या हुआ ?"

मैंने उसे अपनी कठिनाई का ब्योरा दिया। प्रेम लाल ने कहा, "इसमे चिन्ता की कौन-सी बात है ? प्रेम लाल ने रोग का निदान बताया, "दरभगा बिल्डिंग मे छात्रो के सभापति के नाम का पता लगा लें और प्रस्ताव की प्रतिलिपि ले लें। उसके बाद हम लोग सीधे हावडा मैदान चले जायेंगे। दरभगा की मीटिंग के प्रस्ताव से ही छात्रो को मेन रिपोट तैयार कर सभापति का नाम जोड दें। उसके बाद लिख दीजिये कि हाजरा और देश बधु पार्क म भी विद्यार्थियो की सभा हुई।"

प्रेम लाल ने क्लच ढीलाकर एक्सिलेटर दबाया और स्टियरिंग घुमाकर दफ्तर से गाडी बाहर ले आया। उसके बाद गभीर स्वर मे

कहा, "इसके अलावा कल तो रविवार का अखबार है, विज्ञापनो से ही भरा रहेगा। बडी रिपोट लिखने से फायदा ही क्या ?"

मेरे जैसे भद्र रिपोटर बाबू के उवर मस्तिष्क मे उस दिन लाखो चेष्टा के बावजूद जो सूझ पैदा नही हुई प्रेम लाल ने मँजे हुए डाक्टर की तरह मुझ जैसे मलेरिया के मरीज के मज का सहज ही इलाज कर दिया।

इसी तरह बहुत ठोकरें खाने पर मैंने सीखा है कि अखबार के दफ्तर का कोई व्यक्ति अश्रद्धा का पात्र नही। मनमोहन दा यद्यपि खूँटीदार दाढी ले आठ हाथवाली धोती और फटा कुरता पहनकर आते थे लेकिन मैं उन्हे अश्रद्धा की दृष्टि से नही देखता था। मुझे मालूम था कि युगान्तर पार्टी मे योगदान करने के निमित्त ही वे एम० ए० क्लास छोडकर चले आये थे, मुल्क की आजादी के लिए ही पुलिस की लाठी और मिलिटरी के मोटे बूट की मार बरदाश्त की थी, जवानी के सुनहले दिन गया सेंट्रल जेल के अँधेरे सेल मे बिताये हैं। जानता हूँ, वह गुलाम करना नही जानते। इसीलिए डलहौजी के दस से पाच बजे के निश्चिन्त जीवन को स्वीकार करने के बजाय गरीबी से भरे समाचार पत्र के जीवन को अपना लिया है। हरेकृष्ण बाबू गृहस्थी चलाने की खातिर दिन-भर स्कूल मे शिक्षक का काम करते हैं लेकिन अखबार का उन्हे ऐसा नशा है कि सोलह साल से मात्र पद्रह-बीस रुपये की तनख्वाह पर नाइट सब-एडिटर का काम कर रहे हैं। हमारे दफ्तर मे और भी बहुतेरे ऐसे लोग थे जो कॉलेज के लेक्चरर-प्रोफेसर होकर आषाढ के प्रथम दिवस मे कालिदास पर भाषण दे सकते थे, रवीन्द्र जयन्ती पर अध्यक्षता कर सकते थे, आधुनिक तरीके से बाहरी कमरे को सजाकर छात्रो से शादी कर सुखी हो सकते थे। बहुत से ऐसे व्यक्ति थे जो अगर अपना सिर जरा नवा लेते तो सरकारी दफ्तर मे खासी मोटी

गद्दी वाली कुरसी पर आसीन होकर कालिंग बेल बजा सकते थे और सरकार को अगूठा दिखा कर महीने के अन्त मे एक बडल मोटा नोट घर ला सकते थे, बाल-बच्चो के लिए बीमा कर सकते थे। लेकिन उन्होंने इस रास्ते पर कदम नही रखा। समाचार-पत्र के कर्मचारी सन्यासी नही होते, लेकिन घर का आकर्षण इनके लिए प्रमुख नही, गौण है।

तब हाँ, सब आदमी इसी कोटि के नही थे। बगला भाषा न जानने के बावजूद स्वदेश कैसे 'दैनिक सवाद' मे भर्ती हुआ था, यह बात हमे मालूम नही। स्वदेश 'दैनिक सवाद' कार्यालय मे अपने मूड के कारण विख्यात था। बेयरा की जमात मे वह तुनक मिजाज बाबू के नाम से परिचित था। हरिसाधन बाबू से दूसरे की चुगली करना उसका सबसे बडा काम था और वह इस काम को इस कदर निलज्जता से करता था कि इसे देखकर स्वदेश की तारीफ ही की जायेगी। सबकी गलती निकालना, सबके पीछे पडा रहना उसका काम था। यही वजह है कि हम लोगों के फोटोग्राफर ने उसका अग्रेजी नाम स्क्रूटनाइजर और बँगला नाम काठी बाबू रख दिया था। 'दैनिक सवाद' मे लगभग तीन साल तक काम करने के बाद स्वदश रेल का टिकट कलक्टेर होकर वहा से विदा हुआ। याद है, जिस दिन स्वदेश कार्यालय से विदा हुआ, उस दिन कार्यालय में अपूर्व प्रसन्नता का वातावरण था।

'दैनिक सवाद' कार्यालय मे सहकर्मियो के सान्निध्य मे रहने का मौका तो मिलता ही था, इसके अतिरिक्त अजीब-अजीब आदमियो का जुलूस भी देखने को मिलता था। डॉक्टरा के निकट अनगिन मरीज आते हैं, वकील-बैरिस्टरो के पास लोग मुकद्दमा करने जाते हैं, राजनातिक नेताओ के पास ताबेदार और कृपाकाक्षियो की भीड इकट्ठी होती है, उच्च पदाधिकारियो के पास नौकरी के उम्मीदवारो का मजमा इकट्ठा होता है, आयकर, बिक्रीकर के पदाधिकारियो के इर्द-गिर्द मधुमक्खियो की तरह व्यवसायियो का जत्था मँडराता रहता है। इसी तरह समाज के तरह-

तरह के लोग किसी खास व्यक्ति के पास या केंद्र मे बैठकबाज़ी करते हैं। लेकिन अखबार के दफ्तर मे आप समाज के हर तबके के लोगो का अविराम जुलूस देख सकते हैं। बहुत कुछ रथ के मेले की तरह। तले हुए पापड से लेकर स्नो-पाउडर, तरल आलता, साग मव्जी, मिट्टी का पुतला, छोटी-छोटी सकस पार्टी, जादूगर, पुतले का नाच, कुरसी-मेज़-आलमारी की दुकान, फूलो का बीज, फल के पौधे, कटपीस कपडा, रेडीमेड कमीज़-पेंट वगरह तमाम चीज़ें रथ के मेले मे मिलती हैं। 'दैनिक सवाद' कार्यालय मे बैठे बैठे मैं इमी तरह का मेला देखा करता था। साधु-सन्यासी से लेकर काले बाज़ार के व्यवसायी और खास खास वक्त वेश्याओ तक को रिपोटरो की मेज़ पर बैठे पाता था।

जहाँ तक याद आ रहा है, उस दिन रविवार था। तारा दा दफ्तर नही आये थे। मेरे दूसरे-दूसरे सहकर्मी घर चले गये थे। ढेर सारी लोकल कापियो को देखकर लिखते-लिखते रात के दस बज गये। उस समय भी टेलीफोन करना बाकी ही था। लावण्य से एक प्याली चाय लाने को कहा। चाय आ गयी, मैंने पोना खत्म किया। दैनिक तालिका के अनुसार पुलिस, फायर ब्रिगेड, रिवर पुलिस, अस्पताल, रेलवे स्टेशन, दमदम एयर पोट तथा इसी तरह के दजनो स्थान मे फोन करते-करते एक किस्म की अलसता ने मुझे जकड लिया। सामने रखे पैड पर कलम से लकीरें खीच रहा था, भाभी की बहन के जूडे की तसवीर बना रहा था। उसके बाद सबको काटकर हरिमाधन दा का पॉट्रेट बनाना शुरू किया। इसी तरह कुछ वक्त गुज़ारने के बाद अन्तत टेलीफोन करना शुरू कर दिया। दो-चार बार टेलीफोन करने के बाद श्री रामपुर पुलिस रिपोट सेंटर से सबध सूत्र कायम करने का आदेश दिया।

"नमस्कार!"

"नमस्कार।" सामने एक बुजुग आदमी को खडे पाया। रिपोट सेन्टर से खबर की तहकीकात करते हुए सज्जन को सामने की कुरसी पर बैठने का इशारा किया। कोई खबर नही थी, टेलीफान रख दिया।

सज्जन से आने का उद्देश्य पूछा। उन्होने कल के अखबार मे एक आवश्यक विज्ञापन छापने का अनुरोध किया। विज्ञापन छापने से 'दैनिक सवाद' के कोषागार मे थोडी बहुत रकम आती, अखबार के एक विश्वासी कर्मचारी के नाते इस बात से मुझे प्रसन्न होना चाहिए था। लेकिन विज्ञापन से कोई वास्ता न रहने के कारण मैंने अपनी असमर्थता प्रकट की। इतनी रात मे विज्ञापन-विभाग का कोई कर्मचारी दफ्तर मे नही रहता है और अगले दिन के अखबार मे विज्ञापन प्रकाशित करना असभव है, यह बात जब मैंने सज्जन को बतायी तो उनके चेहरे पर उदासी घिर आयी। सज्जन बार-बार कहने लगे, "बहुत ही जरूरी है, इससे बहुतेरे लोगो का उपकार होगा।" आम तौर से व्यावसायिक प्रतिष्ठान विज्ञापनो के माध्यम से अपना प्रचार करते हैं। इसके अलावा टेन्डर नोटिस, खो गया है, मिला है, मकान-किराया, पात्र-पात्री, खरीद-बिक्री, स्कूल-कॉलेज, तीर्थ-यात्रा इत्यादि किस्म के जो सब विज्ञापन हर रोज समाचार-पत्र मे प्रकाशित होते हैं, उनसे बहुतो का उपकार होता हो, ऐसा नही लगा। तब क्या रिक्त स्थान के बारे मे सूचना देना चाहते हैं?

पूछा, "आप क्या रिक्त स्थान का विज्ञापन देना चाहते हैं?"

"नही भाई, रिक्त स्थान का विज्ञापन नही, हम लोगो के आश्रम का पता बदल गया है, इसी का विज्ञापन देना चाहता हूँ। बडा ही आवश्यक विज्ञापन है।" सज्जन ने मुझे निराशाभरे स्वर मे कहा।

कुरसी के हत्थे पर कुहनी टिकाये और हथेली पर मुँह रखे सज्जन बैठे रहे। दस-पन्द्रह या बीस मिनट बीत गये। मैं बेचैनी महसूस करने लगा। अन्तत इस चुप्पी को तोडते हुए मैंने कहा, "चाय पीजिएगा?"

उन्होने गभीरता के साथ कहा, "मैं चाय नही पीता।"

कोई उपाय न देखकर मैंने फायर ब्रिगेड, अस्पताल फोन करना शुरू कर दिया। दो-चार आगजनी की घटनाओं के बारे मे भी [illegible] डाला, नेशनल मेडिकल कॉलेज अस्पताल के इमर्जेंसी से

पूछताछ कर एक भीषण दर्दनाक घटना की मझोली किस्म की रिपोट लिखकर तैयार कर लो। तब भी सज्जन चुप्पी ओढे बैठे रहे। दस-पन्द्रह मिनट जब और गुजर गये तो मेरा टलीफोन करने का काम खत्म हो गया। मैंने छोटी-मोटी खबरें लावण्य की मारफत न्यूज डिपार्टमेण्ट मे भेज दी। डायरी और कागज-पत्तर लावण्य को उठाकर रखने को कहा। मुझे जाने को तैयार देखकर भले आदमी की चेतना वापस आयी। एक लबी सास लेकर सज्जन उठकर खडे हो गये। अपने आप बुडबुडाने लगे, "विज्ञापन छप जाता तो बडा ही उपकार होता।"

"कल दोपहर आकर विज्ञापन दे जाइएगा, परसो के अखबार मे छप जायेगा।"

सज्जन फिर अपने आप बुडबुडाने लगे, "अगर देवता यही चाहते हैं कि कल कुछ लोगो को तकलीफ उठानी पडे तो फिर ऐसा ही हो।"

आश्रम का पता बदल जाने की सूचना छपवाने की भले आदमी की व्याकुलता देखकर मेरा मन बडा ही नरम हो गया। कहा, "क्या छपाना है, लिख दीजिये।"

भले आदमी के चेहरे पर जैसे बिजली की कौंध खेल गयी। उन्होंने न्यूजप्रिंट के पैड पर लिख दिया, श्री निकेतन रामकृष्ण सदन आज से ७ नबर घोष लेन से हटकर ४/१ ए, राधा मोहन गोस्वामी लेन मे चला गया है और सेवा-विभाग पहले की तरह ही सवेरे-शाम खुला रहेगा।" पता चल गया कि सज्जन आश्रम के सेक्रेटरी है और मैंने लिख दिया—

श्री निकेतन रामकृष्ण सदन के पते मे हेर-फेर—

श्री निकेतन रामकृष्ण सदन के सेक्रेटरी सूचित कर रहे हैं कि आज (सोमवार) से सदन ४/१ ए, राधा माधव लेन मे स्थानान्तरित हो रहा है तथा सेवा-विभाग बदस्तूर सुबह-शाम खुला रहेगा।

स्लिप लेकर मैं स्वय न्यूज डिपार्टमेन्ट गया और हरेकृष्ण बाबू को देकर कहा, "पहले पृष्ठ के निचले हिस्से मे यह समाचार दे दें।"

न्यूज-डिपार्टमेन्ट से बाहर आकर मैंने भले आदमी से कहा, "ठीक

है, कल ही छप जायेगा।" भले आदमी ने हाथ उठाकर देवता को प्रणाम किया और जेब से दस रुपये के दो-तीन नोट निकालकर कहा, "कितना देना होगा ?"

"कुछ भी नही।"

"यह क्या, आपको लेना ही होगा।"

मैंने उन्हे समझाया, विज्ञापन छापना मेरे अधिकार के बाहर की बात है, लेकिन स्थानीय समाचार छापना मेरे अधिकार के दायरे मे आता है। आप लोगों के आश्रम की विज्ञप्ति स्थानीय समाचार के रूप मे छपेगी और इसके लिए पैसा नही देना है।"

भले आदमी ने फिर हाथ जोडकर उन्हें मस्तक से छुलाया और कहा, "देवता, सब तुम्हारी इच्छा है।" मुझे अनगिन धन्यवाद देकर भले आदमी ने आश्रम आने का निमन्त्रण दिया और एक बहुत बडी गाडी पर बैठकर चल दिये।

घडी की ओर देखा, साढे बारह बज चुके हैं। अब बगैर देर किये दफ्तर से घर की ओर रवाना हो गया।

दूसरे दिन दफ्तर आने मे थोडी रात हो गयी। फाटक के अन्दर जाते न जाते वनमाली के केबिन के सामने लावण्य से मुलाकात हो गयी। मुझ पर नज़र पडते ही बोला, "बच्चू बाबू, आप कहाँ थे। लोगो ने टेलीफोन किया था पर आप मिले नही।"

मैंने पूछा, "किसने फोन किया था जो मैं मिला नही ?"

"नृपेन दत्त नामक किसी व्यक्ति ने। किसी आश्रम के सेक्रेटरी वगैरह हैं। समाचार-पत्र के दफ्तर मे टेलीफोन आने की कोई सीमा नही रहती, यही वज़ह है कि लावण्य ने अत्यन्त उदासीनता के साथ मुझे टेलीफोन के बारे मे सूचना दी।

अपने कमरे मे गया तो तारा दा ने भी टेलीफोन की सूचना दी। बोले, "श्री निकेतन रामकृष्ण सदन के सेक्रेटरी मिस्टर दत्त ने तुम्हें

बहुत-बहुत धन्यवाद दिया है और आज ही आने का बार-बार अनुरोध किया है।"

सुनकर मैंने अनसुना कर दिया। टलीफोन से निमत्रण पाकर आश्रम जाऊँ और कुछ लोगो का भावोन्माद देखूं, इसके लिए मैंने जरा भी कौतूहल का अनुभव नही किया। मगर कुछ दिनो के बाद मुझे उस आश्रम मे जाना ही पडा। कॉलिज स्ट्रीट के मोड पर अचानक नृपेन दत्त से मुलाकात हो गयी और मैं उनके जैसे बुजुग आदमी के आश्रम जाने के अनुरोध को ठुकरा नही सका। पहले हालाकि समझ नही सका था, मगर बाद मे समझ मे आया कि आश्रम जाकर अच्छा ही किया वरना पारुलबाला से परिचित कैसे होता और कैसे इस बात का पता चलता कि भगवान तथाकथित भले आदमी की अपेक्षा वार-वनिता के प्रति अधिक उदार है ?

मिस्टर ए० के० रॉय ने बैरिस्टरो मे लाखो रुपया कमाया। अँग्रज़ो की औरस मेमसाहब के गभ से जन्म न लेने के बावजूद बैरिस्टर रॉय को एक तरह से अँग्रेज ही कहा जायेगा। बडी लडकी सुकन्या को ऑक्सफाड से बी० ए० तक पढाने के बाद स्वदेश आते ही उसकी शादी एक आई० सी० एस० के साथ कर दी। बडे लडके अशोक को यथासमय लगभग तीन हज़ार रुपये की मर्केनटाइल एक्सक्यूटिव की नौकरी मिल गयी। छोटा लडका असीम ग्रेस इन से बैरिस्टरी पास कर स्वदेश लौटा। उसके बाद सर सुविनय सरकार की लडकी से अशोक की शादी हुई। पूरे फिरपो को किराये पर लेकर कलकत्ता हाइकोट के नामी बैरिस्टर मिस्टर रॉय ने लगभग डेढ हज़ार आदमियो को दावत पर बुलाया। बगाल के लाट साहब के अलावा मेयर, शरीफ, चोफ जस्टिस तथा कलकत्ते के सभी यशाकाक्षी लोग इस दावत मे शरीक हुए थे। दिल्ली से वाइसराय ने शुभ कामना भेजी थी। व्हिस्की का गिलास

होठो से लगाने के समय उपस्थित डेढ हजार अतिथियो ने मिस्टर एण्ड मिसेज अशोक राँय की अशेष आयु और अटूट दांपत्य सुख को कामना प्रकट की।

राँय परिवार सुख की दुनिया मे जेट हवाई जहाज की तरह अबाध गति से मँडराने लगा। दो साल तक जूनियर रहने के बाद, असीम कई दिन पहले कल्याणी सेन की हत्या के मामले मे हाई कोर्ट के फुल-बेंच के सामने जिरह कर कर्नल विश्वास को हत्या के अपराध मे बेक्सूर साबित कर उसे बरी कराकर ले आया था। बार मे हलचल मच गयी। लोगो ने कहना शुरू किया बाप का बेटा और सिपाही का घोडा ऐसा तो होना ही था। असीम की इस कामयाबी पर राँय विला मे स्पेशल फेमिली डिनर का आयोजन हुआ। सुकन्या ने अपने छोटे भाई की उँगली मे हड्रेड प्वाइन्ट्स की हीरे की अगूठी पहना दी।

अप्रैल में लडका-लडकी-दामाद दार्जलिंग गये। शाम के बाद लॉन मे बैठे मिस्टर राँय 'शालक होम्स' के नशे मे इतने मशगूल हो गये कि चाय ही पीना भूल गये। बाद मे उनका नशा तब दूर हुआ जब मुस्तफा ने हाथ में फोन थामे कहा, "साहब दार्जलिंग से ट्रक कॉल "

दार्जलिंग का नाम सुनते ही मिस्टर राँय ने बायें हाथ से रिसीवर थाम लिया "हैलो येस ए० के० राँय स्पीकिंग "

ऑपरेटर ने कहा, "कॉल फ्रॉम दार्जलिंग, स्पीक आन।"

ऑपरेटर के 'स्पीक ऑन' कहने से क्या होगा, सुकन्या ने अपने पिता को जो समाचार दिया, उसे सुनकर मिस्टर राँय के मुँह से कोई शब्द नही निकल सका। 'ह्वाट' कहकर मिस्टर राँय चीख उठे और फिर बेहोश हो गये।

कालीफारा फॉरेस्ट बंगले के पास जीप-दुर्घटना मे अशोक और उसकी पत्नी की मौत हो जाने से मिस्टर राँय की जिन्दगी विपरीत दिशा की ओर मुड गयी। रैनकिन का सूट त्यागकर गेरुआ वस्त्र धारण कर लिया और गृहस्थी से नाता तोडकर श्री निकेतन रामकृष्ण सदन

का निर्माण किया। पूर्व जन्म के सचित पापो का प्रायश्चित्त करने लगे, दुख से पीडित मनुष्यो की सेवा करके। रोगियो को दवा-दारू देकर, आश्रयहीनो को आश्रय देकर और भूखो को अन्न देकर। अठारह साल से हाईकोट के रिटायड जज नृपेन दत्त, प्रोग्रेसिव इश्योरेन्स के भूतपूर्व चेयरमैन विमल मजूमदार, भूतपूर्व माइनिग इजीनियर सुबोध बैनर्जी, इतिहासकार शभुनाथ हालदार तथा और भी बहुत सारे लोग श्री निकेतन की देख रेख कर रहे हैं। इन लोगो ने जिन्दगी-भर का जमा-जत्था लगाकर श्री निकेतन को एक आदश सेवा-सस्था मे बदल दिया है। परम पुरुष रामकृष्ण को सामने रखकर ये लोग लवे अरसे से मनुष्य की सेवा करते आ रहे हैं। अठारह वर्ष पहले राई चरण घोष के टूटे दो मजिलें भवन के एक छोट से कमरे मे जिस श्री निकेतन का जन्म हुआ था वह आज बीते दिनो की कहानी है। पूरे दो मजिले मकान के सात कमरे मे भी आश्रम चलाना मुश्किल हो गया। सेवा-विभाग की आउटडोर डिसपेंसरी और प्रसूति-विभाग के लिए ही चार-चार कमरे हैं मगर आज उनसे भी काम नही चल रहा।

एक लवे अरसे तक श्री निकेतन जैसी सेवा-सस्था राई चरण के भवन मे रहने के बाद आश्रम को दूसरी जगह ले जाने का दबाव इसलिए पडने लगा कि कही सपत्ति उनके लडको के हाथ से निकल न जाये। जायदाद के लालच मे राई चरण के लडको ने उन्हे तग कर मारा। कोई उपाय न दखकर राई चरण राय बाबू के पास रोने लगे। राई चरण के पारिवारिक जीवन की शान्ति मे खलल न डालने के खयाल से आश्रम के कार्यकर्त्ताओ ने तीन महीने के अन्दर ही आश्रम दूसरी जगह ले जाने का वादा किया। तीन महीने तक दौड धूप करने के बावजूद श्री निकेतन के लायक मकान किराये पर नही मिला। प्रतिज्ञाबद्ध आश्रम के निर्देशकों के दल ने आँख मे आँसू लिये दरवाजे पर नोटिस चिपका दिया परसो (सोमवार) से सदन बन्द हो जायेगा। शनिवार की रात से ही रविवार-सोमवार तक लॉरी से सदन की

जायदाद विभिन्न स्थानो मे हटाने का इन्तज़ाम हो गया।

रविवार के सवेरे भी आश्रम की प्रार्थना-सभा हुई। सबकी निगाह से बचकर एक महिला प्रार्थना-घर के दरवाजे पर आकर खडी हुई। प्रार्थना के अन्त मे आश्रम के निर्देशको की जमात ने कोठरी से बाहर जाने के समय देखा, एक वृद्ध महिला तसर की लाल किनारी की साडी पहने चौखट पर माथा टेक देवता को प्रणाम कर रही हैं। कुछ मिनटो के बाद महिला आँखो मे आँसू लिये उठकर खडी हो गया।

इसके बाद की कहानी भौतिकवादी जगत के लिए विश्वास करना कठिन है। बीसवी शताब्दी के जडवादी जगत के प्राणी होने के नाते शुरू मे मैंने भी इसे ढोग समझा था। लेकिन बाद मे जब कागज-पत्तर और दस्तावेज़ देखे तो विश्वास करना हा पडा। चकित मन और विस्फारित नेत्रो से मुझे विश्वास करना ही पडा कि कलकत्ते की खानदानी कुलीन प्रतिभाशालिनी बाईजी पारुलबाला देवी को शनिवार की रात के अन्तिम पहर आदेश मिला कि वह श्री निकेतन रामकृष्ण सदन की रक्षा करे। रविवार की सुबह वह राधा माधव लेन के तीन मज़िले भवन का दान-लेख और पच्चीस हज़ार रुपये का चेक लेकर आश्रम मे उपस्थित हुई थी। शुरू मे रॉय बाबू, नृपेन दत्त, हाल्दार बाबू और बैनर्जी बाबू ने पारुलबाला का अप्रत्याशित दान स्वीकार करना नही चाहा था, लेकिन पारुलबाला की आखो के आँसू और दयनीय आवेदन के कारण उन्हें एक चेहरे पर हँसी लेकर पराजय स्वीकार करनी पडी थी।

पारुलबाला के नये भवन के आश्रम मे देवता की तसवीर के सामने खडे होकर बैरिस्टर ए० के० रॉय ने आखो मे आँसू भरकर मुझसे कहा था, "देखो भैया, इस दाढी वाले जिस भोलानाथ को तुम देख रहे हो, वे साक्षात् ईश्वर हैं। निराश्रय को आश्रय देने से प्रसन्न होते हैं। हम लोगो के प्रसूति सदन मे असहाय-सबलहीन गर्भवती नारिया को निर्विघ्न सतान पैदा होती है तो इस मूर्ति के चेहरे पर हँसी खेल जाती है।"

दत्त साहब को बहुत अनुरोध करने के बाद मुझे एक बार पारुल-वाला के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लेकिन जाने के पहले मुझे वायदा करना पड़ा था कि अखबार में कुछ नहीं छापूंगा। केवड़ातल्ला के एक तीन मंजिले भवन की दूसरी माला के एक कमरे में पारुलवाला से साक्षात्कार करने का अवसर प्राप्त हुआ था। शुरू में अवाक होकर मैंने उनकी ओर देखा। उस मातृ स्वरूपा महान् नारी को देखकर मैं मुग्ध हो गया। बहुत कोशिश करने के बावजूद मैं सोच नहीं सका कि वे बाईजी है, कल्पना नहीं कर सका कि वह लालसा-कामना की प्रतिमूर्त्ति हैं। मन ने चाहा कि प्रणाम करूँ, मगर सस्कार ने रोक लिया।

पारुलवाला ने मुझसे कहा था, "देखो भैया, तुम मेरी सन्तान के समान हो। सन्तान के सामने कुछ छिपाकर नहीं रखना चाहिए। यह जान लो कि इस शरीर पर अनगिन लोगों के लोहू का नशा चरिताथ हुआ है। बहुत सारे लोगों के अनगिनत पापों का बीज मेरे शरीर के अग-अग में सोया हुआ है। मेरे अ,दर महानता नामक कोई चीज नहीं। उम्र के गुनाह के कारण किसी दिन रूप और जवानी की खरीद फरोख्त की थी मगर जान-बूझ कर कभी कोई अन्याय नहीं किया है।

जीभ से होंठो को तर कर और चेहरे से निगाह परे हटाकर बाहर की तरफ देखा। बोली, "सामर्थ्य-भर मैंने इस बात की कोशिश की है कि आदमी को पाप के रास्ते से लौटाकर सही रास्ते पर ले आऊँ। खुद जुल्म बरदाश्त कर, जोर-जबरन लायी गया नयी लड़कियों को पतितालय के अँधेरे गन्दे जगत् से दूर हटाया है। इसके अलावा कुछ कहने को मेरे पास नहीं है, बेटा।" आखिर में एक लबी साँस लेकर बोली, "सारा समाज हालांकि मुझसे नफरत करता है, फिर भी मुझे लगता है, देवता ने मुझे सेवा का अधिकार दिया है ।'

कमरे की खिड़की से मैंने देखा, केवड़ातल्ला के मसान में आग की लपटें लहक रही हैं और कितने ही लोगों की लाशें पचतत्त्व में विलीन होती जा रही हैं। लगा, नौ महीना दस दिन मातृगभ में वास करने के

बाद केवडातल्ला जैसे मसान से वैतरणी पार होने के पहले कितने दिनो तक हम इस पाथशाला मे टिके रहेंगे ! सूरज की रोशनी मे हम आँख खोलकर चलते हैं, फिर भी देख नही पाते। हो सकता है, देखकर भी हम भविष्य के इगित को अनदेखा कर जाते हैं। मानो स्वेच्छा से आँख बन्द किये हम सभी अधे की भूमिका मे अभिनय कर रहे है। पल-भर के लिए मुझमे श्मशान का वैराग्य जगा। लगा, बीते दिनो की वार-वनिता पारुलवाला ने मेरा अधापन दूर कर दिया है, मेरी दृष्टि वापस कर दी है। खुशियो से मेरा मन नाच उठा, बहुत दूर, समुद्र तट से क्षण-भर के लिए मुझे भविष्य का सकेत मिला। अँधेरे से मुक्ति मिली, नये जीवन की तृप्ति मिली।

अपने आपको मैंने कुछ लहमो के लिए खो दिया था। देखा, पारुल-वाला दो थाली मिठाई-फल और दो गिलास पानी ले आयी हैं। दत्त साहब की ओर एक थाली बढाती हुई बोली, "देवरजी, लो खाओ।" मुझसे सस्नेह कहा, "लो बेटा, थोडी-सी मिठाई खाओ।"

मिठाई खाकर वहा से चलने के पहले दत्त साहब ने अपनी पारुल भाभी को प्रणाम किया। सस्कार को परे ठेलकर मैंने भी रूपा जीवा पारुलवाला को प्रणाम किया। वे बोली, "छि छि, मुझे प्रणाम क्यो किया, बेटा ?" स्नेह के साथ अपने पास खीचकर उन्होने मेरे माथे को चूम लिया। सीढिया उतरते हुए लगा, ललाट पर मा के द्वारा लगाया गया जयटीका लेकर मैं ससार पर जय प्राप्त करने बाहर निकला हूँ।

श्रद्धा-भक्ति विश्वास रहने से असभव भी सभव हो जाता है, रिपो-र्टरी करने के कार्य-काल मे उसका प्रमाण कई वर्ष बाद मिला था। एक फीचर लिखकर दस रुपया कमाने के लोभ से मैंने कलकत्ता और शहर के समीपवर्ती तरह-तरह के सेवा प्रतिष्ठानो मे चक्कर लगा चुका हूँ। छह सात सस्थाओ पर फीचर लिखने के बाद एक अग्रजतुल्य सवाद-

दाता के परामर्श पर मैं बैरेकपुर ट्रक रोड किनारे स्थित एक अद्वितीय अस्पताल गया था।

बस्ती मे वास करने वाला महरी का लडका बस्ती के प्रसूतिघर की बदतर हालत देखकर अपनी किशोरावस्था मे विचलित हो उठा था। बाद मे उसकी माँ ने उससे कहा था, "बेटा, अगर किसी दिन तुझसे बन पडे तो इन अभागिन औरतो को माँ बनने का सुयोग प्रदान करना।' विधवा महरी के लडके ने किसी तरह मैट्रिक की परीक्षा पास की और टेलिप्राफिस्ट की नौकरी मे भर्ती हो गया। लेकिन नौकरी के जीवन मे एक नया लक्षण दिखायी पडा, उस पर मिरगी रोग का आक्रमण हुआ। गरीबी और रोग से आक्रान्त रहने के बावजूद वह अपनी माँ की आज्ञा का पालन करने को सचेष्ट हो गया।

लम्बे अरसे तक साधना और चेष्टा मे तत्पर रहकर विधवा महरी के उस लडके ने धीरे-धीरे एक विशाल आधुनिक अस्पताल का निर्माण किया। अस्पताल के एक एकान्त कमरे मे उस साधक से मेरी मुलाकात हुई थी। उसने मेरे और मेरे फोटोग्राफर के हाथ मे मुट्ठी भर चनाचूर रखते हुए कहा था, "छुटपन मे खाना नसीब नही होता था, बहुत दिनो तक अधेले का चनाचूर खाकर रहना पडा है, यही वजह है कि आज भी बिना चनाचूर खाये रह नही पाता हूँ।" और भी ढेर सारी बातें बतायी थी। कहा था, "अस्पताल के काम मे लग जाने के बाद मेरी मिरगी की बीमारी अपने आप दूर हो गई। छुटपन मे अभाव के कारण एक वक्त खाना खाता था, आज भी एक ही वक्त खाता हूँ, लेकिन रात-दिन कठिन परिश्रम करने के बावजूद मुझे कोई तकलीफ महसूस नही होती।'

बूढे ने हम लोगो से कहा, "सच्ची इच्छा रहे तो कोई बाधा, बाधा जैसी नही लगती।' टूटी आलमारी के ऊपर रखी रामकृष्ण की एक मामूली फोटो को दिखाते हुए कहा, "मैं तो मात्र निमित्त हूँ। कल कब्जा वही चलाते हैं।"

मन ही मन सोचा, कल-कब्जा अगर ऊपर वाला न चलाये तो महरी का लडका कैसे इतना वडा अस्पताल बनवाता ? इसका मिरगी का रोग बगैर इलाज कराये कैसे ठीक हो जाता ?

ढाई साल तक काम करने के बाद पन्द्रह रुपया तनख्वाह पाकर मैंने 'दैनिक सवाद' के इतिहास मे जैसे नये अध्याय की सृष्टि की। सेलेक्शन ग्रेड की तनख्वाह पाने के बावजूद वनमाली का माहवार बकाया चुका नही पाता हूँ, पान की दूकान का भी आठ आना-एक रुपया बाकी रह जाता है। किसी जाने-पहचाने पर नजर न पडने पर ट्राम के पिछले डिब्बे मे कूद कर चढ जाता हूँ लेकिन ज्यादातर वक्त ऐसा भी नही हो पाता। बीच-बीच मे ट्राम कपनी पर बेहद गुस्सा आता था। सोचता, रेलवे कपनी की तरह ट्राम मे भी तीसरा दर्जा होता तो मुझ जैसे निर्धन, मझले तबके के आदमी का कितना उपकार होता! शुरू मे हवाई जहाज मे एक ही दर्जा था। मगर हवाई जहाज़ के पदाधिकारियो को ज़माने की हवा लग गयी, दुनिया के लोगो के जीवन-स्तर मे सुधार लाने का उन्होने बीडा उठा लिया। यही वजह है कि हवाई जहाज मे भी दो दर्जे चालू हो गये—फर्स्ट क्लास और टूरिस्ट क्लास। जिस तबके के लोग हवाई-जहाज़ कपनियाँ चलाते हैं, उन्ही के सगे-सबधी कलकत्ता ट्राम कपनी की देखरेख करते हैं मगर वे जमाने की हवा की परवाह किये बगैर पुराने नियम के अनुसार दो ही दर्जों को चलाये जा रहे हैं। रिपोर्टर बनने के पहले एक जोडा धोती और दो शर्ट से ही काम चल जाता था, लेकिन अब बहुत कठिनाई का सामना करना पडता है। तरह-तरह के तबके के लोगो के बीच आने-जाने के लिए हर रोज़ करीने से सज-धज कर बाहर निकलना ज़रूरी है मगर यह मेरी सामर्थ्य के बाहर की बात है। पिछली दुर्गा-पूजा के समय हाथी बगान मोड पर ढाई रुपये मे एक जोडा चप्पल खरीदी थी। उसकी स्वाभाविक आयु बहुत पहले

समाप्त हो चुकी है, लेकिन उन्हें छोड नही सका हूँ। हर रोज बाहर निकलने के पहले मुहल्ले के मोची को एक आना घूस देकर उनकी आयु एक दिन के लिए बढवा लेता हूँ। अपने लिए मुझे कोई दुख नही होता। दुख होता है तो भाभी के लिए। बचपन मे नीम तल्ला मे सिर्फ माँ को ही नही खोया है बल्कि उसके साथ ही खो दिया है घर का आकर्षण और नारी के स्नेह का कोमल स्पर्श। बहुत दिनो के बाद भाभी मेरे जीवन मे वही अमृत कलश ले आयी है। और चूंकि उसे कुछ दे नही पाता हूँ इसलिए मन को ठेस लगती है। एक और व्यक्ति के लिए कुछ न कर पाने की वजह से मन बहुत उदास हो जाया करता था। हृदय का ऐश्वर्य बहुत पहले ही दे चुका था, लेकिन भाभी को बहन को और भी बहुत कुछ देने की व्यग्रता मन ही मन महसूस करता था।

व्यक्तिगत जीवन मे सख्याहीन निराशा से पीडित रहने और लगातार आहे भरते रहने पर भी थकने का नाम नही लेता था। 'दैनिक सवाद' मे हालाकि रिपोटर था लेकिन नौकरी करने के दशन का अनुभव नही होता था। चीफ रिपोटर, न्यूज एडिटर या खुद एडिटर भी कभी न तो मुझे अपमानित करते थे न ही मेरे जैसे सहकर्मियो को। अखबार के कर्मचारियो को बडे बाबू आँख नही दिखाते, साहब भी अपमानजनक व्यवहार नही करते और न मालिक ही अश्लील राय जाहिर करते हैं। समाचार-पत्र ही एक मात्र ऐसे उद्योग-धधे का प्रतिष्ठान है जहा लोगो के बीच मालिक-नौकर का रिश्ता नही रहता। मैनेजर के कमरे के अन्दर जाने के लिए स्लिप नही भेजना पडता है, सपादक से मिलने में हिचकिचाहट का अनुभव नही होता, न्यूज एडिटर के सामने हाथ जोडकर आँखें झुकाये नही रहना पडता है। इतना जरूर था कि हमारे दफ्तर मे एक अजीब तरह का माहौल था। एडिटर की तुलना मे न्यूज एडिटर और न्यूज एडिटर की तुलना मे चीफ रिपोटरो के हाथ मे ही अधिक क्षमता थी। और उस चीफ रिपोर्टर के कैबिनेट का मैं एक मिनिस्टर था। ठीक से इनस्टॉलमेंट वेतन न दे पाने की वजह से हरिसाधन दा ही

मुजरिम के कठघरे मे हर रात हम लोगो के न्यायालय मे खडे होते थे। बहुत शोर-शराबा मचाने के बाद हम आखिरकार आठ आना एक रुपया कर्ज लेकर ही सपादक को रिहा करते थे। नौकरी करने के बावजूद हम नौकर नही थे, यह सोचकर मन ही मन हम अपार आनन्द और आत्म-तृप्ति का अनुभव करते थे।

इसके अलावा बाहरी जिन्दगी मे समाज के हर तबके और हर तरह के आदमी के निकट आने पर मैं आनद के महासागर मे डुबकियाँ लगाता था। नारकेलडगा के रेलवे क्वाटर मे मैंने पहले-पहल सूरज की रोशनी देखी थी। उस दिन हमारे परिवार के मुट्ठी-भर लोगो के अलावा और कोई मुझे पहचानता नही था और न ही प्यार करता था। मगर आज ? आज परिवार के सीमित घेरे के बाहर अधिक लोगो से जान-पहचान है, ज्यादा से ज्यादा लोग मुझे प्यार करते हैं। देखते-देखते बहुत दिन बीत गये। लबे अरसे तक मिलने-जुलने के कारण आज बहुतो से जान-पहचान और दोस्ती हो गयी है।

समाचार-सग्रह की लालसा और हर रोज नयी जान-पहचान के लोभ मे रिपोर्टरो को अनगिनत मुहल्लो का चक्कर काटना पडता है। कलकत्ते के रिपोटरो के विस्तृत विचरण क्षेत्रो मे से सबसे प्रमुख तीर्थ-क्षेत्र है राइटस बिल्डिग्स—बगाल सरकार का प्रमुख कर्मस्थान। वास्तव मे राइटर्स बिल्डिग्स कलकत्ते के रिपोटरो के यौवन का उपवन और प्रौढावस्था की वाराणसी है। इस तीर्थस्थान की मैं नियमित तौर पर परिक्रमा करने जाता हूँ—समाचार की खोज और जान पहचान के लोभ मे। रिपोटरो मे जो लोग जीनियस हैं वे चीफ मिनिस्टर के कमरे के सामने प्रेस-एनक्लोजर मे बैठकर दुनिया-भर की समस्याओ का समा-धान ढूढते हैं। बहुत कुछ दातव्य चिकित्सालय की तरह। यानी मिक्सचर तैयार ही रहता है। राइटस बिल्डिग्स के प्रेस एनक्लोजर मे भी तमाम समस्याओ का रेडिमेड समाधान अकृपणता के साथ वितरित किया जाता है। मैं लघु पत्रिका का पद्रह रुपया पानेवाला रिपोटर था, इसलिए ~

तरह के रोग की महौषधि के वितरण का अधिकार मुझे नही था। इसके अलावा अखबार का रिपोटर होकर कैन्टवरी के आर्च बिशप की तरह उपदेश-वितरण का मुझमे कोई आग्रह भी नही था।

जेब मे एक छोटा-सा नोट बुक और पेंसिल लिए मैं एक कैनवेसर तरह चक्कर काटता रहता था। जिस गाहक से थोडी-बहुत खबर पाने की उम्मीद रहती, उसी के पास बैठ जाता। इसी तरह मैं हर रोज लक्ष्मी की पूजा करता था। इस दैनिक काय-पद्धति की कृपा से मैं मन्त्रियो से राजनीति के सबध मे चर्चा परिचर्चा करता, उनके प्राइवेट सेक्रेटरिया के साथ अड्डेबाजी करता और अदली-चपरासियो के साथ हार्दिक सपक स्थापित करता था। लम्बे अरसे के बाद पीछे मुडकर देखता हूँ तो पता चलता है कि राइटर्स बिल्डिंग्स मे अनगिनत लोग मेरे मित्र हो गये हैं। इसी प्रकार का एक मित्र था हरिदास—एक मन्त्री महोदय का सिक्युरिटी अफसर।

मन्त्री से घनिष्ठता रहने के कारण हरिदास मुझे भैया ही कहता था। कमरे के अन्दर जाते ही चाय का आडर देता। बोल-चाल और तौर-तरीके से हरिदास बिलकुल भला आदमी था और यही वजह है कि मैं भी उसे पसन्द करता था। एक दिन बातचीत के दौरान मैंने उससे पूछा, "हरिदास, तुम पुलिस के आदमी हो, अच्छा यह तो बताओ कि घूस वूस लेते हो?"

हरिदास खुलकर हँस पडा, उसके बाद चेहरे पर हँसी लिए कहा, "बच्चू दा, आपने अच्छा सवाल किया है!"

मिनिस्टर साहब के सेक्रेटरी, पसनल असिस्टेंट आदि ने कलम नीचे रखकर हरिदास की ओर देखा। स्टेनोग्राफर बाबू बोले, "सही बात बताइए।'

हरिदास की मुसकराहट गायब हो गयी। उसके बाद कहा, "एक ही बार उन दिनो मैं यहा नही था। एक दूसरे आदमी के साथ था। तीसरे पहर 'राइटस' से रवाना होकर साहब बगले की देहरी पर कदम

रखने जा ही रहा था कि जोरों की एक चिल्लाहट सुनायी पडी। पीछे मुडकर देखूं कि तभी साहब की गाडी अन्दर आ रुकी। झपटता हुआ आया और दरवाजा खोल दिया। गाडी से उतरते हुए साहब ने कहा, "हरिदास, बाहर जाकर देखो कि माजरा क्या है।"

तेज कदमो से चलता हुआ बाहर आया। देखा, सडक पर बरगद के पेड के नीचे दो आदमी आपस मे उलझे हुए है। मैं दौडता हुआ गया और दोनो के हाथ कसकर पकड लिये।

धोती और आधी बाह का कुरता पहना हुआ एक व्यक्ति बोला, "देखिये साहब, यह कितना बडा धूर्त है! मैं सडक से जा रहा था, अचानक सामने आकर पूछा, लाल पान का एक्का या ईंट का साहब? मैं सकते मे आ गया। कुछ भी जवाब न देने के बावजूद इस आदमी ने कहा क्या कहा? लाल पान का एक्का? मैं अचकचा कर देखने लगा। इस पर यह आदमी चिल्ला उठा यह देखिये, ईंट का साहब। आप हार गये, रुपया निकालिये। मेरे आश्चय का भाव दूर हो कि इसके पहले ही जोर-जबरन पूरे महीने का वेतन मेरी जेब से निकाल लिया।"

हरिदास ने कहा, "जानते है बच्चूदा, उस आदमी ने मेरे पेरो को कसकर पकड लिया और कहा, जान बचाइये बायीं पॉकेट मे हाथ डालते ही आपको मेरा एक सौ बावनवे रुपया मिलेगा। वास्तव मे उस आदमी की जेब मे एक सौ बावनबे रुपया ही मिला। बात अच्छी तरह समझ मे आ गयी कि प्लेन एण्ड सिम्पल छीना झपटी का मामला है।

"बहरहाल दोनो को अपने साथ ले बगले पर आया और साहब को घटना के बारे मे बताया। उसके बाद साहब के कथनानुसार उन लोगों को अपने साथ ले कोतवाली पहुँचा। कोतवाली जाकर जसे ही कोतवाल के कमरे के अदर कदम रखा, लगा, छीना-झपटी करने वाला आदमी कोतवाल को देखकर मुसकरा रहा है। मुसकराहट का अर्थ ठीक-ठाक समझ मे नही आया मगर मन मे सन्देह पैदा हुआ। यह जानकर कि मैं सिक्युरिटी में हूँ कोतवाल साहब ने मेरी भरपूर खातिरदारी की। उसके

बाद जब सुना कि खुद साहब ने मुझे थाने भेजा है तो कोतवाल साहब और ज्यादा खातिरदारी करने लगे। मेरी आपत्ति की परवाह किये बगैर कोतवाल साहब ने चाय-बिस्कुट मँगाया। आखिर में एफ० आइ० आर० लिखकर कोतवाल साहब ने नफरत के साथ कहा, इन बदमाशों के चलते तो मैं परेशान हो गया हूँ।"

हरिदास ने चाय के गिलास से घूट लिया। प्राइवेट सेक्रेटरी स्टेनो बाबू और मेरी आखें आपस मे टकरायी।

हरिदास ने फिर कहना शुरू किया।

"दूसरे दिन साढे ग्यारह-बारह बजे कचहरी गया। कोर्ट इस्पेक्टर, उनके सहकर्मी और कोतवाल साहब ने आदर के साथ मुझे बिठाया। मैं सिगरेट नही पीता, फिर भी पीनी पडी, पेट भरा रहने के बावजूद एक अदद फिश कटलेट खाना पडा। कटलेट खाते समय ही लगा, थाने के कोतवाल साहब ने कोर्ट इस्पेक्टर को कुछ इशारा किया। कोर्ट-इस्पेक्टर ने अपने एक सहकर्मी की ओर देखकर आँख दबायी।

"कटलेट खाने के बाद चाय पीना शुरू कर दिया। उसके बाद सिगरेट सुलगाकर मुश्किल से एक कश लिया ही होगा कि कोर्ट इस्पेक्टर के एक सहकर्मी ने कलकत्ते की गुडागर्दी, छीना-झपटी और आनुषगिक विषयो पर एक भाषण दिया।

"कुछ मत कहिये भाई साहब ! इन लागो को कट्रोल करना जब स्वय शिव के बूते के बाहर की बात है तो फिर हम लोग क्या कर सकते हैं ? इन लोगो ने ऐसा जाल बिछा लिया है कि एक तरफ से इन्हें रोक कर रखें तो दूसरी ओर से बाहर निकल आयेंगे।"

"मैं चूकि बडे साहब का आदमी था इसलिए कोर्ट इस्पेक्टर के शागिर्द ने भी मक्खन लगाना शुरू कर दिया जानते हैं सर, इन बानरो को जेल भिजवाने मे भी कोई फायदा नही अगार शत धौतने मलिनत्व न जायन्ति।"

कोर्ट इंस्पेक्टर के सुयोग्य शिष्य इसी तरह और कुछ देर तक

नेवकर झाडते रह। मेराग ने अन्त में बताया कि मुजरिम की तकदीर का फैसला हरिदास पर ही निर्भर करता है। शुरू में हरिदास की समझ में बात नहीं आयी, वह अवाक होकर ताकता रहा उसकी ओर। उसके बाद प्याज के छिलके उतारने की तरह पूरा प्लान समझाया।

"सर इस अभागे का जेल मिजवान में भी इसे कोई सीख नहीं मिलेगी, हमलोगों का भी कोई फायदा नहीं होगा। आप सर, अगर अनुमति दें तो आपको भी कुछ हासिल हो और हम लोगों का भी

हरिदास ने गंभीर स्वर में कहा, "क्या होगा ?'

थूक निगलते हुए सवाल का जवाब दिया, "आप ही तो असली आदमी हैं, इसलिए आपको डेढ़ सौ मिलेगा, हम सबको बीस-बीस और पेशकार बाबू को दस—कुल मिलाकर दो सौ।

हरिदास ने अब बेवकूफ की तरह सवाल नहीं किया। इसमें बनावा वक्त भी काफी हो चुका था, कोर्ट-इंस्पेक्टर के कमरे में बैठना भी अब अच्छा नहीं लग रहा था। कहा, "ठीक है, जो कुछ करना है जल्दी कीजिये।

अपराध किया है इसलिए पच्चीस रुपया फाइन किया जाता है।"

बूढे पेशकार ने बगुला भगत की तरह धागे से बंधे ऐनक की फाँक से मुजरिम को हुजूर का आदेश समझा दिया।

हरिदास ने सब कुछ देखा। सोचते-सोचते हरिदास कोट-इंस्पेक्टर के कमरे मे आया। तुरन्त रिहा हुए मुजरिम ने श्रद्धा और विनय के साथ हमारे हरिदास को प्रणाम किया। कोट-इंस्पेक्टर के शागिद ने हरिदास के हाथ मे उसकी दक्षिणा थमा दी। अब हरिदास बगर वक्त बर्बाद किये कोट बिल्डिंग से निकल कर सडक पर चला आया। एकाएक लगा कि कोई उसे पुकार रहा है। पीछे की ओर मुडते ही करबद्ध मुजरिम पर आखें गयी।

"आपसे परिचित होकर बेहद खुशी हुई। तब हाँ, एक बात जानते हैं सर? थाने के बडे बाबू, कोट बाबू और आप लोगो मे से बहुत से आदमी मुझे बेहद प्यार करते हैं। इसलिए सर, मेरे कहने का मकसद है कि आप 'डेली बेसिस' पर चाहते है या मन्थली बेसिस पर? मैं जबान का पक्का हूँ सर, इसलिए मेरे कहने का मतलब है कि 'डोल' लेने से हर रोज़ तीन रुपया और मन्थली होने से एक सौ आप क्या चाहते है?"

हरिदास खामोशी ओढे खडा रहा। मानो वह भौंचक हो गया हो। जवाब देने लायक उसकी हालत न थी।

'ठीक है सर, पहली तारीख को ही मैं सब पेमेन्ट करता हूँ, अच्छा ही हुआ। पहली तारीख को तीसरे पहर चार बजे के बाद उस आम के पेड के नीचे एक हरदिया लिफाफे मे आपकी दक्षिणा रहेगी।"

बचपन मे जिस तरह मन लगाकर भूत-प्रेत की कहानी सुनता था, उसी तरह हम लाग हरिदास की रिश्वत लेने की कहानी सुनते रहे। स्टेनोग्राफर बाबू ने कहा, "अच्छा, हर महीने "

हरिदास ने मेरी ओर मुडकर कहा, "यकीन कीजिये बन्धूदा, वे

लोग जो कहते हैं, वही करते है। दो साल तक हर महीने की पहली तारीख को हरदिया लिफाफे में एक सौ रुपया मिलता रहा।"

हाथ मे कोई खास काम न रहे तो दिमाग मे तरह-तरह की बातें और चिन्ता आती रहती है। व्यतीत और अनागत के बारे मे सोचना रहता हूँ। बीच बीच मे व्यतीत से वर्तमान की तुलना करता हूँ। सोचता हूँ, रिपोर्टर होने के पहले परिवार के मुट्ठी-भर लोगो के अलावा मुझे कौन पहचानता था ? कोई नही। लेकिन आज चालीस लाख की आबादी की कलकत्ता महानगरी मे कम-से-कम कई हजार लोगो से परिचित हूँ। भले ही हर जगह नही, लेकिन बहुत से स्थानों में लोग चेहरे पर हँसी लिये, मेरी प्रतीक्षा करते रहते हैं। सुख-दुख, भले-बुरे में कितने ही लोगों के बीच खड़ा होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। [illegible] के आदमी निकट ही नही आये हैं, उनमे से अनेक तो परम आत्मीय भी बन गये हैं।

बीच-बीच मे कलकत्ते के बाहर जाना है [illegible] जाने का वक्त नही निकाल पाता, हालांकि अलका [illegible] से मिलने को [illegible] व्याकुल हो उठता है। अलका मेरी [illegible] बहन नहीं है- [illegible] बात पर किसी को यकीन नहीं होता। [illegible] अलका हमारी सगी बहन नहीं है। [illegible] के बाद, [illegible] अलका से मिलने गया था। [illegible] पर उतरने के बाद अलका [illegible] सत्कार किया, सोचने पर [illegible] है। [illegible] मे आजकल जब भी [illegible] है, [illegible] है कि भागकर अलका [illegible] उसके सेवा-जतन का [illegible] मुन्ना के साथ खेलूँ।

दिन लाल बाजार पुलिस हेड क्वार्टस मे श्यामल के कमरे मे मेरी उससे पहले-पहल जान-पहचान और बातचीत हुई थी।

मैं रिपोर्टर हूँ, श्यामल पुलिस अफसर। कोई समानता न रहने के बावजूद पहले हम लोगो में जान-पहचान हुई और उसके बाद हम मित्रता के बंधन मे बंध गये। राइटस मे काम खत्म करने के बाद दफ्तर लौटने की हडबडी न रहती तो मैं श्यामल से मिलने लाल बाजार चला जाता था। आम तौर से पुलिस अफसरो को पसन्द न करने पर भी मैं श्यामल को यथेष्ट श्रद्धा की दृष्टि से देखता था। इतना भला आदमी पुलिस मे मिलना तो दूर की बात, प्रोफेसरो के बीच भी कठिनाई से मिलता है। यही वजह है कि वक्त मिलते ही या तो श्यामल के दफ्तर मे पहुँच जाता या फिर उसके घर पर चला जाता था।

श्यामल माथा झुकाये किसी मुकद्दमे का इतिहास या रिपोर्ट लिख रहा था। मैं एक प्याली चाय पीता हुआ अखबार का पन्ना उलट रहा था। एक कान्स्टेबुल ने आकर कहा, "साब, एक औरत आपसे मिलने आयी है।"

रिपोर्ट लिखते-लिखते श्यामल ने कहा, "अन्दर भेज दो।" दो या ढाई साल के एक छोटे खूबसूरत बच्चे का हाथ थामे बीस-बाईस साल की एक युवती ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया। अखबार पढते-पढते मैंने आँख उठायी और एक बार सरसरी निगाह से देख लिया। बडा ही अच्छा लगा। भले ही बेजोड खूबसूरत न हो फिर भी खूबसूरत जैसी ही लगी। रंग चाहे दूध मे मिले महावर जैसा न हो मगर खुलता हुआ श्याम वर्ण अवश्य है। भौंहे बहुत सुन्दर नहीं, लेकिन आँखें बडी-बडी है। लम्बी नाक के ऊपर चौडे ललाट पर सिन्दूर का एक बडा-सा टीका देखने मे बेहद अच्छा लग रहा था। पहरावा था सफेद करघे की साडी और लखनऊ के चिकन का सफेद ब्लाउज। अंग-सज्जा की बहुलता दीख नहीं पडी, दोनो हाथो मे मात्र दो कंगन नजर आये। युवती मुसकराती हुई, बच्चे का हाथ सँभाले श्यामल की मेज के सामने आकर खडी हो गयी।

श्यामल ने सोचा था, मुकद्दमे की पैरवी करने कोई औरत आयी है। बगैर सिर उठाये थोड़ी बहुत हिकारत के साथ पूछा, "क्या चाहिए ?"

"तुम्हारी जरूरत है , युवती ने दबी हँसी के साथ उत्तर दिया।

श्यामल हड़बड़ा कर उछल पड़ा। "अरे तू ! मैंने सोचा था ?

"चोर-डाकू होगा, यही न भैया ?"

"मत कह, दुनिया के तमाम लोग जिन्हे नफरत की निगाह से देखते है, जिनसे डरते है, उन्ही लोगो के बीच हमे रात-दिन बिताना पड़ता है।" श्यामल ने खेद के साथ कहा। उसके बाद वह बोला, "सीधे यहाँ चली आयी है, घर नही गयी ?" अब देर किये बगैर श्यामल ने बच्चे को अपनी गोद मे उठा लिया।

"गयी थी।" साड़ी के पल्लू को उसने अपनी देह के चारो ओर अच्छी तरह लपेट लिया।" मैं सुबह की गाड़ी से आयी हूँ। तुम्हे वहाँ न पाकर लाल बाजार आ रही थी मगर माँ, बाबू जी और छोटी बहन सुशान्त ने आने नही दिया। भरपूर हिलसा मछली खाकर दोपहर-भर बूढा-बूढी के साथ अड्डेबाजी करती रही। उसके बाद सुशान्त की नयी गृहस्थी की कहानी सुनकर अभी आ रही हूँ।"

प्रसन्नता से श्यामल का चेहरा आईने के शीशे की तरह चमकने लगा। बच्चे के सिर और चेहरे को सहलाते हुए बोला, "अच्छा किया। इसके अलावा सुशान्त की शादी के बाद उससे तेरी यह पहली मुलाक़ात है न ?"

"हां।'

इसके बाद श्यामल आंधी की रफ्तार से सवाल पर सवाल करने लगा। रमेश के दाँत का दर्द अच्छा हो गया ? मामू तो दुबला जैसा दीख रहा है ! तेरा रंग और कितना काला होगा ? रमेश छुट्टी लेकर कब आ रहा है ? वगैरह-वगैरह।

युवती ने एक एक कर हर सवाल का जवाब दिया। बातचीत से समझ गया कि युवती श्यामल की बहन है। इतनी देर के बाद श्यामल

को ध्यान आया कि मैं भी उसकी बगल मे बैठा हूँ।

"अरे अलका, तुझसे परिचय कराना भूल गया था। यह है मेरा मित्र बच्चू, तेरा एक दूसरा भैया।"

एक हाथ से आचल सँभाल और दूसरा हाथ आगे बढाकर अलका मुझे प्रणाम करने को उद्यत हुई। किसी तरह उसका हाथ कसकर पकड लिया और अपना बचाव किया। लेकिन उसके मतव्य से अपना बचाव नही कर सका।

अलका बाली, "श्रद्धा-ज्ञापन के अधिकार से मुझे वचित कर आपको कौन-सा लाभ होगा ?"

मैं बोला, 'श्रद्धा पाने के जिस अधिकार का अपने गुण से अर्जित नही किया है, उस श्रद्धा का क्या स्वीकार करूँ ?"

अलका ने पूछा, "भैया, बच्चूदा क्या वकील हैं ?"

"नही, रिपोटर।

आख और भौहा का नचाकर अलका ने कहा, "बाबा रे! आपको ता डबल प्रणाम करना चाहिए।'

दो-चार मिनटो तक इसी प्रकार की बातचीत चलती रही। उसके बाद अलका ने कहा, "पिछली बार की तरह इस बार भी तिलक लगवा कर भाग आओगे, यह नही होगा। सारा दिन गुजार कर दूसरे दिन लौटना पडेगा।' जरा अभिमान भरे स्वर मे बोली, "ऐसा न करोगे तो फिर तकलीफ उठाकर उतनी दूर जाने की जरूरत ही क्या ?'

श्यामल मुसकरा दिया। कहा, "दिन जैसे-जैसे बीतते जा रहे हैं, तू वैसे-वैसे झगडालू होती जा रही है। भाई दूज मे भोजन ही अगर असली चीज रहता ता इसका नाम होता भोजन दूज भाई दूज त्योहार के अवसर पर तू तिलक लगायगी, मेरे पेर पर माथा टेकेगी, मिठाई की थाली आगे बढाकर एक अदद गिनले की थाती थमा देगी '

"यह सब फालतू बात रहने दो भैया। मुझे वचन दो कि तुम दिन-भर रहागे।"

"छुट्टी मिली तो अवश्य रहूँगा।"

लगा, अलका बेहद गुस्से मे आ गयी है। बोली, "अपने काम को क्षति पहुँचा कर आना बेकार है।"

अलका के मन के ईशान कोण मे श्यामल को अभिमान मिश्रित क्रोध के काले काले बादलो के टुकडे दिखायी पडे। श्यामल ने अपराधी की तरह कहा, "दफ्तर मे झगडा मत कर। जबान देता हूँ कि दिन-भर ठहरूँगा।" श्यामल ने एक बार मेरी ओर देखा और फिर कहा, 'अरे अलका, मुझे तो तूने निमत्रित किया, लेकिन बच्चू को नही। और इस पर तुर्रा यह कि हाथ बढाकर खुशी से प्रणाम कर रही थी।'

अलका का जो चेहरा खुशियो से दमक रहा था, वही शम से लाल हो गया। उसके बाद उसने इस तरह निमत्रित किया कि मैं अस्वीकार नही कर सका।

श्यामल और मैंने नीचे उतर कर अलका और मामू को टैक्सी मे बिठा दिया। कुछ दिन बाद ही भाई दूज के दिन सबेरे-सबेरे हम दोनो एक साथ अलका के घर श्रीरामपुर गये थे। श्यामल आशीर्वादी के रूप मे अलका के लिए कीमती साडी-ब्लाउज और मुन्ना के लिए सार्टिन के सूट के अतिरिक्त ढेर सारी मिठाई ले गया था। ट्यूशन का वेतन पेशगी लेकर मैं भी अलका के लिए एक साडी ओर मुन्ना के लिए खिलौना ले गया था। तिलक लगवाकर हमने भरपूर खाना खाया, रात मे 'उदयन मे नाइट शो सिनेमा देखा। इसके अलावा अलका से हमे खासी अच्छी दक्षिणा भी प्राप्त हुई। यही नही, रात के वक्त गाने बजाने की मजलिस भी जमी। श्यामल हार्मोनियम लेकर बैठ गया। रमेश तबला बजाने लगा और अलका ने गीत गाया—'जीवन जखन शुकाये जाय, करुणाधाराय एशो," जे छाडबे, आमि तोमाय छाडब ना मा' तथा और भी ढेर सारे गीत। रात दो या ढाई बजे 'ताश के देश' के 'लाल पान ईंट' से गीत की समाप्ति हुई।

मैंने कहा, "अलका, बहुत-बहुत धन्यवाद और कग्रेचुलेशन्स। तुम

तो बहुत अच्छा गाती हो।

रमेश ने फुफका" छोडी, "वच्चू दा, मेरे तवले की कोई करामात नही

"नही-नही, करामात क्यो नही, तुमने बहुत ही अच्छा वजाया। हमेशा वजाते हो ?"

हमे पता न चले इस अन्दाज से अलका को चिकोटी काटते हुए रमेश बोला "हमेशा न वजाऊँ ना कैसे चलेगा ? एक तो खूबसूरत स्त्री, उस पर सुशिक्षिता और सुगायिका से शादी की है, इसलिए थोडी बहुत मुसाहवी और तावेदारी करते रहना पडता है।

मैंने कहा, "नो कमेन्ट।"

श्यामल ने कहा, "उफ् रमेश, अलका को क्या चिढा रहे हो ?"

अलका ने कहा, 'यही उसका काम है।'

उतनी रात मे लेटने पर भी मुझे नींद नही आ रही थी। खिड़की की वगल के हरसिंगार के पेड की फाक मे मैं शुक्ला तृतीया का आकाश देख रहा था और अलका वगरह के बारे मे सोच रहा था कि कैसे मैं इस परिवार से घुल-मिल गया, ऐसे इन लोगो के सुख दुख का सहभागी हो गया। एकाएक ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरी जिन्दगी एक पहाडी नदी है, जिसके उद्गम का पता चल सकता है, मगर उसकी गति और पथ का पता लगाना मुश्किल है। पर्वत की उच्चतम चोटी से निकलकर पहाडी नदी पहाड के चढाव उतार को पारकर दिक्हारा नशेबाज की तरह जीवन की गति ले पहाड और तलहटी के गिर्द चक्कर काटती है। किसी भी तरह के बधन को न मानने वाली वही पहाडी नदी एक विचित्र शिला के सामने आकर ठिठक जाती है और फिर मुडकर बहने लगती है। आज रात लेटे-लेटे मुझे लगा, मेरा जीवन भी पहाडी नदी की भाति अनगिनत अज्ञात पथो से चक्कर काटता हुआ अचानक शिला के समान अलका को अपने पास पाकर ठमक कर खडा हो गया है। अतीत और भविष्य का बारीक विवेचन किये विना मैं अलका, उसके पति रमेश और उसके बच्चे से प्रेम करने लगा।

स्टेशन आये थे। ट्रेन पर चढने के पहले अलका और रमेश ने हमे प्रणाम किया और दोनो ने बार-बार आने के लिए साग्रह अनुरोध किया।

हावडा स्टेशन पर उतरकर श्यामल ने पूछा, "बच्चू, अलका तुम्हे कैसी लगी ?'

"बहुत ही अच्छी।"

"हाँ, अलका सचमुच बहुत ही अच्छी लडकी है।" श्यामल ने मेरी आँख बचाकर एक लबी सास ली। "रमेश बडा ही अच्छा लडका है।'

मैंने कहा, "तुम्हारी तकदीर इतनी अच्छी न होती तो अलका जसी बहन और रमेश जैसा बहनोई पाना मुश्किल था।' बात करते हुए हम स्टेशन के बाहर आ गये है। हम दोनो अलग-अलग बसो से विदा होते कि इसके पहले ही मैंने श्यामल से पूछा, "अच्छा, अलका तुम्हारी किस प्रकार की बहन है'

"किस प्रकार की क्या ? वह मेरी बहन है और मैं उसका भाई हूँ।"

उस दिन और कुछ बातचीत नही हुई, हावडा स्टेशन से हम दोनो दो तरफ चल दिये।

काफी दिनो के बाद श्यामल ने एक दिन अलका के बीते जीवन की कहानी सुनाकर मुझे हैरत मे डाल दिया था।

लगभग तीन साल पहले की कहानी है। श्यामल उन दिनो बड-तल्ला के थाने का सेकेण्ड आफिसर था। नाइट ड्यूटी मे बैठे-बैठे समरसेट मॉम का 'रेजस ऐज' रात दो बजे तक तकरीबन खत्म कर चुका था। कलाईघडी की ओर देखा, चार बजकर दस मिनट हो रहे हैं। दिसम्बर का आधा महीना समाप्त हो चुका है। ओवरकोट को अच्छी तरह बदन पर रखकर मुडकर बैठ गया और दो-चार पृष्ठ ही पढे होगे कि टेलीफोन घनघना उठा।

अलस्सुबह के सरूर मे जब कल [illegible] हरे [illegible]
उस वक्त तीन-चार कास्टेबुल लेक[illegible]

टॉप गियर मे तीव्र गति से गाडी चलाता हुआ सोनागाछी के मोड पर पहुँचा। अनुभवी ड्राइवर ने हेड लाइट जलाकर मोड के आरत-मर्दों का चकाचौंध मे डाल दिया। ब्रेक लेते ही श्यामल और कास्टेबुल नीचे उतर पड।

चारो तरफ गौर से देखें कि इसके पहले ही एक खूबसूरत युवती ने आकर श्यामल को कसकर पकड लिया। युवती की साडी जमीन पर लोट रही थी, आँखो मे अज्ञात विभीषिका की छाया हिल-डुल रही थी। एक ही साँस मे युवती दसियो बार बोल गयी, "भैया मुझे बचाइए। वे लोग मुझे जान से मार डालेगे, मेरी जान बचाइए।"

श्यामल ने बिना कुछ कहे युवती को बूढे कास्टेबुल दुबे के सुपुर्द कर दिया और खुद उसके सामने बढ आया। कास्टेबुल दुबे के बाहुओ मे जकडी युवती ने एक बूढे, एक नौजवान और एक प्रौढा महिला को दिखाते हुए कहा, "ये तीनो आदमी मुझे जान से मार डालेगे।" बगैर कुछ कहे श्यामल इन तीनो व्यक्ति को लॉरी मे बिठाकर थाने चला आया।

थाने मे वापस आ हाथ का बैटन और टोपी रखकर बोला, "लडकी को अलग रखो और इन तीनो को एक साथ।

श्यामल अपनी कुरसी पर चुपचाप बैठ गया। रात डयूटी के बाद डेरे पर आराम करेगा, ऐसा तो हुआ नही, बल्कि नया झमेला खडा हो गया। पुलिस की नौकरी मे इस तरह का झमेला खडा होना लगभग रोजमर्रा की घटना है, इसलिए ऊब आने पर भी उसे जाहिर नही होने दिया। एक प्याली चाय पीकर कास्टेबुल से कहा, "लडकी को यहाँ भेज दो।"

भयभीत, सन्त्रस्त, आतंकित युवती धीरे धीरे कदम रखती हुई श्यामल की मेज के सामने आकर खडी हो गयी। साडी का आँचल खीच, माथा झुकाकर पूछा, "आपने मुझे बुलाया है?"

"हा।"

भोर की धुँधली रोशनी मे श्यामल युवती को अच्छी तरह देख नही सका था, अब उसे अच्छी तरह देखा। युवती बडी खूबसूरत लगी। श्यामल शायद विभोर होकर देख रहा था। लडकी ने दुबारा सवाल किया, "मुझसे कुछ कहना है ?"

"नही, सुनना है। इस घटना के बारे मे आपका बयान सुनना चाहता हूँ।" श्यामल ने सिर झुकाकर कहा।

"तो सुनिये।"

श्यामल ने देखा, युवती की आँखो से आँसू के दो कतरे टपक पडे। आवाज मे भी भारीपन आ गया। मगर उसने स्वय को सयत कर लिया। " मेरा नाम अलका है। मेरे पिता राय बहादुर केशव चन्द्र सान्याल भागलपुर के सबसे नामी वकील हैं। घण्टाघर से बगाली टोला रास्ते के नुक्कड पर दाहिनी ओर हमारा आलीशान मकान है। मैं अपने बाप की बडी लडकी हूँ, मेरा छोटा भाई अबकी आइ० एस-सी० का इम्तिहान देगा। मोक्षदा गर्ल्स स्कूल की छात्रा की हैसियत से मेरी ख्याति फैली हुई थी। कभी मै थर्ड नही हुई, हमेशा फर्स्ट या सेकेण्ड ही होती आया हूँ। मेट्रिक फर्स्ट डिवीजन मे पास किया। इटरमीडिएट की परीक्षा देने के समय मुझे निमोनिया हो गया और तकरीबन एक महीने तक बिस्तर पर लेटे रहना पडा। इसलिए पहले जैसा रिजल्ट नही हो पाया। मैंने सेकेण्ड डिवीजन म पास किया। फिलॉसफी मे आनर्स लेकर मैंने पिछले साल बी० ए० पास किया है।

"क्लास की सहेलियो के अतिरिक्त बाहरी दुनिया से मेरा कोई लगाव नही था और न ही इसकी कोई जरूरत थी। जिन दिनो बगाल के नाग शान्ति निकेतन को अच्छी निगाह से नही देखते थे, उन्ही दिनो मेरी मा शान्ति निकेतन मे पढती थी। रवीन्द्र नाथ के चरणो तले बैठकर माँ ने रवीन्द्र सगीत की तालीम ली थी। रवीन्द्र नाथ की उपस्थिति मे 'परिशोध' और 'चण्डालिका' मे अभिनय कर नाम कमाया था। बाबू जी शाम के वक्त चेम्बर मे मुवक्किलो के साथ व्यस्त रहते थे और माँ

आँगन लेकर वैठती थी। बचपन मे थोडी समझ आते ही माँ को अकसर अकेले घण्टो तक गीत गाते हुए पाती थी। साथ-साथ मैंने भी रवीन्द्र सगीत गाना सीख लिया। मा आँर्गन बजाती और मैं गीत गाती। जब मैं सात साल की थी उस समय बगाली टोला की दुर्गापूजा के अवसर पर पडाल मे 'तोमारि गेहे पान्छिो स्नेहे तुमि धन्य-धन्य हे' गीत गाया और मुझे कमिश्नर्स पदक प्राप्त हुआ।

"बाद मे मैं इसी गीत को गाने मुगेर, जमालपुर, पटना, साहबगज के अलावा बहुत-सी जगह गयी। हर बार मेरी मा मुझे अपने साथ ले जाती थी और मेरा छोटा भाई बोधिसत्त्व तबला या खोल बजाता था। यही वजह है कि बाहर निकलने के बावजूद बाहरी दुनिया से मेरा परिचय-सपक नही हो पाया। होने को जरूरत भी न थी।

"अपनी छोटी-सी गृहस्थी मे हम मजे से दिन गुजार रहे थे। चाचाजी स्कूल-कॉलेज की पढाई की देख-रेख करते, माँ सगीत सिखाती। रविवार का पूरा वक्त बाबूजी हम लोगो के साथ बिताते और इस वजह से मुझे ढेर सारी कविता और किताबें पढनी पडती थी। बाबू जी अत्याधुनिक नही थे, वे क्लासिक जैसी चीजें ज्यादा पसन्द करते थे। बाबू जी बचपन मे मुझे शेक्सपीयर, बायरन, ह्विटमेन, होमर, थैरे, ऑस्कर वाइल्ड तथा बहुत सारे कवियो के छोटे-छोटे कोटेशन जबानी याद कराते थे। किसी-किसी दिन विद्यापति का 'तातल सैकत वारि बिन्दु सम' या कृत्तिवास का 'कुले शीते ठाकुराले ब्रह्मचर्य गुणे' याद कराते थे। किसी-किसी दिन 'मैमन सिंह गीतिका या ईश्वर गुप्त की कई पक्तियाँ पढकर सुनाते थे।"

अलका की कहानी सुनते सुनते श्यामल विभोर हो गया। थाने मे वैठकर इस तरह का बयान सुनने का अभ्यस्त नही था, इसलिए अनजाने ही निलज्ज की तरह एकटक अलका के चेहरे की ओर निहार रहा था। विवेक ने चुपके से श्यामल के कान मे कहा—अलका बेगुनाह है, पाप इसका स्पश न करे। श्यामल के हृदय में अलका के प्रति स्नेह उमड

आया। मन ही मन वह इस निश्चय पर पहुँचा कि इसे जिन्दा रखना होगा।

अलका ने जमीन की ओर ताकते हुए एक लम्बी उसाँस ली और चुपके से आखो के आँसू पोछ लिये।

"यकीन कीजिये भैया, उम्र बढने पर भी मैंने कभी उत्तेजना या उन्माद का अनुभव नही किया। सपने मे भी कभी सोचा नही था कि मेरे कारण मेरे मा-बाबू जी को आसू बहाना होगा। नियति पर विश्वास नही करती थी, मगर आज देखती हूँ, नियति ने मेरा अहकार चूर चूर कर दिया।'

अलका एक मिनट के लिए खामोश हो गयी, उसके बाद बोली, "हर बार की तरह इस बार भी दुर्गा पूजा के अवसर पर मुगेर, अपने ननिहाल गयी थी। बहुतेरे सगे सबन्धिया से घर भरा था, इसलिए नवमी को रात थियेटर के बाद जहाँ जिसको सुविधा हुई लेट गया। मेरा ध्यान इस पर नही गया था कि मेरी बगल मे मेरे मझले मामा के साले रथीन बाबू सोये हैं। गहरी नीद मे बीच बीच मे ऐसा महसूस होता कि किसी का हाथ मेरे बदन से टकरा रहा है। नीद मे ही एक-दो बार हाथ हटा दिया, और करवट लेकर सो गयी। ऐसा लगा जैसे घर का ही कोई आदमी मेरी बगल मे लेटा है। इसके अलावा एक ही कमरे मे इतने-सारे आदमी अगल बगल लेटे हो तो ऐसा होना सभव है। उसके बाद एकाएक मेरी नीद टूट गयी। भय और आतक से मैं चिल्लाने जा रही थी मगर रथीन बाबू मेरा मुह दबाये हुए थे। कान मे फुसफुसाकर कहने लगे, अलका, सबको मालूम हो जायेगा, सर्वनाश हो जायेगा, चिल्लाओ नही।

अलका ने बुझे चेहरे से श्यामल की ओर देखा। होठो को काटते हुई बोली, जानते है भैया, उस रात मेरी आखो से लगातार आसू की धार बहती रही। रथीन बाबू सबेरे ही उठकर सूटकेस हाथ मे ले साहबगज चले गये थे। जाने के पहले कुछ मिनटो तक मेरे सामने सिर झुकाये

खडे रहे और बोले, अलका, हो सके तो मुझे क्षमा कर देना। इसके अलावा यह भी कहा था जिन्दगी मे कभी और किसी लडकी का स्पर्श नही करूँगा—यही मेरी प्रतिज्ञा है। मेरी जबान से एक भी शब्द बाहर नही आया। मैं खामोश रही। सोच रही थी अपने और रथीन बाबू के बारे मे। सगे-सबधियो के बीच रथीन बाबू सुशिक्षित और चरित्रवान व्यक्ति के रूप मे जाने जाते थे। इसके पहले मैंने यह नही सोचा था कि वे बुरे होगे। आज भी ऐसा नही मानती। मगर इतना तो जरूर सोचती हूँ कि उन्होने मेरा सर्वनाश क्यो किया ?'

बहरहाल, अलका गर्भवती हो गयी। मा-बाप के सिर पर जैसे बिजली आकर गिर पडी। राय बहादुर ने बीमारी का बहाना बनाकर कचहरी जाना बन्द कर दिया। माँ का गाना-बजाना बन्द हो गया, आँगन पर धूल की परते जम गयी। लगभग दो महीना इसी तरह गुजरने के बाद अचानक अलका के फूफा एक दिन भागलपुर उन लोगो के घर पर आये। प्रौढ बहनोई को अपने निकट पाकर वे अलका के सर्वनाश की कहानी उनसे कह गये। फूफा जी ने समस्या को छू मतर मे उडा दिया। बोले, "अरे, इसके लिए फिक्र करने की कौन-सी बात है ? मैं कलकत्ता ले जाकर सब सही रास्ते पर ला दूँगा। तब हाँ, कलकत्ते के डॉक्टरो की माँग अधिक हुआ करती है। दो-तीन हजार रुपये पर पानी फिर जायेगा।

दो दिन बाद आधी रात मे फूफा जी और अलका को अपर इण्डिया एक्सप्रेस के एक कूपे मे कलकत्ते के लिए बिठा दिया। बगाली टोले के सभी लोगो को इतना ही मालूम हुआ कि अलका शादी के सिलसिले मे बुआ के घर कलकत्ता गयी है।

ट्रेन मे फूफा जी ने अलका को अपने पास बिठाकर काफी कुछ सान्त्वना दी—भय की कोई बात नही, वे सब कुछ सही रास्ते पर ला देंगे। अलका का मन मे थोडा-बहुत बल मिला। दूसरे ही क्षण उसने सोचा, मातृत्व के अधिकार से नारी का जीवन गौरवान्वित होता है

लेकिन मैं स्वेच्छा से उसे विसर्जित करने जा रही हूँ। मैं सन्तान की हत्या करने जा रही हूँ। चलती रेलगाडी के झटके के साथ अलका के मन मे भी अगणित सवाल उमडने-घुमडने लगे। रात ढलती रही, तिन पहाड स्टेशन मे चायवाला आखिरी हाँक लगाकर चला गया। ट्रेन फिर चलने लगी। बैठे-बैठे अलका की पलकें झपकने लगी।

अपर इण्डिया एक्सप्रेस दोपहर के पहले ही स्यालदह पहुँच गयी। फूफा जी अलका के साथ होटल मे टिके। अलका ने एक बार पूछा था, "यहाँ डॉक्टर कहाँ है?" फूफा जी ने कहा था, "यहाँ कुछ भी नही होगा। शाम के बाद तुम्हे ऐसी जगह ले जाऊँगा जहा लडकियाँ हैं। वही डॉक्टर आयेगा।"

शाम होते न होते फूफा जी के साथ अलका बहुत से उपन्यासो की बहुत सारी नायिकाओ की स्मृति से सश्लिष्ट घोडा गाडी पर सवार हुई। कितनी ही गली और सडकें पार कर घोडा गाडी एक ऐसे धुंधलके से से भरे बदबूदार मुहल्ले के अन्दर पहुँची जिसके बारे मे अलका को पता नही था कि यह कोई गन्दा मुहल्ला है।

खिडकी बन्द रहने के बावजूद अलका के कानो मे औरत-मर्दों के ठहाके, गीत की धुन और बीच बीच मे सबको दबोचकर मुखर होती हुई एक अजीब तरह की चिल्लाहट आ रही थी। ठीक ठीक समझ मे न आने पर भी अलका को बेचैनी का अहसास होने लगा। आसन्न भविष्य की आशका से उसका मन आतकित हो उठा।

अलका की जिन्दगी के लकाकाण्ड का वर्णन करते हुए श्यामल ने कहा, "आदमी की नीचता देखते-देखते मन आदमी के प्रति घृणा से भर गया है। बाप के हमउम्र फूफा जी ने मकान-मालकिन से एक कमरे के लिए अनुरोध किया। बडे शिकार के लालच मे मकान-मालकिन ने एक ही बात मे अनुरोध स्वीकार कर लिया। लेकिन आये हुए ढेर सारे गाहको से फूफा जी की लडाई ठन गयी। आखिर मे मकान-मालकिन अलका को तीसरे माले मे अपने कमरे मे ले गयी। सामयिक तौर पर

स्वस्ति मिलने पर भी अलका को शान्ति नही मिली। गहरी रात मे दबे पावो चुपचाप छत से छलाग लगाकर खुदकशी करने की कोशिश करने पर अलका को कामयाबी हासिल नही हुई। मकान-मालकिन ने पीछे से आचल खीचकर हाथ के परिन्दे को जगल मे जाने से रोक लिया। मकान-मालकिन शिकार के मामले मे माहिर थी, वह जानती थी कि नया शिकार फँसा हो तो उस पर निगरानी रखनी चाहिए।

अलका जैसी नयी लडकी के मुहल्ले मे आने से दोस्त-दुश्मनो की जमात मे खलबली मच गयी। सोनागाछी के एक छोर से दूसरे छोर तक घर-घर यह खबर फैल गयी। दुश्मनो की जमात इस तीन मजिले पर कडी निगाह रख रही थी। रात के आखिरी पहर मे अलका ने सोचा, ठड के कारण सभी नीद मे डूबे पडे है। सोचा, इस मौके से लाभ उठाकर वह इस जघन्य कारागार से बाहर निकल कर अपनी नियति की परीक्षा करेगी, लेकिन उसकी यह कोशिश भी कारगार साबित नही हुई। मकान-मालकिन जब दल-बल के साथ अलका को घसीट कर ले जा रही थी, उसी समय बडतल्ला थाने का टेलीफोन घनघना उठा।

अलका के जीवन की कहानी सुनकर श्यामल भौचक-सा बैठा हुआ था। जीवन के सफर के फिसलन-भरे रास्ते पर अलका जो औंधे मुँह गिर पडी उसके लिए जिम्मेदार कौन है ? श्यामल को जवाब नही मिला, लेकिन मन ही मन उसने महसूस किया कि अलका पाप के गड्ढे मे गिर तो पडी थी मगर पाप उसका स्पर्श नही कर सका है।

अलका को लाकर मा की हिफाजत मे रखा। मौका मिलने पर माँ-बाप को अलका को कहानी सुनाया। श्यामल ने अविलब राय बहादुर को जरूरी तार भेजा—कम शार्प। वृद्ध राय बहादुर दूसरे ही दिन सपत्नीक श्यामल के घर आ पहुँचे। बाद की कहानी लबी नही, लेकिन बेहद खुशी की है। श्यामल के माँ-बाप की कोशिश से राय बहादुर ने

अलका जैसे अपने आप मे डूब गयी थी। बोली, "फालतू नही है, बच्चू दा। मेरी सारी बात सुनें, तो हो सकता है, आप मेरे घर मे कदम न रखें।"

झिडकी-भरे स्वर मे मैंने कहा, "उफ् अलका !"

इसके बाद मुझे कुछ कहने का मौका दिये बगैर अलका ने धडल्ले से अपनी जीवन-कहानी कहना शुरू कर दिया। कहानी के बीच मे ही मैंने जबरन रोक दिया। अलका को अपने निकट खीचकर लाड करते हुए कहा, "अलका, मैं अखबार का रिपोर्टर हूँ। बीते दिनो की अपेक्षा वर्तमान और भविष्य के प्रति ही अधिक आग्रहशील रहता हूँ, जरूरत भी इसी की पडती है। व्यतीत मे तुमने कहाँ एक रात बितायी या नही बितायी है, उससे मेरा कुछ बनता-बिगडता नही। अतीत भले ही असत्य न हो मगर वह छाया मात्र है। जिस अलका सान्याल के बारे मे तुम कह रही हो, वह छाया मात्र है। आज की अलका राय का यही परिचय है कि उसके दो पिता और दो माताएँ है, बोधिसत्व के अतिरिक्त उसके दो भाई हैं और सबसे बडी बात है कि आदर्शवादी रमेश उसका पति है। यही नही, आज तुम मा हो, तुम सन्तान की जननी हो, तुम सबके लिए श्रद्धा की पात्री हो।"

चाँदनी मे मैंने साफ साफ देखा, अलका के चेहरे पर हँसी तैर रही है। लगा, उसके कपोल पर दो रेखाएँ दमक रही है। समझ गया, आँखो के आँसू सूख गये हैं। आसू के स्पर्श से अलका का चेहरा और भी सुन्दर दीखने लगा। लगा, कितने ही युग-युगान्तर से अलका और मैं भाई-बहन बनकर इस धरती पर आते रहे है और यहा से विदा होते रहे हैं। अनन्त काल के प्रेम के हम दोनो बन्दी हैं। याद नही, हम दोनो कब तक बैठे रहे। लेकिन, इतना याद है कि अलका ने बहुत देर बाद कहा था, "भैया की उदारता पाकर मैं धन्य हूँ।"

श्रीरामपुर मैं बीच-बीच मे जाता था, लेकिन रमेश जब बहरमपुर चला गया तो सिर्फ एक बार ही जा सका। आज दूर रहने पर भी

रमेश से अलका की शादी तय कर दी। रिपन होस्टल मे रहकर रमेश जब बी० एस-सी० पढ रहा था, उसके माँ-बाप, भाई बहन नोआखाली के दगे मे मारे गये थे। अलका के बारे मे सब कुछ जानने के बाद भी नये जमाने का रमेश उससे शादी करने को तैयार हो गया।

माघ महीने के शुभ दिन मे श्यामल के घर पर तीन महीने की गभवती अलका से रमेश की शादी हो गयी। अब देखने से पता नही चलेगा कि अलका श्यामल की बहन नही है। जमाई-षष्ठी के अवसर पर रमेश के लिए भागलपुर जाकर निमत्रण की रक्षा करना सभव नही हो पाता है, श्यामल के माँ-बाप ही इस जिम्मेदारी का निभाते हैं।

मुन्ना के अन्नप्राशन पर राय बहादुर को आने की इच्छा नही थी लेकिन श्यामल के पिता का अनुरोध ठुकरा नही सके। भागलपुर जाने के पहले श्यामल के पिता के हाथो को थामकर राय बहादुर ने कहा था, "प्रोफेसर, पिछले जन्म मे तुम निश्चय ही मेरे जुडवाँ भाई थे और श्यामल मेरी सन्तान। मैं अपनी लडकी खोने जा रहा था, लेकिन भगवान ने इसके बदले मुझे भाई दिया, लडका दिया और रमेश जैसा रतन दिया।"

महान् सकट के दौर से गुजरने के बाद भी अलका को श्यामल की उदारता के कारण जीवन का समस्त ऐश्वर्य प्राप्त हो गया था। एक आवश्यक लेबर मीटिंग की कार्यवाही का सवाद लेने कुछ दिनो के बाद मैं श्रीरामपुर गया तो अलका के घर पर भी गया। कलकत्ता लौटने की अनुमति न मिलने पर मीटिंग के बाद टेलीफोन से दफ्तर सूचना भेज दी और अलका के घर पर रात के वक्त ठहर गया। रमेश जल्दी ही सो गया था, बरामदे पर चादनी मे बैठकर मैं और अलका बहुत देर तक गपशप करते रहे। काफी कुछ बातचीत के बाद, अलका ने एकाएक कहा, "बीच-बीच मे लगता है, छल-छलावे से आपका प्रेम प्राप्त किया है। लगता है, मैंने अन्याय किया है।"

"अचानक यह सब फालतू बात तुम्हारे मन मे क्यो आयी?"

अलका जैसे अपने आप मे डूब गयी थी। बोली, "फालतू नही है, बच्चू दा। मेरी सारी बात सुनें, तो हो सकता है, आप मेरे घर मे कदम न रखें।"

झिडकी-भरे स्वर मे मैंने कहा, "उफ् अलका!"

इसके बाद मुझे कुछ कहने का मौका दिये बगैर अलका ने धडल्ले से अपनी जीवन-कहानी कहना शुरू कर दिया। कहानी के बीच मे ही मैंने जबरन रोक दिया। अलका को अपने निकट खीचकर लाड करते हुए कहा, "अलका, मैं अखबार का रिपोटर हूँ। बीते दिनो की अपेक्षा वर्तमान और भविष्य के प्रति ही अधिक आग्रहशील रहता हूँ, जरूरत भी इसी की पडती है। व्यतीत मे तुमने कहा एक रात बितायी या नही बितायी है, उससे मेरा कुछ बनता-विगडता नही। अतीत भले ही असत्य न हो मगर वह छाया मात्र है। जिस अलका सान्याल के बारे मे तुम कह रही हो, वह छाया मात्र है। आज की अलका राय का यही परिचय है कि उसके दो पिता और दो माताएँ हैं, बोधिसत्व के अतिरिक्त उसके दो भाई हैं और सबसे बडी बात है कि आदशवादी रमेश उसका पति है। यही नही, आज तुम मा हो, तुम सन्तान की जननी हो, तुम सबके लिए श्रद्धा की पात्री हो।"

चादनी मे मैंने साफ साफ देखा, अलका के चेहरे पर हँसी तैर रही है। लगा, उसके कपोल पर दो रेखाएँ दमक रही हैं। समझ गया, आखो के आसू सूख गये हैं। आँसू के स्पश से अलका का चेहरा और भी सुन्दर दीखने लगा। लगा, कितने ही युग-युगान्तर से अलका और मैं भाई-बहन बनकर इस धरती पर आते रहे है और यहाँ से विदा होते रहे हैं। अनन्त काल के प्रेम के हम दोनो बन्दी हैं। याद नही, हम दोनो कब तक बैठे रहे। लेकिन, इतना याद है कि अलका ने बहुत देर बाद कहा था, "भैया की उदारता पाकर मैं धन्य हूँ।"

श्रीरामपुर मैं बीच-बीच मे जाता था, लेकिन रमेश जब बहरमपुर चला गया तो सिफ एक बार ही जा सका। आज दूर रहने पर भी

रमेश से अलका की शादी तय कर दी । रिपन होस्टल मे रहकर रमेश जब बी० एस-सी० पढ रहा था, उसके माँ-बाप, भाई-बहन नोआखाली के दगे मे मारे गये थे । अलका के बारे मे सब कुछ जानने के बाद भी नये जमाने का रमेश उससे शादी करने को तैयार हो गया ।

माघ महीने के शुभ दिन मे श्यामल के घर पर तीन महीने की गर्भवती अलका से रमेश की शादी हो गयी । अब देखने से पता नही चलेगा कि अलका श्यामल की बहन नही है । जमाई-षष्ठी के अवसर पर रमेश के लिए भागलपुर जाकर निमत्रण की रक्षा करना सभव नही हो पाता है, श्यामल के माँ-बाप ही इस जिम्मेदारी को निभाते हैं ।

मुना के अन्नप्राशन पर राय बहादुर को आने की इच्छा नही थी लेकिन श्यामल के पिता का अनुरोध ठुकरा नही सके । भागलपुर जाने के पहले श्यामल के पिता के हाथो को थामकर राय बहादुर ने कहा था, "प्रोफेसर, पिछले जन्म मे तुम निश्चय ही मेरे जुडवाँ भाई थे और श्यामल मेरी सन्तान । मैं अपनी लडकी खोने जा रहा था, लेकिन भगवान ने इसके बदले मुझे भाई दिया, लडका दिया और रमेश जैसा रतन दिया ।"

महान् सकट के दौर से गुजरने के बाद भी अलका को श्यामल की उदारता के कारण जीवन का समस्त ऐश्वर्य प्राप्त हो गया था । एक आवश्यक लेबर मीटिंग की कार्यवाही का सवाद लेने कुछ दिनो के बाद मैं श्रीरामपुर गया तो अलका के घर पर भी गया । कलकत्ता लौटने की अनुमति न मिलने पर मीटिंग के बाद टेलीफोन से दफ्तर सूचना भेज दी और अलका के घर पर रात के वक्त ठहर गया । रमेश जल्दी ही सो गया था, बरामदे पर चादनी मे बैठकर मैं और अलका बहुत देर तक गपशप करते रहे । काफी कुछ बातचीत के बाद, अलका ने एकाएक कहा, "बीच बीच मे लगता है, छल-छलावे से आपका प्रेम प्राप्त किया है । लगता है, मैंने अन्याय किया है ।"

"अचानक यह सब फालतू बात तुम्हारे मन मे क्यो आयी ? '

अलका जैसे अपने आप मे डूब गयी थी। बोली, "फालतू नही है, बच्चू दा। मेरी सारी बात सुनें, तो हो सकता है, आप मेरे घर मे कदम न रखें।"

झिडकी-भरे स्वर मे मैंने कहा, "उफ् अलका!"

इसके बाद मुझे कुछ कहने का मौका दिये बगैर अलका ने धडल्ले से अपनी जीवन-कहानी कहना शुरू कर दिया। कहानी के बीच मे ही मैंने जबरन रोक दिया। अलका को अपने निकट खीचकर लाड करते हुए कहा, "अलका, मैं अखबार का रिपोर्टर हूँ। बीते दिनो की अपेक्षा वर्तमान और भविष्य के प्रति ही अधिक आग्रहशील रहता हूँ, जरूरत भी इसी की पडती है। व्यतीत मे तुमने कहा एक रात बितायी या नही बितायी है, उससे मेरा कुछ बनता-विगडता नही। अतीत भले ही असत्य न हो मगर वह छाया मात्र है। जिस अलका सान्याल के बारे मे तुम कह रही हो, वह छाया मात्र है। आज की अलका राय का यही परिचय है कि उसके दो पिता और दो माताएँ हैं, बोधिसत्व के अतिरिक्त उसके दो भाई हैं और सबसे बडी बात है कि आदर्शवादी रमेश उसका पति है। यही नही, आज तुम मा हो, तुम सन्तान की जननी हो, तुम सबके लिए श्रद्धा की पात्री हो।'

चाँदनी मे मैंने साफ साफ देखा, अलका के चेहरे पर हँसी तैर रही है। लगा, उसके कपोल पर दो रेखाएँ दमक रही हैं। समझ गया, आखो के आँसू सूख गये है। आँसू के स्पर्श से अलका का चेहरा और भी सुन्दर दीखने लगा। लगा, कितने ही युग-युगान्तर से अलका और मैं भाई-बहन बनकर इस धरती पर आते रहे है और यहाँ से विदा होते रहे हैं। अनन्त काल के प्रेम के हम दोनो बन्दी हैं। याद नही, हम दोनो ५ब तक बैठे रहे। लेकिन, इतना याद है कि अलका ने बहुत देर बाद कहा था, "भैया की उदारता पाकर मैं धन्य हूँ।"

श्रीरामपुर मैं बीच-बीच मे जाता था, लेकिन रमेश जब बहरमपुर चला गया तो सिर्फ एक बार ही जा सका। आज दूर रहने पर भी

अलका को भूला नही हूँ। उसके स्नेह को भूल नही पाया हूँ, रमेश और मुन्ना को भूल नही पाया हूँ। कोयले की खान के मजदूर को कोयला काटते-काटते कदाचित् कभी-कदा हीरे का टुकडा मिल जाता है, उसी प्रकार प्रेस का रिपोटर हाने के नाते जन सभा, प्रेस कॉन्फ्रेन्स, थाना-पुलिस, फायर-बिग्रेड और अस्पताल के सवादो की कार्यवाही लेने के सिलसिले मे अलका से मुलाकात होने पर मैंने स्वय को धन्य माना है। हर क्षण यही सोचता हूँ कि उन लोगो का कल्याण हो।

अखबारो की अपनी-अपनी खासियत होती है और उसी की वजह से उन्हे सम्मान प्राप्त होता है। काई बेहद प्रचार-प्रसार के कारण सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है ता कोई समाज के उच्चस्तरीय व्यक्तियो की अन्दरूनी खबरो को उछालकर आदर पाता है। हमारे 'दैनिक सवाद' कार्यालय मे कपोज के लिए लाइनो मशीनें और मुद्रण के लिए विशाल रोटरो मशीन न थी, इसलिए इसका प्रचार सीमित था। मगर दुनिया-भर की छिपी खबरें उछालने के कारण 'दैनिक सवाद' अनेक लोगो के दिल मे दहशत पैदा कर देता था।

अखबार के पन्ने पर नाम छपाने का लोभ प्राय हर आदमी के मन मे रहता है। मिनिस्टर चक्रधर चैटर्जी मे भी यह दुबलता थी। चक्रधर दा को मालूम था कि हमारे अखबार मे उनका नाम छपने का मतलब है दोहरा लाभ। इसलिए चक्रधर दा कलकत्ते के बाहर किसी समारोह मे जाते तो अकसर मुझे अपने साथ ले लेते थे। मैं भी घूमने-फिरने के नशे और भविष्य मे स्कूप समाचार पाने की उम्मीद मे चक्रधर दा की सगति का मजा लेने को अकसर बाहर निकल पडता था।

चीफ मिनिस्टर बाहर गये थे और तमाम मन्त्रियो के कमरो मे चक्कर लगाने पर भी मैं किसी समाचार का पता लगा नही सका था।

आखिर मे चक्रधर दा के कमरे के अन्दर जाकर पूछा, "भैया, कुछ हासिल होगा ?"

"भले आदमी की औलाद, पहले आकर बैठो, एक प्याली चाय पियो, उसके बाद देखूगा कि कुछ है या नही।"

चक्रधर दा का आतिथ्य स्वीकार कर अन्तत उनके साथ गाडी मे बैठकर शान्तिपुर गया। शान्तिपुर सनातन समिति के वार्षिक अधिवेशन मे चक्रधर दा ने मुख्य अतिथि की हैसियत से एक सारगर्भित भाषण दिया। कहा अनन्तकाल के यात्रा-पथ मे भारत एक विशेष ध्रुवतारा रहा है तथा इस पुण्यभूमि मे युग-युगो तक एक के बाद दूसरे महापुरुष का आविर्भाव होता रहा है। उनकी शान्ति की मधुर वाणी ने ससार को नयी आशा का आलोक दिया है और उसके साथ ही दिया है नये जीवन का इगित। चक्रधर दा ने और भी बहुत कुछ कहा। अन्त मे बोले चैतन्य-भूमि के पुण्यतीर्थ मे खडे होकर गर्व के साथ इस बात की घोषणा कर सकता हूँ कि जिस स्थान की मिट्टी पर भगवान रामकृष्ण ने जन्म लिया है जहाँ वीर विवेकानन्द ने साधना की है, विद्यासागर, राममोहन, शिवनाथ शास्त्री, रवीन्द्र नाथ, श्री अरविन्द, नेताजी इत्यादि अनगिनत महामानवो के पदचिह्न जिस पर अकित हैं, वह बगाल आज की तरह हमेशा दुरवस्था मे पडा नही रहेगा। चारो तरफ तालियो की गडगडाहट हुई। उसके बाद सिर्फ एक पक्ति कहकर चक्रधर दा बैठ गये तमाम अधकार से ऊपर उठकर शौर्य-वीर्यवान् चरित्र के साथ बगालियो की पताका पुन फहराने लगेगी।

दुबारा तालियो की गडगडाहट हुई। सभापति ने अनुनय-विनय-भरे शब्दो मे चक्रधर दा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। गले की चादर को सँभालते हुए चक्रधर दा बोले, "इसके लिए कृतज्ञता-ज्ञापन की आवश्यकता ही क्या है ? आप लोगो के पास आना हमारा कर्त्तव्य है। स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन अजित कुमार ब्रह्मचारी ने मुख्य अतिथि को धन्यवाद देते हुए कहा, "शान्तिपुर जैसे प्राचीन स्थान को

सनातन समिति की वार्षिक सभा मे माननीय चक्रधर बाबू जैसे देश के सच्चरित्र, विद्वान और श्रद्धेय नेता के आगमन से शान्तिपुरवासी आज अपने को धन्य मान रहे हैं।'

शान्तिपुर की सुविख्यात गायिका श्रीमती लावण्य हालदार के गीत से समारोह की समाप्ति हुई।

कलकत्ता लौटने के रास्ते मे राणाघाट के निकट एक छोटी-सी सडक के मोड पर चक्रधर दा ने गाडी रोकने को कहा। बोले, "बच्चू भाई, जरा बैठो। सामने ही मेरे एक दोस्त की विधवा औरत और लडकी रहती है, ज़रा देख आता हूँ।"

चक्रधर दा पैदल चलते हुए गली मे ओझल हो गये, मैं और ड्राइवर गाडी मे बैठे रहे। पाच-दस-पन्द्रह मिनट गुज़रते-गुज़रते आधा घण्टा हो गया, फिर भी चक्रधर दा वापस नही आये। दो-चार मिनट और बैठने पर मैं धैर्य खो बैठा। गौर से पूछा, "क्या बात है गौर, तुम्हारे साहब अब तक नही लौटे ? गौर कुछ जवाब न दे सका। गाडी का दरवाज़ा खोलकर मैं नीचे उतर पडा और गली की ओर ताकने लगा। कुछ क्षण और बीत जाने के बाद चौदह-पन्द्रह साल की एक लडकी गाडी के पास आयी और गौर से पूछा, आपका नाम बच्चू बाबू है ?' गौर ने मेरी तरफ इशारा किया।

यह जानकर कि चक्रधर दा और लडकी की मा मुझे बुला रहे हैं, मैं लडकी के साथ एक इकमंजिले खण्डहरनुमा मकान मे आकर हाज़िर हुआ। मौलसिरी की बगल से होकर सहन मे कदम रखते ही चक्रधर दा ने अन्दर से कहा, "बच्चू, इधर आओ।"

अन्दर के बरामदे से महीन किनारी की धोती पहने एक मध्यवयस्क महिला बाहर निकलकर आयी। आते ही पुकारा, "आओ भाई, अन्दर चले आओ। पहले पता चलता तो तुम्हे इतनी देर तक गाडी मे बिठाकर नही रखती।'

दीदी के पीछे-पीछे चलता हुआ बरामदे पर आया और चक्रधर दा

लगभग दो साल बाद एक दिन दोपहर मे राइटर्स बिल्डिग के गलियारे से जाते हुए सामने की ओर से एक महिला को आते देखकर एकाएक याद आया कि यह तो दीदी है, लेकिन मन मे एक प्रकार का सन्देह भी पदा हुआ। इसके पहले राणाघाट के डेरे पर जब दीदी को देखा था, उस समय दीदी की उम्र तकरीबन पैंतीस मालूम हुई थी। आज राइटस बिल्डिग के गलियारे मे उम्र कुछ कम मालूम हुई। महीन किनारी के बदले चौडी किनारी की सफेद साडी दीख पडी। शुरू म पुकारने की हिम्मत न हुई। सोचा, शायद कोई दूसरी औरत है। मगर बिलकुल आमने-सामने होने पर कपाल के कटे दाग को देखकर समझ गया कि यह तो मेरी वही दीदी है।

हाथ जोडकर कहा, "नमस्कार!"

नमस्कार के बदले नमस्कार न कर दीदी वैनिटी बैग दाहिने से बायें हाथ मे लेकर बोली, "आपको ठीक ठीक पहचान नही पा रही हूँ।"

बगैर शर्मिन्दा हुए मैंने कहा, "मेरा नाम बच्चू है।"

"कौन बच्चू ?" दीदी ने भौह सिकोडकर पूछा।

"किसी दूसरे बच्चू के बारे म मुझे मालूम नही। तब हा, यह बच्चू रिपोटर है। कुछ दिन पहले चक्रधर दा के साथ राणाघाट आपके डेरे पर "

इसके आगे मुझे कुछ कहना नही पडा। दीदी ने हँसते हुए कहा, "ओह तुम हो! कैसे हो भाई ?"

"ऐसी दीदी रहे तो भाई की हालत कैसे बुरी होगी, आपकी कृपा से कुशल ही है।"

लाड से मेरे गाल पर एक चपत जमाते हुए दीदी बोली, "रिपोटर नहीं, तुम तो शब्द-शिरोमणि हो।'

मोटे तौर पर दीदी ने सूचना दी कि राणाघाट छोडकर आजकल वे कलकत्ते मे रह रही है और सकुशल है। "मैं बालीगज प्लेस मे रहती

हूँ। प्रेसिडेन्सी नर्सिंग होम के सामने की गली से सीधे चले आना। उसके बाद ज़रा बायें चलकर दाये मुडने पर मामने एक ड्राई क्लीनिंग शॉप पर निगाह पडेगी। इस मोड पर आकर मल्लिका का नाम लेते लेते ही लोग मेरा डेरा बता देंगे। या फिर पूछना कि पूर्णिमा दीदी का डेरा कहाँ है।"

मैंने भी कह दिया कि वक्त मिलने पर जाऊँगा।

अभिमान और बनावटी क्रोध के स्वर मे दीदी बोली, "दीदी के पास अखबारो का चालूपन नही चलेगा। बताओ, कब आ रहे हो?'

तक करने से कोई नतीजा नही निकला, अन्तत अगले रविवार को आने का वादा करना पडा। चलती हूँ भाई, यह कहकर दीदी मुस-करा कर विदा हो गयी, मगर मेरी पेशानी पर चिन्ता की लकीरें उभर आयी। विधवा महिला का एकमात्र सहारा प्रियतोष बाबू थे लेकिन उनके मरने के बाद भी दीदी क्योकर अच्छी तरह हैं? किस खुशी के कारण दीदी की प्रौढता मे से आज फिर से जवानी झाक रही है? मुझे इसमे एक तरह के रहस्य का हाथ लगा।

तारादा से कहकर बुधवार के बदले रविवार को ही ऑफ लिया। तीसरे पहर के पहले ही धोती-कुरता पहनकर दीदी के डेरे की ओर रवाना हुआ। निर्धारित समय पर वेलेस्ली-गडियाहाट की ट्राम पकड कर बालीगज फाँडी के मोड पर उतर कर बालीगज के अन्दर गया। गोपाल भाड की तरह दो डग आगे और तीन डग पीछे चलकर अनगिन बार दाहिने से बायें और बायें से दाहिने चलकर अन्तत ड्राइ क्लिनिंग पर नजर पडी। दीदी के डेरे का पता किससे पूछूँ, यह सोचते ही बरामदे पर बँगला चलचित्र जगत् के भावी नायको पर नज़र पडी। मन मे सोचा, मुहल्ले की कुमारी युवतियो का पता लगाने के लिए इससे बढ-कर पूछताछ-कार्यालय और कौन-सा हो सकता है? जो साचा था, सही साबित हुआ। मल्लिका का नाम लेते ही एक अधयुवक रेड क्रॉस के स्वयसेवक की तरह उठकर आया और बोला, "आइये, दिखा देता हूँ।"

नौजवान पाकिट से माउथ आर्गेन निकाल कर बडे ही खूबसूरत ढग से एक हिन्दी गीत का स्वर बजाते हुए एक तीन-मजिले मकान के सामने आया और पुकारा "मल्ली ।

तीसरे माले के बरामदे की रेलिंग पर झुककर नीचे की ओर झाँकते हुए, सजल काली आँखो से एक लडकी ने विद्युत बाण चलाया। मुँह से कुछ कहने के पहले ही माउथ आर्गेन से फिर एक मीठा-सा स्वर बाहर निकल आया। उसके बाद कहा, "नीचे आओ।"

लडकी अपने अग-अग को थिरकाती, नाचते हुए सीढिया उतर कर नीचे मेर सामने आयी। मैंने पूछा, "पूर्णिमादी हैं ?"

"है, मेरे साथ आइये, मल्ली बोली।

मल्ली के पीछ पीछे सीढिया चढते हुए मैंने दखा, तीनेक साल पहले राणाघाट की जिस मल्लिका को न तो रूप था और न ही सौरभ, वही मल्लिका अब पूणतया प्रस्फुटित हो गयी थी और उसकी खुशबू सारे मुहल्ले मे फल गयी थी।

सीढिया तय कर तीसरे माले पर पहुँचते न पहुँचते दीदी ने दाहिने हाथ से मुझे अपने पास खीच लिया। रोल्ड गाल्ड के रिमलेस चश्मे के अन्तराल स दीदी की आखो की मुसकान मेरे चेहरे पर बिखर गयी। मेरे और दीदी के पीछे-पीछे मल्ली आयी।

दीदी के साथ आकर जिस कमरे मे प्रवेश किया वह छोटा होने के बावजूद करीने से सजा था। दीवान के अनुकरण पर एक छोटे से तख्ते पर खादी की छपी चादर बिछी थी। मुझे अपने साथ ले दीदी उसी पर बैठ गयी। मैं कमरे के चारो तरफ निगाह दौडा रहा था, दीदी बोली, "तुमने मुझे बिसराया नही, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।"

मैंने कहा, "परीक्षा-फल खराब होने के बावजूद विद्यार्थी की हैसियत से मैं कोई बुरा नही था।

होठ बिदकाकर दीदी बोली, "बात मे तुमसे भला कौन जीत सकता है?'

मल्लिका ने हिसाब करते हुए कहा, "दो साल से कुछ अधिक समय से ही।"

मल्लिका ने मुझे अपना आदमी सोचकर गृहस्थी की बहुत सारी बातें बतायो। कहा, पहले माहवार हज़ार-बारह सौ खच हो जाता था मगर आजकल आठ-नौ सौ से ज्यादा नही होता। चक्रधर चाचा न होते तो उन्हें भीख माँगना पडता। और, इतने बडे आदमी होने के बावजूद वे इतने निरहकारी और परोपकारी हैं कि उनका जोड मिलना मुश्किल है।"

दीदी अपने दोनो हाथो मे दो प्लेटें थामे कमरे के अन्दर आयो। इशारे से मल्लिका को चाय लाने को कहा। "लो भाई, थोडी-सी चाय पियो।"

मैंने राय ज़ाहिर की, "भाई की तरह दीदी अब गरीब नही है कि थोडी-सी चाय पियूगा। खुशहाल दीदी के घर पर आया हूँ, डटकर खाना खाऊँगा।"

दीदी के चेहरे पर उतार-चढाव देखकर लगा, मेरी बात से उन्हें सत ष हुआ।

अब मैंने ज़रा हठ के साथ कहा, "आपने वादा किया था कि किसी दिन टैक्सी से घुमाइएगा "

दीदी बोली, "अरे यह कौन-सी बडी बात है ? जिस दिन मर्जी हो, घूम लेना।"

पोटेटो चिप्स के कुछेक टुकडे मुँह के अन्दर डालकर मैंने पूछा, "चक्रधर दा इतने लोगो की भलाई करते हैं जिसका कोई अन्त नही।"

चक्रधर दा के सन्दर्भ मे बातचीत करते ही पूर्णिमादी का चेहरा पूनम के चाँद की तरह झलमलाने लगा। कृतज्ञता से चेहरा परिपूर्ण हो गया। बस इतना ही कहा, "ऐसा कोई दूसरा आदमी मिलना मुश्किल है भाई। वे न होते तो मैं और मल्लो वहाँ किस किनारे लगतो, यह सोचते ही डर लगने लगता है।"

और कुछ देर तक दीदी से सुख-दुख की बातें कर वहाँ से विदा हुआ।

दूसरे दिन राइटस बिल्डिंग पहुँचते ही चक्रधर दा के पास गया। मौका मिलते ही कहा, "जानते हैं भैया, कल मैं पूर्णिमादी के डेरे पर गया था।"

चक्रधर दा ने घबराहट के साथ कहा, "सचमुच ? वे लोग सकुशल तो हैं ?"

दीदी और मल्लिका की कुशलता की सूचना देते हुए मैंने कहा, "आप उन लोगो के लिए टैक्सी का इन्तजाम नही कर दिये होते तो दीदी की क्या हालत होती, यह सोचा भी नही जा सकता।"

चक्रधर दा बडे ही चतुर व्यक्ति हैं। लम्हे-भर के लिए कुछ सोचा। बोले, "तुम तथा और भी बहुत से लोगो ने मुझसे उन लोगो के लिए कुछ करने कहा था। सो आखिर मे एक टैक्सी ही दे दी।"

चक्रधर दा ने गगाजल से गगा की पूजाकर मुझे क्लीन बोल्ड आउट कर दिया। यानी मेरी ही बात का हवाला देकर मेरा जहर दूर कर दिया। इसके बाद मैंने बात आगे नही बढायी, सदभ बदल कर उस दिन वहा से चल दिया।

इसके कुछ दिन बाद उत्तर बगाल की बाढ की कार्यवाही का सवाद लेने चला गया। तिस्ता के पागलपन के कारण कूच बिहार, जलपाईगुडी का चक्कर लगाते हुए कलकत्ता लौटने मे कई महीने बीत गये। वेलिंग-टन हाजरा-श्रद्धानन्द मैदान की जनसभा, विक्षोभ, जुलूस, प्रेस-कॉफ्रेन्स तथा बहुत सारी सभा-समितियो की बाढ के कारण कलकत्ता लौटने पर दीदी को याद करने की फुसत ही नही मिली।

बहुत दिनो बाद एसप्लेनेड के मोड पर दीदी से मुलाकात हुई। दीदी को मैं पहचान नही सका। अबकी दीदी ने ही मुझे पहचाना। फैशनेबुल लडकियो की तरह 'हैलो रिपोटर' कहकर दीदी ने मेरी ओर हाथ बढाया।

मैं अवाक होकर दीदी की ओर ताकता रहा। बॉब्ड बाल, आखो पर सनग्लास, स्किनटाइट स्लीवलेस ब्लाउज, होठो पर रग, आखो मे काजल—ऐसी हालत मे दीदी को पहचानता भी केसे? दीदी के घुटनो की उम्र का होने के बावजूद दीदी के अगो की माया से अपने को अलगकर आख हटाने मे काफी-कुछ वक्त लग गया, जैसे हल्के नशे ने मुझे दबोच लिया हो। अन्तत स्वय को सयत कर, हाथ बढाते हुए दीदी से हाथ मिलाया। एसप्लेनेड के मोड पर खडे हो दीदी की सगति का उपभोग ज्यादा देर तक करने मे मुझे भय और सकोच का अनुभव हुआ। पूछा, 'किस तरफ जा रही है?"

"आइ सपोज, तुम अधिक व्यस्त नही हो", दीदी ने सवाल के बदले सवाल ही किया।

सोचा था, 'हा' कहूँगा मगर मुँह से निकल गया, 'नहो'। दीदी ने बस इतना ही कहा, "वेरी गुड।" उसके बाद मुझे खीचते हुए, सडक को पार कर गाडी के अन्दर बैठ गयी। मुझे अपने पास बिठाकर दीदी खुद ही ड्राइव करने लगो। चौरगी, रास बिहारी, गडियाहाट पार कर दीदी ने जोधपुर पाक के एक छोटे से बँगले के सामने आकर हॉन बजाया। नौकर ने आकर फाटक खोल दिया, दीदी गाडी अन्दर ले गयी।

छोटे से मकान के सामने हो लॉन है। लॉन के चारो तरफ कैरन-डुला और कुछ दूसरे फूलो की कतार। एक तरफ गैरेज और सर्वेंटस क्वाटर। दीदी ने अन्दर की ओर हाक लगायी। ड्राइगरूम, बेडरूम, गेस्टरूम के अन्दर घुमा-फिराकर पूछा, "हाउ डू यू लाइक माइ स्मॉल कॉटेज?

"बहुत ही खूबसूरत।"

दीदी मुझे ड्राइगरूम मे बिठाकर कपडा बदलने अन्दर चली गयी। दीदी अन्दर चली गयी तो मैंने चक्कर लगाकर चारो तरफ देख लिया। एकाएक राइटिंग टेबल पर पडे एक पैड पर नजर गयी। उस

पर लिखा है--कॉण्टिनेण्टल सिण्डिकेट प्राइवेट लिमिटेड। समझ गया, दीदी अब सिर्फ एक टेक्सी की ही मालकिन नही, एक कपनी की भी मालकिन हैं।

दीदी के साथ बेयरा ट्रॉली ट्रे मे पेस्ट्री, सैंडविच और चाय ले आया। मेरा सत्कार करती हुई दीदी बोली, "जानते हो भाई, इण्डिपेण्डेण्ट बिजनेस के अतिरिक्त आदमी के लिए जिन्दा रहने का कोई दूसरा चारा नही है। यही वजह है कि बहुत सोचने-विचारने के बाद एक्सपोट-इपोट बिजनेस शुरू कर दिया है। यकीन करो रिपोटर, दिस इज ए वेरी गुड लाइन।'

बहुत सारे मुद्दो पर बातचीत करने के बाद दीदी अन्त मे बोली, "जर्नलिज्म करके तुम क्या कर लोगे? कम एण्ड ज्वाइन मी।'

दीदी को मैंने बहुत-बहुत धन्यवाद दिया--जरा इस बात पर सोच कर देख लू।

विदा होने के पहले दीदी से पूछा, "मल्लिका दीख नही रही है!"

"मॉली! मेरे पाटनर जस्टिस कयाल के लडके साथ बबई गयी है, एक इपोट डील फाइनलाइज करने। शी इज वेरी बिज़ी नाउ।" दीदी ने गर्व के साथ सूचना दी।

दीदी को देखते ही मल्लिका की प्रतिमा मेरी आँखो के सामने स्पष्ट हो गयी। कुमारी मल्लिका बसु अब मिस मॉली बसु हैं।

तीन-चार महीने बाद मुझे एक कार्ड मिला था टु सेलिब्रेट दि एगेजमेन्ट ऑफ मॉली विथ विजितेश, यू आर कॉरडियली इनवाइटड टु ड्रिंक्स।" जा नही सका था। शायद अच्छा ही हुआ वरना उपहार बर्बाद ही चला जाता। साल पूरा होने के पहले ही मॉली और विजितेश का सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। सुनने मे आया, इसके बाद मॉली का पुनर्विवाह एक मिलिटरी अफसर से हुआ।

आम लोगो की जिन्दगी चाहे जितनी ही विचित्रताओ से क्यो न भरी हो, लेकिन पत्रकारो की जिन्दगी और कार्य कलाप उनकी तुलना

मे और अधिक विचित्रताओ से भरे-पूरे रहते हैं। यही वजह है कि सब की निगाह से बचकर दीदी रात के अँधेरे मे छिपकर जो जीवन जी रही थी, उसकी छोटी-मोटी खबरें भी तरह तरह के सूत्रो से प्राप्त होती रहती थी। दो-चार दावतों मे जाने पर कुछेक महापुरुषो से दीदी के सबध मे तरह तरह की टिप्पणियाँ सुनने को मिली।

अखबार का रिपोर्टर होने के कारण न तो बैंक-बैलेन्स कर सका और न ही घर द्वार, जायदाद, इश्योरेन्स और गहना। एक शब्द मे कहा जाये तो सचय के नाम पर कुछ भी नही कर सका। तब हा, अनुभव कुछ न कुछ अवश्य बटोरे हैं और इसी सचय के आनन्द के आवेग के कारण दुरवस्था की परवाह किये बगैर भविष्य की ओर कदम बढाता जा रहा हूँ। आम लोग और अक्लमन्द दुनियादारो की जमात इस पर भले ही यकीन न करे, लेकिन यह बात पत्रकारो के जीवन की मर्मवाणी है।

जब रिपोटर नही था, उन दिनो अखबारो का पाठक था। जन-समुद्र का एक अग बनकर मारा मारा फिर रहा था। उन दिनो बेवकूफो की तरह नेताओ का भाषण सुनने मैदान जाता था। उनके वक्तव्य के आमत्रण पर दोपहर-भर इन्कलाब-जिन्दाबाद करता था, घर-द्वार, स्कूल-कॉलेज छोडकर सडक पर बैठा रहता था। यही नहीं, इसके लिए स्वय को धन्य समझता था। डॉक्टर हर प्रसाद मौलिक, डॉक्टर विप्लव चटर्जी, महामानव सेनगुप्त, लबोदर चक्रवर्ती, गदाधर कुठारिया इत्यादि नेताओ का भाषण सुनकर स्वय को कृतार्थ समझता था। अपनी सुख-सुविधा, मान-सम्मान की परवाह किये बगैर हिमालय सरकार और हिटलर घोष को आन्दोलन के लिए आत्म-त्याग करते देख, श्रद्धा से माथा झुका लेता था। पहले अखबारो से इन नेताओ की तसवीर काट-

नाबूद हो रहे हैं। बगाल की धरती पर बगाली आज भिखमगे हो गये हैं। आज नेतृत्व मे बदलाव लाने का दिन आ गया है और मैं इस शुभ क्षण मे कलकत्ता को आशीर्वाद की नही, बगाल के गाँवो को आशीर्वाद की कामना करता हूँ।

हावडा के मैदान मे मजदूरो की सभा मे विप्लवदा कहते हैं। दोस्तो, नवजाग्रत भारत की आप चिरजाग्रत सन्तान है—जो लोग मुट्ठी-भर अनाज के लिए खून-पसीना एक करते हैं, जिनके बाल-बच्चे-पत्नी को भर पेट खाना नसीब नही होता, वे अपने हृदय मे दर्द रखकर धनियो की खुराक जुटा रहे हैं। दुनिया के इतिहास ने आज नयी करवट ली है, विधाता प्रसन्नमुख आज आपके स्वागत की तैयारी कर रहे हैं। आज इस पवित्रक्षण मे आप लोगो को युग-युग की सचित पुरुषार्थहीनता को तिलाजलि देकर माँ के नाम का स्मरण कर खडा होना होगा और मुल्क का नेतृत्व नये युग के हाथ मे सौंपना पडेगा।

हाजरा पार्क। दोस्तो, बगाल ही नही, तमाम हिन्दुस्तान के इतिहास को इस कलकत्ता महानगरी के मध्यवित्त बुद्धिजीवियो का जो अवदान रहा है, उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास मे नही मिलेगी। आपके पुरखो ने ही साम्राज्यवाद के खिलाफ पहले-पहल आवाज बुलन्द की थी। कलकत्ते की जमीन का चप्पा-चप्पा आजादी की लडाई का साक्षी है। हिन्दुस्तान का पुनर्जागरण भी इसी शहर मे आया था।—आज एक बार पुन आप लोगो को जागना होगा, सम्मिलित स्वर म कहना होगा, तुम लोगो के दिन बीत चुके। राष्ट्र के कर्णधार के रूप मे आप ही लोगो को अपने हाथ मे नेतृत्व लेना होगा। नये दिन के नये सग्राम मे मैं आपलोगो का साथी रहूँगा।

मैंने हजारो नेताओ के लाखो भाषण सुने हैं। आज तक किसी नेता को यह कहते नही सुना कि व व्यक्तिगत तौर पर किसी वस्तु की प्रत्याशा रखते हैं। सभी नि स्वार्थ भाव से देश-सेवा की प्रतियोगिता मे जी-जान से पिले है। आम लोगो को सुबह से शाम तक दो मुट्ठी अनाज

के लिए जानवर की तरह खटना पडता है लेकिन लीडर लोग खीर-पूरी खाकर मौज करते हैं। डलहौजी स्क्वायर मे दस से पाच तक किरानीगीरी करने के अलावा सुबह-शाम पाट-टाइम काम करने पर भी हमे महीने के अन्त मे ट्राम बस के कडक्टर से बचकर चलना पडता है। परन्तु विप्लवदा, लबोदर चक्रवर्ती, गदाधर कुठारिया इत्यादि नेतागण नौकरी न करने के बावजूद मोटर गाडी पर चढते हैं। कालाघाट, भवानीपुर या श्याम बाजार-बाग बाजार से दक्षिणश्वर या बेलुड मठ जाने लायक हमारी आर्थिक स्थिति नही है, परन्तु नेतागण एयर इडिया के महाराजा की तरह परशियन कालीन पर पैर रखकर तमाम दुनिया की सैर करते हैं। लेबर-लीडर हिटलर घोष के फ्लैट मे आपको देखने को मिलेगा कि वे हर रोज कम-से-कम आठ-दस मेहमानो को ले आते हैं।

बाप का दिया हुआ नाम हितेन घोष। मैट्रिक पास कर कॉलेज मे दाखिल हुए थे, लेकिन प्रोफेसरो को छह महीने से ज्यादा परेशान करने का मौका नही मिला। अगस्त आदोलन के समय अनुमडलीय राजनीतिक सस्था ने आवाहन किया और उसकी अपील के इश्तिहार के प्रचार के अपराध मे हितेन घोष का डिस्ट्रिक्ट जेल के लगर मे तीन महीने तक खिचडी खानी पडी। जेल से लौटने के बाद हितेन घोष को कॉलेज एक जेलखाने जैसा प्रतीत हुआ। इसके अलावा नेता बनकर भाषण देने के बजाय प्रोफेसरो का भाषण सुनना उन्हे वाहियात जैसा लगा। खादी का कुरता-पाजामा पहन तमाम चाय की दुकानो मे अपने देश-प्रेम की कहानी का बखान करने मे ही हितेन घोष का एक साल से अधिक समय बीत गया। उसके बाद अचानक एक नवगठित रिक्शा मजदूर यूनियन के अध्यक्ष की भूमिका मे हितेन घोष का आविर्भाव हुआ और दसेक साल से कम अरसे मे ही वे बगाल के सबसे बडे लेबर-लीडर हो गये। दस वर्षों के इस जन सग्राम के दौरान हितेन घोष का नाम अनजाने ही हिटलर घोष हो गया। आज बगाल के मेहनतकशो को

मालूम है कि हिटलर घोष अगर उनकी यूनियन के अध्यक्ष हो जायें तो कपनी को बाध्य होकर एक महीने के बदले तीन महीने का बोनस देना होगा, एक भी सामयिक मजदूर के बदन पर हाथ लगाने से मैनेजर साहब को क्षमा की भीख मांगनी होगी।

मुझसे हिटलर घोष की मुलाकात मटिया बुर्ज की एक मजदूर सभा मे हुई थी। ट्राम-बस मे जाने और गलियो मे चक्कर काटते रहने के कारण सभा-स्थल मे पहुँचने मे जरा विलब हो गया था। जब पहुँचा उस समय दो तख्ते से बने मच पर खडे होकर हिटलर घोष भाषण दे रहे थे। रूखा दोहरा बदन, आँखें लाल, आवाज तेज-तर्रार। प्रथम दशन मे श्रमिक नेता अच्छे ही लगे थे। वैशाख की आँधी की तरह हिटलर घोष घण्टे मे एक सौ मील की रफ्तार से भाषण दे रहे थे। "जिन्होने तुम लोगो का सब कुछ लूट कर महल खडा किया है, शाम के अँधेरे के बाद जो लाखा रुपये फूकते हैं, उनसे कोई समझौता नही हो सकता। तुम्हे लडाई लडकर अपना हक हासिल करना है। तकरीबन हर मिनट पर हिटलर को तालो मिल रही थी। मीटिंग के बाद हजारो मजदूर हिटलर घोष को घेर कर खडे हो गये। यूनियन के सेक्रटरी रतनलाल अपने सहकर्मियो की मदद से किसी प्रकार उन्हे यूनियन के दफ्तर मे ले आये।

बाद में श्रमिक नेता के प्रति मुझमे जो विस्मय भाव था, वह दूर हो गया। मजदूर-सभा, प्रेस-कान्फेंस, लाक आउट, अनशन, हडताल, मैनेजर का घेराव, विक्षोभ-प्रदशन, धारा १४४ का उल्लघन, विधान सभा अभियान आदि-आदि की कार्यवाही का सवाद लेते-लेते हिटलर घोष से जान-पहचान का क्रम घनिष्ठता के रूप मे बदल गया। बीच-बीच मे राजनीति करने के खयाल से मैं हिटलर दा के डेरे पर जाने लगा। कभी-कभी लच या डिनर लेने डाईनिंग टेवल पर बैठ जाता था। उनकी बीवी और दो बच्चो को देखने पर लगता कि सुख और प्राचुर्य के बीच ही ये लोग जीवन जी रहे हैं। बाहरी तौर पर सुनने को

मिलता कि हिटलर दा के छोटे भाई गृहस्थी की पूरी जिम्मेदारी सँभाले हुए हैं, लेकिन लबे अरसे की जान-पहचान और हिटलर दा की यूनियन के प्रतिपक्ष के ससग मे आने पर सहृदय श्रमिक नेता के श्रमिक-प्रेम को कहानी सुनकर स्तभित हो जाना पडा था।

आसनसोल, रानीगज, झरिया से बजबज तक फैले कई औद्यागिक अचलो के अध्यक्ष हैं हिटलर घोप। हमारे देश के दूसरे-दूसरे मजदूर नेताओ की तरह हिटलर घाप भी श्रमिक-प्रेम के कारण अवैतनिक यूनियन अध्यक्ष के रूप मे मजदूर आन्दोलन करते हैं। इसलिए, थोडा-बहुत पाथेय और अन्यान्य खच यूनियना से ले लेते है। हिटलर दा हर यूनियन से माहवारी भत्ता लेते हैं और इसी आय से हिटलर घोष के परिवार की परवरिश का हर खच पूरा होता है।

भारत की एक अद्वितीय औद्योगिक सस्था की एक स्टील मिल मे बहुत दिना से श्रमिक विरोध चल रहा था। लिहाजा स्टील मिल का काम-धधा एक तरह से ठप्प पडता जा रहा था। खिदिरपुर डॉक पर खाली जहाज स्टील मिल का माल लादने के लिए मुँह बाये खडा था। जापानी इपोटरो का तार आया, लोकसभा मे प्रश्न पूछा गया, मत्रियो ने मामला सुलझाने की कोशिश की, मगर कुछ भी नही हुआ। भारत सरकार के उद्योग मत्री ने पार्लियामेन्ट मे घोपणा की, स्टील मिल के श्रमिक-विरोध के कारण देश को मोटे तौर पर पिछले दो सप्ताह के दरमियान साढे तीन करोड का घाटा उठाना पडा है। 'दैनिक सवाद' के लिए अब चुप्पी ओढे रहना सभव नही हो सका। तारादा ने मुझे भेजा।

अण्डाल स्टेशन पर उतरते ही सुना, आसपास ही इस्पात सेनगुप्त की मीटिंग चल रही है। मीटिंग मे जाकर इस्पात गुप्त का भापण सुना तो आश्चर्य चकित रह गया। हिटलर दा से बहुत बार मिल चुका हूँ मगर कभी पता नही चला कि उनके पास गाडी और मकान भो है। दूसरे-दूसरे माध्यम से भी वे हजारो रुपया कमाते हैं।

दूसरे दिन हिटलर दा भी अण्डाल आये थे। मैंने उनसे इस्पात सेनगुप्त के भाषण के सन्दभ मे पूछताछ की मगर कोई स्पष्ट उत्तर नही मिला। इतना ही कहा, "उन लोगो की गन्दगी का क्या जवाब दू ?"

इसके बाद हिटलर दा से मेरा सपक दिन-दिन क्षीण होता गया। पार्लियामेन्ट के चुनाव मे हिटलर दा की हार होने के बाद दुख प्रकट करते हुए मैंने उन्हे एक पोस्टकाड भेजा था। इसके अलावा पत्र लिखने का दूसरा समय निकाल नही सका।

देश मे चीज़ो की कीमतें दिन-दिन बढ रही है, कलकत्ते की सडको पर भिखमगो की सख्या मे अभिवृद्धि होने की रिपोट अखबारो म प्रकाशित हुई, जगह-जगह मीटिंग, जुलूस, विक्षोभ-प्रदशन का सिलसिला चालू हो गया। छोटे-छोटे राजनीतिक दल और नेता इस मौके से लाभ उठाकर अपनी लोकप्रियता बढाने के काम मे जुट गये। सुना है, बडा बाजार, ब्रेबोन रोड, कनिंग स्ट्रीट के कुछ व्यवसायियो ने विप्लवदा के सामने घुटने टेक दिये और उनसे निवेदन किया।

कुछ दिन बाद ही कलकत्ते के तमाम समाचार-पत्रो के प्रथम पृष्ठ पर बगाल के बारह नेताओ का एक सम्मिलित वक्तव्य प्रकाशित हुआ जिसमे पाकिस्तान के खिलाफ आर्थिक अवरोध की माग की गयी। डॉक्टर विप्लव चैटर्जी को मिलाकर कुल बारह नेताओ ने जो वक्तव्य दिया उसमें तीक्ष्ण शब्दों मे भारत सरकार की पाकिस्तान नीति की कठोर आलोचना और पाकिस्तान सरकार की सीमान्त नीति की निन्दा की गयी थी। लबी लडाई की तैयारी के साथ विप्लवदा के सभापतित्व मे खडित बगाल के राजनीतिक दलो की एक मिली-जुली कमेटी सघटित की गयी। एक विशाल हॉल मे मिली-जुली कमेटी की ओर से प्रेस-कॉन्फ्रेन्स बुलाई गयी। कुछ दिना के दरमियान ही यह हॉल बहुत से लोगो के पद-स्पर्श से विख्यात हो गया। कक्ष में नया फर्नीचर आया, टेलीफोन लगाया गया, टाइपराइटर और डुप्लिकेटर मशीनो की वजह

से कक्ष का माहौल व्यस्तता से परिपूर्ण हो उठा।

यकीन कीजिये, अगले तीन-चार महीने तक कलकत्ते के रिपोर्टरो को सांस लेने की भी फुरसत नही मिली। प्रेस-कॉन्फ्रेन्स, ढाई सौ छोटी-बडी जन-सभाएँ, साढे चार सौ वक्तव्यो के प्रचार, इक्कीस विधानसभा अभियान और तीस दिन तक पाक डेपुटी हाइकमिश्नर के सामने विक्षोभ-प्रदशन कर राजनीतिक दलो की इस सम्मिलित कमेटी ने एक नया इतिहास कायम कर दिया। नये आन्दोलन के बहाव मे पहले का मूल्यवृद्धि विरोधी आन्दोलन कहा वह गया, कौन जाने।

पहले सोचता था, श्रद्धा-ज्ञापन के लिए ही नेताओ का स्वागत किया जाता है, किसी महान् कार्य के संपादन के लिए ही उन्हे रुपये की थैली दी जाती है, परन्तु आज मुझे इन बातो पर विश्वास नही होता। अब मुझे अच्छी तरह मालूम हो गया है कि बगैर विशेष स्वार्थ के इस तरह की स्वागत सभा का आयोजन नही किया जाता है। आज मैं जान गया हूँ कि विप्लवदा, लबोदर चक्रवर्ती, महामानव सेनगुप्त तथा और कुछ नेताओ के पास एक विशाल प्रेस है, वहा से जनता के लिए एक प्रमुख पत्रिका का भी प्रकाशन होता है। राजनीतिक जगत् के तमाम अन्यायो के खिलाफ अगर कोई आवाज बुलन्द कर सकता है तो वह एक मात्र विप्लवदा है और है उनका साप्ताहिक। आज मैं जान गया हूँ कि धोखा धडी का यह धधा महज एक मुखौटा है। कलकत्ते के लोगो की निगाह से अपने आपको छिपाकर ये लोग गहरी रात या प्रत्यूषकाल मे अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए भिक्षा-पात्र लेकर बाहर निकलते है, भतीजे की नौकरी, भाजे की प्रोन्नति और ठेके के लिए गिडगिडाते हैं, मिन्नतें करते हैं। दिन की रोशनी से जगमगाते कलकत्ते मे ये ही लोग मिनिस्टरो के बगलो का घेराव करते हैं, सरकार के विरुद्ध समाचार पत्रो मे वक्तव्य छपवाते है।

पत्रकारो को बहुतेरे लोग सिनिक या विश्वनिन्दक कहते हैं। चूकि हम सारी चीजो मे गन्दगी ही गन्दगी देखते है इसलिए हमारी आलोचना

की जाती है। मगर हम निरुपाय हैं। लाखों-लोगो के सपर्क मे आने के बावजूद अगर वैसा एक भी आदमी न मिले जिसे सही मानो मे आदमी कहा जाये और अधिसख्य नेताओ के चरित्र मे अनैतिकता की छाप हो, तो ऐसी हालत मे यदि पत्रकार सिनिक हो जाये तो इसमे उसका दोष ही क्या है! ऐसे लोगो के सपर्क मे आते ही मैं एलर्जी का शिकार हो जाता हूँ।

विद्यार्थी-जीवन मे मेरे एक सहपाठी के बडे भाई को काला बाजारी करने के अपराध मे शुरू मे लाल बाजार की हवालात और बाद मे अलीपुर कारागार मे कुछ दिनो तक बन्द रहना पडा। दसेक साल बाद बडे भाई का अविर्भाव निर्वाचन-रणक्षेत्र मे हुआ। सेन्ट्रल कलकत्ते का जीवन-केन्द्र बडे भाई का चुनाव-दफ्तर बना। युवक-युवतियो की एक जमात को उन्होंने वोटर बनाने के काम मे लगा दिया। पोस्टर, फेम्ट्न, हैंड बिल के कारण लाखो लोगो के बीच बडे भाई का नाम फैल गया। समाज-सेवा मे आप हमेशा सबसे आगे रहे हैं। गरीब छात्रो की पढाई-लिखाई और बीमारो की सेवा के लिए आप मुक्त हस्त से दान करते हैं।

बडे भाई के चुनाव का जिस व्यक्ति ने निर्देशन किया, किसी जमाने मे वे सीमेन्ट के नाम पर गगा की मिट्टी बेचकर कानून-अदालत की कलम से सुर्खियो मे विख्यात हो चुके थे। ऐसे सधे उस्ताद की मदद से बडे भाई किसी तरह निर्वाचन-वैतरणी पार कर गये। कुछ वर्षो के बाद लोग-बडे भाई का पिछला इतिहास भूल गये। अब बडे भाई का भाषण नियमित तौर पर अखबारो मे छपता है। बडे भाई अखिल भारतीय अनैतिकता विरोधी सस्था के अध्यक्ष भी हो गये हैं। दूसरे-दूसरे रिपोटरो के साथ मैं भी बडे भाई के भाषण की रिपोट लिखने लगा।

विधाता, इस प्रकार से विधाता का भयकर परिहास रिपोर्टरो के खाते मे यथेष्ट परिमाण मे लिखा हुआ है। दुख इसी बात का है कि नासमझ जनसाधारण के बीच जिनकी वाणी का हम प्रति दिन प्रचार

करते हैं, उन्हे हम प्रेम की दृष्टि से नही देखते और न ही उनके प्रति हममे श्रद्धा-भाव ही है ।

लेकिन एक दिन ऐसा आया जब अनैतिकता मे डूबे स्वार्थी राजनीतिक नेताओ के जगल मे मैंने पछी का गीत सुना, रोशनी की लकीर देखी। इस चाय बगान के श्रमिको का धुआँता असन्तोष अचानक आग की तरह लहक उठा। अखबारो के पन्ने-पन्ने पर दार्जिलिंग, जलपाइगुडी की खबरें सुर्खियो मे छपने लगी। पाँचेक दिन बाद मैं भी नार्थ बेंगाल एक्सप्रेस मे बैठकर उत्तर बगाल के जीवन-केन्द्र मे उपस्थित हुआ। पाँच-सात दिन शटल कॉक की तरह जलपाईगुडी-सिलिगुडी, सिलगुडी-दार्जिलिंग का चक्कर लगाते रहने के बाद श्रमिको का विरोध आन्दोलन यद्यपि समाप्त हो गया लेकिन तीन दिन बाद मनाये जाने वाले विजयोत्सव देखने के लिए मुझे जलपाईगुडी मे ठहर जाना पडा। कई दिनो तक भाग दौड करने के कारण थककर चूर हो गया था। इसलिए उस दिन सबेरे नींद टूट जाने पर भी बिस्तर पर बहुत देर तक करवटें बदलता रहा, छाती के नीचे तकिया दबाये रोमान्टिक की तरह तिस्ता की ओर ताकता रहा। चौकीदार और बेयरा के आतिथ्य मे इरिगेशन रेस्ट हाउस मे अकेले रहने के बावजूद ऐसा महसूस हुआ जेसे मैं अनन्त ऐश्वर्य से पूण प्रकृति की गोद मे मिलन-यामिनी व्यतीत कर रहा हूँ। पेड के पत्ते-पत्ते को तिस्ता की मीठी बयार छू गयी। पत्ते हिलने-डुलने लगे। लगा, मुझसे ताल मिलाकर नाच रहे है। मन ही मन महसूस करने लगा, मेरी आखो की अग्नि मे प्रेम की रश्मिया चारो ओर छिटक गयी है और उस रश्मि की लाज से मेरी सिक्तवसना मानसी का मन दग्ध हो रहा है। लगा, मेरी मानस-लक्ष्मी चित्रागदा की तरह बोल उठी—लज्जा, लज्जा, हाय, यह मेरी लज्जा का है मिथ्या रूप, मिथ्या लज्जा !

अर्जुन की तरह मैंने कहा—

हे सुदरी, उन्मथित यौवन मेरा
सन्यासी का व्रत विद्धछिन्न कर दिया
पौरुष की वह अधीरता
उसके गौरव को स्वीकारता हूँ मैं—
कोई आचार-भीरु नारी नही हूँ मैं
शास्त्र वाक्य से बँधा हूँ।

मैं चादर लपेटे उठकर बिस्तर पर बैठ गया। हाथ आगे बढाकर कहा—

आओ सखी, दु साहसी प्रेम
वहन करे हमे
अज्ञात के पथ पर।

मैं इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि मेरी चित्रागदा मुझे बाहो मे भर लेगी और कहेगी—तब ऐसा ही हो परन्तु उसके बदले जिसके कण्ठ स्वर से मेरी दिवानिद्रा टूट गयी और रवीन्द्रनाथ की चित्रागदा का नृत्य-नाटय अचानक थम गया वह था नेपाली चौकीदार वीर बहादुर। उसकी पहली पुकार से लगा था, हो सकता है चित्रागदा ही आयी हो लेकिन दूसरी पुकार से होश लौट आया और समझ गया कि चित्रागदा नही, केवल गदा है। वीर बहादुर के तकाज़े पर स्नान-भोजन कर पुन जेट विमान पर चढकर प्रेम के महाकाश मे उडने लगा। लेकिन बहुत देर तक उड नही सका, थकावट के दबाव के कारण नींद मे डूब गया।

वेला ढलने पर आखें खुली। चाय पीकर सज-धज के साथ तिस्ता का किनारे टहलने लगा। इरिगेशन रेस्ट हाउस को पीछे छोड जब खासी अच्छी दूरी तय कर ली तो एकाएक दुलाल दा से मुलाकात हो गयी। जिस दुलाल दा को कलकत्ते के मैदान मे भाषण करते देखने का अभ्यस्त रहा हूँ, उन्हे जलपाईगुडी मे तिस्ता के किनारे एक युवती के साथ टहलते देखूगा, इसकी मैंने उम्मीद नही की थी। मैंने आश्चर्य के साथ पूछा, "क्या बात है दुलाल दा, आप यहा ?"

लडकी को बाँहो मे भरकर दुलाल दा ने चेहरे पर हँसी लाकर कहा, "मैं भाई, बीच-बीच मे इन दीदी जी से मिलने यहाँ आता हूँ।"

अनजाने ही मेरे मुँह से निकल गया, "दीदी जी !"

"हाँ, मेरी नतिनी है।'

जहाँ तक स्मरण है, दुलाल दा को चिरकुमार के रूप मे ही जानता था। इसलिए नतिनी को देखकर विस्मय हुआ। दुलाल दा साठ के खाने मे कदम रख चुके हैं, अनुभव की दिव्य दृष्टि से मेरे प्रश्न का मर्म समझने मे उन्हे कोई कठिनाई नही हुई। इसलिए नतिनी से अच्छी तरह मुझे परिचित करा दिया।

"दीदी, यह बच्चू है, दैनिक सवाद का रिपोटर।" उसके बाद लडकी की ओर इशारा करते हुए मुझसे कहा, "यह मेरी नतिनी है, कल्याणी चौधरी।'

दुलाल दा को मैंने अपने आने का कारण बताया। अपने डेरे और जलपाईगुडी मे ठहरने की अवधि की सूचना दी। सब कुछ सुनने के बाद दुलाल दा बोले, "मेरे लडकी-दामाद का मकान रहते तुम जलपाईगुडी रेस्ट हाउस मे नेपाली चौकीदार के हाथ की रसोई खाओगे, यह नही हो सकता। एक तरह से जबरन् ही मुझे दामाद के घर ले गये।

दुलाल दा के दामाद का पेशा हालांकि वकालत था लेकिन उनकी असली आय चाय बगान से होती थी। घर-द्वार मे प्रचुरता की छाप नजर आयी और भोजन मे तो थी ही। दुलाल दा के दामाद और लडकी ने स्वागत-सत्कार कर मुझे कृतज्ञता के बधन मे बाँध लिया, बातचीत और तौर तरीके से मुझ जैसे बडबोले रिपोर्टर को भी चकित कर दिया। और कल्याणी ? उसके अन्दर मुझे क्रान्तिकारी दुलाल दा की प्रतिमा दिखायी पडी थी। अप्रत्याशित तौर पर यह स्वागत सत्कार पाकर मैं मुग्ध होकर कृतज्ञता के साथ कलकत्ता वापस चला आया।

अगले साल कल्याणी को मेडिकल कालेज मे भर्ती कराने के समय इन लोगो से मेरी मुलाकात हुई थी। चाय बगान के मालिक का स्वागत-

करूँ, ऐसी मेरी सामथ्य न थी, इसलिए अपना दफ्तर दिखाने का आमत्रण देकर चाय और वेजिटेबल चाप से उनका स्वागत किया था।

दुलाल दा किसी जमाने मे बगाल के नामी क्रान्तिकारी थे। पजाब और महाराष्ट्र के क्रान्तिकारियो के साथ उनका घनिष्ठ सम्बध था, यह बात मैं जानता था। बीते दिनो के दुलाल दा को मैं श्रद्धा की दृष्टि से देखता था लेकिन आये दिन गन्दे राजनीतिज्ञो को अपने इद गिद देखकर इन्हे श्रद्धा के सिहासन पर बिठाने मे मुझे सकोच का अनुभव होता था।

कुछ दिन बाद हरिसाधन दा से दुलाल दा का व्यतीत और वतमान सुनकर मैं मुग्ध हो गया। इस चरित्रवान्, शक्तिशाली-निष्ठावान् देश-सेवक से परिचित होने के आनन्द से आत्म-तृप्ति का अनुभव हुआ। लेकिन व्यतीत मे उनका सही-सही परिचय न पाकर मैंने कितना बडा अयाय किया है, उस बात को सोचकर आज स्वय को अपराधी महसूस करने लगा।

पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट राय बहादुर प्रसन्न मुखर्जी की इकलौती सन्तान दुलाल दा बचपन से ही अपने विनम्र स्वभाव के कारण लोगो के प्रिय पात्र थे। इसके अलावा चूकि बचपन मे ही उनकी माँ चल बसी थी इसलिए बहुतो के हृदय मे दुलाल दा की बातचीत, तौर-तरीका, हाव भाव और चाल-चलन मे उनके पिता के धन, यश, प्रभाव या पद-मर्यादा की कोई छाप न थी।

दुलाल दा जिन दिनो स्कूल मे पढते थे, देश की राजनीति का डमरू बजने लगा था। कलकत्ते मे कॉलिज मे पढने के समय दुलाल दा को बहुतेरे आदोलनो को देखने का मौका मिला, लेकिन छात्र-जीवन मे अध्ययन त्याग करने की अपील उन पर कोई प्रभाव नही डाल सकी। अखबा·ा

बर्दाश्त नही कर सका और उसने एक लबी करछी उठाकर शशधर दरोगा को दे मारी। जॉन्स्टन छलाग लगाकर दुकान के ऊपर चढ गया और हृषिकेश को पकडना चाहा पर वह सफल नही हो सका। हृषिकेश छलाँग लगाकर नीचे उतर गया। दुलाल दा ने खडे-खडे देखा, जॉन्स्टन ने गुस्से के मारे गरम रसगुल्ले की चाशनी से भरी कढाई को ठोकर मारकर नीचे गिरा दिया और तत्क्षण जल जाने की असह्य यातना से कालिदास और हृषिकेश बुरी तरह चिल्ला उठे।

अगल-बगल के मकानो के खिडकी-दरवाज़े बन्द थे, पुलिस के जत्थे के सिर पर जुनून सवार था, किसी का ध्यान इस बात पर नही गया कि दुलाल दा जोरो से साइकिल चलाता हुआ अपने क्वार्टर चला गया था। चपरासी कास्टेबुल समझें कि इसके पहले ही दुलाल दा ने पिता की मेज की दराज़ से रिवॉल्वर निकाल लिया और चौराहे के मोड की तरफ दौडते हुए चले गये।

साइकिल का ब्रेक ले दुलाल दा जब चौराहे के मोड पर पहुँचे तो उसी समय शशधर दरोगा की पिस्तौल गरज उठी और कालिदास का निष्प्राण शरीर आखिरी कराह के साथ जमीन पर लुढक पडा। दुलाल दा का शरीर लम्हे-भर के लिए काप उठा, मानो शशधर दरोगा की गोली की चोट उसे ही लगी हो। लेकिन ऐसा लम्हे-भर के लिए ही हुआ, बगैर देर किये दूसरे ही क्षण जेब से रिवाल्वर बाहर निकाल कर दुलाल दा ने ट्रिगर दबा दिया। ठीक कालिदास की तरह ही आर्तनाद करते हुए शशधर दरोगा का प्राणहीन शरीर कालिदास की बगल मे लुढक पडा। बाद मे जॉन्स्टन को निशाना बनाकर भी गोली चलायी थी परन्तु हाथ जरा थरथरा गया था। बुलेट जॉन्स्टन के सीने मे लगने के बजाय उसके हाथ मे लगा।

पुलिस सुपर के लडके दुलाल की गोली से शशधर दरोगा की मौत होने की खबर तमाम शहर मे आग की तरह फैल गयी। राय बहादुर दफ्तर मे बैठे थे कि उन्हें यह खबर मिली। कुछ देर तक वे खामोश बैठे

रहे मगर ज्यादा देर तक ऐसी हालत मे नही रह सके। त्यागपत्र लिख-कर मेज पर रख दिया और बगले पर चले आये। पागल हो गयी बहन को साथ ले दूसरे ही दिन कलकत्ता रवाना हो गये।

हवालात मे दुलालदा को शशधर दरोगा का कीर्त्ति-कहाना सुनने को मिली। सुना कि उसके हाथा से अनगिनत राष्ट्र-प्रेमियो को पिटना पडा है। साथ ही साथ यह भो सुना कि बहुत सारे सत्रासवादियो का उसने मौत के घाट उतारा है। हवालात मे रहन के समय और अधिक जानकारी प्राप्त नही हुई, तब हाँ, जो कुछ सुना उससे शशधर दरोगा को मारने मे उन्हे कोई दुख नही हुआ। बल्कि आत्मतृप्ति ही हुई कि उन्होने सत्रासवादियो के रास्ते के काटे को दूर कर दिया।

लबे अरसे तक जाच-पडताल चलने के बाद सेशन कोट मे सुनवाई शुरू हुई। शहर के बहुतेरे नामी-गिरामी लोगो ने दुलालदा को बचाने के लिए कठघरे मे खडे हो ईश्वर की शपथ लेते हुए गवाही दी थी, वकीलो ने जिरह किया था। विचाराधीन सत्रासवादियो ने कहा था, दुलाल मुखर्जी उनके दल मे नही है। सरकारी वकील ने मेज पर मुक्का मारकर गरजते हुए सातो मुजरिमा को सत्रासवादियो का उस्ताद घापित किया था, कुछेक गवाह भी पेश किये थे। आखिर मे उसने माँग की थी कि इन लोगो को फासी पर लटका दिया जाये।

दो महीने की प्रतीक्षा के बाद वह दिन आया। सवेरे से ही तमाम शहर के लोगो की भीड कचहरी मे उमड आयी थी। ग्यारह बजे के बाद कोर्टरूम मे आकर जज साहब ने हथौडा पीटा। धीरे-धीरे लबा फैसला पढने लगे। कचहरी के लोग तमाम इद्रियो से सजग होकर सुनने लगे। अन्त मे जज साहब दुलालदा सहित पाच व्यक्तियो को फासी और दो को आजीवन देश-निकाला का आदेश दे कोटरूम से बाहर निकल गये। कचहरी के बहुत से लाग आखो मे आसू लिए दुलालदा के पास आकर खडे हो गये, सरकारी वकील, कोट के कर्म-चारी और पुलिस अफसरो का वह झुण्ड जिनसे दुलालदा को शैशव-

काल से ही प्यार और स्नेह मिला था। दुलालदा की आखें छलछला आयी थी किन्तु वे रोये नही। ज्यादा बोल नही सके थे, इतना ही कहा था, "आप लोग इतना घबरा जाइएगा तो मेरे पिता जी और बुआ की क्या हालत होगी ?" साथ ही साथ यह भी कहा था, "उन लोगो स कह दीजिएगा कि मैं सकुशल हूँ।"

दूसरे दिन तमाम अखबारो मे इस फैसले का विस्तृत ब्योरा प्रकाशित हुआ, मुल्क-भर मे खलबली मच गयी। पुलिस अफसरो ने इत्मीनान की सास ली। लेकिन एक दिन बाद ही शाम के समय कुछ ही मिनटो के अन्तराल मे अदृश्य सन्त्रासवादियो की गोली से जॉनस्टन और नये पुलिस सुपर मारे गये। इस ओर जब यह हालत थी, कलकत्ते के एक बेरिस्टर ने हाइकाट मे दुलालदा के फैसले के खिलाफ अपील की। हाइकोट ने फैसले पर विचार करने के लिए अपील मजूर कर ली, कई दिन बाद सुनवाई भी शुरू हुई। जोवन-मरण के क्रीडागार की इस रगशाला म अनेक विस्मयकारी घटनाए घटती है, हाइकोट के कठघरे मे अकस्मात् बुआ की उपस्थिति उसी की एक नज़ार है।

बुआ ने कहा था, "मेरे हा आदेश और पैसे पर यह सब किया गया है। दुलाल, शीतल, पकज, वरुण, चित्तरजन और प्रियतोष निरपराध हैं। अगर किसी को सजा मिलनी है तो मुझे ही मिलनी चाहिए।'

सरकारी पक्ष के कुशल वकील के जिरह के उत्तर मे पचहत्तर साल का विधवा बुआ ने माननीय न्यायाधीश को सन्त्रासवादियो के कार्यकलाप का सही-सही विवरण दिया था। बुआ की बात पर किसी का विश्वास नही हो रहा था मगर उसकी सच्चाई पर सन्देह करने की भी कोई गुजाइश न थी।

जस्टिस रॉबटमन ने अन्तत सेशन के फैसले को अमान्य कर फासी का आदेश रद्द कर दिया था। बुआ की तकरीर को स्वीकार नही किया था मगर उनकी गवाही के बहुत सारे विषयो मे सन्देहावकाश

है—इस तरह की राय जाहिर की थी। अन्त में दुलालदा और शीतल बगाच को आजीवन कारावास की सजा दी थी और बाकी लोगो को रिहा कर दिया था।

इतना कहकर हरिसाधन दा चुप हो गये और एक-एक कर दो प्याली चाय पी। उसके बाद फिर कहना शुरू किया, पाँचके साल के दौरान ही दुलालदा के पिता और बुआ चल बसे। इनकी मृत्यु और कारागार में सन्त्रासवादियो की संगति में रहने के कारण दुलालदा ने अपने जीवन से खिलवाड करना शुरू कर दिया। जेल में रहते-रहते ही तरह-तरह के कला-कौशल से पजाब और महाराष्ट्र के क्रान्तिकारियो से सपर्क स्थापित कर लिया। उसके बाद एक दिन आधी रात की चुप्पी को तोडकर प्रेसिडेन्सी सेंट्रल जेल का पगली घण्टी बज उठी। एक ही साथ सात-सात टेररिस्टो के भाग जाने से जेलर सिर पर हाथ रखकर बैठ गये।

इसके बाद दुलालदा और उनके सहकर्मियो ने कई महीने तक तमाम हिंदुस्तान मे सनसनी फैला दी। काफी कोशिश करने पर भी पुलिस कुछ कर नही सकी। अन्तत स्कॉटलैण्ड से मंजे हुए जासूसो का एक जत्था मगाया गया। ढाका के फुटबॉल मैदान मे मैजिस्ट्रेट पर गोली चलाने के कारण ग्यारह वर्ष का बालक हरिदास स्कॉटलैण्ड याड के एक जासूस की गोली से मारा गया। उसी रात रमना के पास सन्त्रासवादियो के द्वारा वह जासूस मारा गया। दूसरे ही जहाज से स्कॉटलैण्ड यार्ड के बाकी जासूस हिन्दुस्तान की धरती त्यागकर विलायत रवाना हो गये। कई दिन बाद नागपुर मे दुलालदा और महाराष्ट्र के कुछ क्रांतिकारियो ने स्वेच्छा से अपने आपको पुलिस के हाथो सौंप दिया।

हरिसाधनदा बोले, "इस बार फसले मे दुलालदा को फाँसी की सजा दी गयी मगर फाँसी पडने के पहले ही वे जेल से बाहर निकल आये। इसी तरह बीस साल तक पुलिस, जेलखाना और रिवॉलवर

खिलवाड करते रहने के बाद देश आजाद हो गया। गले में माला पहना कर हम लोग दुलालदा को जेल से ले आये।

"यह तो दुलालदा के जीवन का मात्र एक अध्याय है। राय बहादुर के प्रोविडेन्ट फण्ड, बक बैलेन्स, बुआ के गहने आदि मिलाकर दुलालदा कई लाख रुपये के मालिक बन बैठे, मगर अपने लिए एक भी पैसा खर्च नही किया।' मुझे चौकाते हुए हरिसाधनदा बोले, "कल्याणी दुलालदा की नतिनी नही, शशधर दरोगा की नतिनी है। शशधर दरोगा की औरत और इकलौती बेटी को शशधरदा ने ही जिलाये रखा। शशधर दरोगा की बेटी का व्याह दुलालदा ने ही कराया था और आज उन लोगो की तमाम जिम्मेदारी इसी व्यक्ति पर है। एक नही, ऐसे बहुत सारे टेररिस्ट और पुलिस अफसरो के परिवार की दुलालदा आज भी परवरिश चला रहे हैं। दुलालदा को अपने जीवन में शादी करने का समय या सुयोग प्राप्त नहीं हुआ। उनके कोई लडका या लडकी नहीं है मगर नाती-नतिनी की उन्हे कोई कमी नही है।"

हरिदा ने जरा तेज ही आवाज मे कहा, "कलकत्ते मे भी दुलालदा एक डॉक्टर नाती के पास रहते हैं।' इसके बाद प्रधान सपादक ने मुझे उपदेश दिया, "रिपोटर बनकर सिफ रिपोट लिखने मे ही जिन्दगी बर्बाद नही करो। जो तुम्हारे निकट हैं, उन्हे पहचानना सीखो।"

कचन बेयरा ने कमरे के अन्दर प्रवेश कर हरिदा से पूछा, "प्रेस ने बताया कि आपको एक और छोटा-सा एडिटोरियल देना है। दीजिएगा ?'

"जाओ, जाकर कह दो, आज कुछ नही देना है।"

दफ्तर से बाहर आ पार्क सकस के मोड पर हरिदा और मैं एक घोडेगाडी पर सवार हो रात के आखिरी पहर घर लौटे और मैंने मन ही मन क्रान्तिकारी दुलालदा को प्रणाम किया।

कलम ले चण्डीपाठ से जूते की सिलाई तक का काम करते-करते हाँफने लगता था, मगर कोई उपाय नही था। तमाम विषयों पर लिखने के अलावा रिपोर्टरों के लिए कोई दूसरा चारा नही है। मैं भी लिखता था। माली पाचघरा या घुपडी की लेबर-मीटिंग मे जाने की ख्वाहिश नही होती तो कहता, "तारादा, पी० डब्लू० डी० की चोरी की खबर के लिए कुछेक एपॉयेन्टमेन्ट तय हैं, आज उसे 'मिस' करने से कठिनाई का सामना करना होगा। तारादा आपत्ति नहीं करते। हो सकता हो, सोचते हों कि सही है, या फिर सोचते हों कि झूठ है, मगर पता लगाने का कोई उपाय न था। इसके अलावा इन चलाकियो के उस्ताद स्वय तारादा थे। इसलिए गगाजल से गगा की पूजा करने मे किसी दिन कोई रुकावट नही आयी। बाद मे कभी वे पूछते तो कहता, "कुछ मत कहिये, गलत खबर के चलते कई दिन बर्बाद हो गये।"

चाहे जो हो, लेकिन हमे राजनीतिक विवाद, उद्योग-धघे मे कच्चे माल का अभाव, साहित्य मे यौन-भावना, भारतीय कला मे पश्चिमी प्रभाव, डॉक्टरी मे अनैतिकता, शिक्षा व्यवस्था की क्रमिक अवनति, शासन-व्यवस्था मे राजनीतिज्ञो के हस्तक्षेप, समाज तात्रिक अर्थनीति के सकट, विशुद्ध जल की आपूर्ति मे निगम की उदासीनता, पुल-निर्माण मे इजीनियरो की बेपरवाही, नये ट्रैफिक कानून के कारण राहगीरो की मुसीबत, लैंसडाउन मार्केट मे मछली का अभाव, वेनापोल मे पाकिस्तानी की गिरफ्तारी, पुलिस के द्वारा साड मारने से बड़ा बाजार मे हडताल, स्वाधीनता-सग्राम के गलत इतिहास का प्रकाशन, वाइसचासलर का दीक्षान्त भाषण इत्यादि-इत्यादि विषयो पर लिखना पडता है।

सीधे शब्दा मे कहा जाये तो रिपोर्टरो की कलम बहुत-कुछ दर्जी की कैंची जैसी हुआ करती है, ऑडर और डिजाइन के अनुसार ही चलेगी।

जो लोग स्कूप न्यूज का इन्तजाम करने मे उस्ताद होते हैं, वे कुलीन रिपोटर हैं। जो पच्चोस बेशाख, बाईस श्रावण, नववर्ष या विजयादशमी की रिपोर्ट लिखते हैं वे पतित कुलीन हैं। बगाल का दो भागो

मे विभाजन होने के बाद लाखो आदमी के दुख-कष्ट को मुद्दा बनाकर अखबार के पन्नो मे काफी-कुछ छापा जाता है। ढाका, विक्रमपुर या वारिसाल के वज्रयोगिनी के लब्धप्रतिष्ठ जमीदार या नामी व्यवसायी का पुत्र कॉलेज स्ट्रीट के हॉकस कॉनर मे छीट वेचते हैं, फरीदपुर के सतीश वकील की विधवा औरत डलहौजी स्क्वायर के दफ्तरो मे पेंसिल की फेरी करती है, मेमन सिंह का भूपेश अधिकारी एम० ए० पासकर २ ए बस मे कन्डक्टर नियुक्त हुआ है, राजसाही के सान्याल निवास के लोग पच्चीस लाख रुपये की सपत्ति खोकर अन्तत सबलहीन हालत मे धुबिलिया कैंप मे रह रहे है—इस तरह के सख्यातीत विषयो को मुद्दा बनाकर अखबारो मे अकसर लेख प्रकाशित होते रहते है। पतित रिपोर्टर ही इन मानवीय अधिकारो पर रिपोर्ट लिखते है। कोई विषय हाथ मे नही है लेकिन विस्थापितो पर एक लेख लिखे बिना काम नही चल सकता तो ऐसी हालत मे दफ्तर मे ही बैठकर मानवीय अधिकार पर एक रिपोर्ट तैयार करना पडता है, पुराना स्मृतियो को दुहराते हुए।

सवेरे शखध्वनि से पक्षियो के गीत को गौण बनाकर गाव-भर मे शुभ सवाद की घोषणा की गयी कि जमीदार नगेन मुखर्जी के घर मे सन्तान पैदा हुई है। गाव-भर के लो" कचहरी के सामने पहुँचे कि इसके पूर्व ही पुरोहित ने चण्डो मडप मे गीता पढना शुरू कर दिया। ब्राह्मण, कायस्थ, चण्डाल, शूद्र ने चुपचाप हाथ जोडकर पुरोहित की कण्ठध्वनि सुनी—"रसोहहमप्सु कौन्तेह प्रभास्मि शशि सूर्य्ययो प्रणव, सर्ववदपु शब्द जे पौरुष नृपु। पुण्ये गध पृथिव्याञ्च तेजश्चामि विभावसो, जीवन सर्वभूतेषु तपश्चामि तपस्विषु।" विवाह के अठारह वष वाद नगेन मुखर्जी के घर मे सन्तान पेदा होने से गाँव-भर के लाग आनन्द-मग्न हो गये। शालग्राम शिला को साक्षी बनाकर पुरोहित ने सबको सूचित किया, घर मे लक्ष्मी का आगमन हुआ है। उन्हान नामकरण भा किया। नगेन मुखर्जी को कन्या का नाम शतरूपा रखा गया। पुरो-

बहुत सारे लोगो की तरह अमियदा भी हमारे दफ्तर मे आते थे। अड्डेबाजी करते, चाय पीते-पिलाते, पान-सिगरेट ऑफर करते थे। किसकी पूछ पकडकर 'दैनिक सवाद' कार्यालय मे अमियदा का पहले-पहल आगमन हुआ था, यह मैं नही जानता। जानने की जरूरत या वक्त भी नही था। सिफ इतना ही जानता था कि अमियदा मुझसे पहले से ही 'दैनिक सवाद' कार्यालय मे आते-जाते हैं। शुरू मे मैं उन्हे डेपुटी चीफ रिपोटर समझता था। काफी दिनो के बाद पता चला था कि व रिपोटर नही, बल्कि नियमित तौर पर आनेवाले व्यक्ति हैं। लेकिन ऐसा होने मे क्या आता-जाता है। चाहे कुछ करें या न करें, मगर अमियदा बडप्पन जरूर दिखाते थे। बाहर का आदमी फालतू खबर छपवाने आता तो अमियदा कहते अजी साहब, इस तरह की खबर छापने मे तो अखबार मे असली खबर छापने की जगह ही न रहेगी। टेलीफोन आता तो अकसर रिसीवर उठाकर अमियदा कहते हेलो! रिपोटर हियर

अकसर हर शाम अमियदा को अपने बीच पाता, उनके साथ अड्डेबाजी करता, गपशप करता मगर कुछ वर्षो तक उनका वास्तविक परिचय जान नही सका। कुछ वर्षों की जान-पहचान के बाद पता चला कि अमियदा फेयरली प्लेस के रेलवे ऑफिस मे काम करते हैं। चूंकि मेरी और अमियदा की उम्र के दरमियान बहुत बडा फासला था इस लिए मैंने ज्यादा खबर जानने की कोशिश भी नही की। लेकिन मेरी नियति ऐसी है कि थाने के दरोगा की तरह मेरे सामने भी बहुत सारे लोग अपनी जिन्दगी की कहानी बता जाते है अपने हृदय का सिंहद्वार खोल देते हैं।

पूरबीदी के सामने खडा होकर मैं सोचता, अनगिन लोगो की जीवन-रागिनी की झकार इनकी सुन्दर देह का घेरा की तरह अपने

आप मे लपेट कर बज उठती है। लेकिन यह क्या सभव है ? प्रति श्वास-नि श्वास पर मेरी छाती मे अमियदा और पूरबीदी का जीवन-सगीत बज उठता था, रुलाई से मेरा मन भर जाता था। लेकिन क्यो ? ये तो मेरे कोई नही हैं, फिर भी मेरे सीने मे इनके प्राणो की आग क्यो जल रही है ? क्यो मुझे पीडा का अनुभव होता है ? अकेला होता हूँ तो क्यो मेरा मन दुख से भीग जाता है ? उत्तर नही मिला। तब हाँ, जानता हूँ, यही मेरी नियति है। जो मेरे निकट के आदमी हैं, उन्हे मैं पहचान नही सका। लेकिन जो दूर, बहुत दूर के थे, वे केवल निकट नही आये बल्कि मेरे प्राणो के आगन मे आमन बिछाकर बैठ गये। नि स्व होने के बावजूद मैं परिपूर्ण हो गया हूँ, रिक्त होने के बावजूद ऐश्वर्यवान हो गया हूँ। सोचता हूँ, जिनके कण्ठ का गीत मुन नही सका, उनके जीवन मे मुझे गीत की लय की प्राप्ति हुई है। जिन्हे हँमते हुए देखा है, उनके क्रन्दन के शब्दहीन आघात से मेरी छाती की पसलियाँ काप उठी हैं। मावस की रात मे दीवाली के दीप-माला की जगमगाहट की तरह किसी-किसी आदमी के अन्तर-प्रदीप के प्रकाश से मेरा अधेरा हृदय भी प्रकाश से परिपूर्ण होकर जगमगा उठा है। प्रकाशदा, लावण्य, अलका, मातृस्वरूपा पारुलवाला, हरिदास, डॉक्टर सामन्त तथा और भी बहुत से लोगो की तरह अमियदा और पूरबीदी ने मेरे अन्तर मे प्राणो के प्रदीप जला दिये है।

विद्यार्थी-जीवन के मित्र अग्रजतुल्य षष्ठीदा का कार्यक्षेत्र देखने छिन्दवाडा जिले का चान्दमेटा गया था। षष्ठीदा और वीणादी के आदर-यत्न के भुलावे मे आकर सात दिन की जगह तेरह दिन बिता दिये। जब होश आया कि मैं पाँचू हलवाई के लडके का प्राइवेट ट्यूटर हूँ तथा दैनिक सवाद का पच्चीस रुपया माहवार पानेवाला एक सीनियर रिपोर्टर, तो फिर देर नही की। दूसरे ही दिन बस पर चढकर परासिया आया, उसके बाद ट्रेन मे बैठकर पहले छिन्दवाडा और उसके बाद नागपुर। भारत मे एक सौ साल से अधिक समय से ट्रेन चल रही

है, आदमी की तरह ही ट्रेन का भी जब बुढापा आ जाता है तो उसे चलने फिरने मे तकलीफ होती है, इस लाइन मे आने पर इस तथ्य की जानकारी प्राप्त हुई। बुढिया रेलगाडी छिंदवाडा से खुलकर जब हाफते-हाँफते नागपुर पहुँची तो एक तरह से मेरी हालत दमे के मरीज़ जैसी हो गयी। लगभग दो घण्टा पहले बबई एक्सप्रेस हावडा जाने के क्रम म नागपुर से रवाना हो चुकी थी। इन्टरनेशनल एयरलाइ स की तरह रेलवे कपनी के ट्रानजिट पैसेजर सम्मान के पात्र नही होते। बिना खर्चा किये बडे होटल मे टिकना, बढिया भोजन प्राप्त होना, जाम पर जाम शराब ढालना और शाम से रात के आखिरी पहर तक अधनग्न मेमसाहबो का कबरे नृत्य देखना तो दूर की बात, रेलवे कपनी वेटिंग रूम के फश पर होल्डऑल बिछाकर रात बिताने की भी कोई गारटी नही देती। बासी पूरी, सडे आलू की सब्जी, कम-से-कम एक हफ्ते का पुराना लड्डू, अशुद्ध जल, विशुद्ध पॉकेटमार वगैरह ही स्टेशन-वास के प्रमुख आकर्षण हैं। अत एकमात्र सस्ते सतरे के अलावा नागपुर के स्टेशन मे टिकने का मेरे लिए कोई आकर्षण नही था। एक के बाद दूसरी प्याली चाय पीकर मैंने अपना दिमाग हल्का कर लिया, उसके बाद क्लॉकरूम मे सूटकेस रखकर बाहर निकल पडा।

स्टेशन के निकट ही एक सिन्धी की दुकान मे जाकर ऑडर दिया—चार फुलका और क्वाटर प्लेट मीट। लगोटा पहने एक छोकरा एक गिलास पानी, प्लेट मे प्याज और पुदीने की चटनी रखकर गाहको की भीड मे खो गया। बगाली या मद्रासी होटल की तरह पजाबी-सिंधी होटलो मे भी ठण्डा खाना नही दिया जाता। गरम मास और ताजा रोटी लाने मे कम से कम पन्द्रह मिनट लगेगा, यह सोचकर मैं विचारो मे खो गया। कलकत्ता, दिल्ली, बबई की तरह नागपुर मे नया या पुराना कुछ देखने लायक नही है, इसके अलावा सैलानियो की तरह बेवकूफ़ बनकर हाथ मे बॉक्स कैमरा थामे, चहल-कदमी करूँ, इसके प्रति मुझमें कभी कोई आकर्षण नही रहा है। १८१७ ई० म अग्रेजो से अप्पा साहब

भलेमानस ने कहा, "दो कदम चलकर देख लें कि पहचान पाते हैं या नही।"

यह कहकर उन्होने आँख के इशारे मुझे अपने पीछे-पीछे चलने को कहा और खुद आगे बढने लगे। जाऊँ या नही, यह सोचते सोचते मैं उनके पीछे-पीछे जाने लगा। दो-तीन मिनट चलने के बाद अट्टहास की ध्वनि सुनकर समझ गया कि बगालियो की जमात मे पहुँच गया हूँ। इधर-उधर नजर दौडाऊँ कि इसके पहले ही पूरबीदी सामने आकर खडी हो गयी। मेरे दाहिने हाथ को थाम सडक के किनारे सरक आयीं और बोली, "बच्चू, तू, यहाँ कैसे आ गया ?"

पूरबीदी को देखकर मैं अवाक हो गया था। अपना हाथ छुडाकर पूरबीदी के हाथ मे चिकोटी काटते हुए पूछा, "आपको दर्द महसूस हो रहा है ?"

"हा।"

"तो फिर आप भूत-प्रेत नही, सचमुच ही पूरबीदी है।'

पूरबीदी हँस पडी। हसी रुकने के बाद बोली, "शरारत मत कर बच्चू, चपत जड दूँगी।"

कुर्निश करते हुए मैंने कहा, "आपकी जैसी आज्ञा मेम साहब!"

अबकी पूरबीदी ने सचमुच ही मेरा कान मल दिया।

अन्तत पूरबीदी को मैंने अपने दुर्भाग्य की कहानी सुनायी। पता चला कि पूरबीदी की पार्टी घूमने-फिरने के खयाल से निकली है और पटना, बनारस, इलाहाबाद, जबलपुर, बबई, नासिक को सर करने के बाद नागपुर आया है। आज रात उन लोगो का अन्तिम अभिनय है—शरतचन्द्र की परिणीता।

तागे पर बैठ कर स्टेशन जाने की योजना मैंने स्वेच्छा से रद्द कर दी और पूरबीदी के साथ चल दिया। विख्यात नाट्य मडली 'चलन्तिका' का सदस्य बनकर उस रात मिसेज दीपाली चौधरी का आतिथ्य स्वीकार किया। उसके बाद मच के एक किनारे बैठकर 'परिणीता' देखी।

अभिनय के आरभ मे नागपुर विश्वविद्यालय के एक बगाली प्राध्यापक ने शरतचन्द्र और उनकी परिणीता के सन्दभ मे एक छोटा-सा भाषण दिया, बैरिस्टर खाडिलकर ने शरतचन्द्र की तसवीर पर माल्यार्पण किया, श्रीमती लतिका देवी ने गीत गाया।

गिरा हुआ परदा उठा। दस वर्ष की आन्नाकाली बोली, "बाबू जी, चलिये न, देखिएगा।"

गुरुचरण ने लडकी के चेहरे की ओर देखते हुए कहा, "एक गिलास पानी ले आ तो बिटिया। पिऊँगा।"

बगल मे फुसफुसाहट होने पर मैंने आँखे दौडायी। देखा, पूरबीदी ललिता के वेश मे प्रस्तुत हैं और एक व्यक्ति उनकी कमर पर के कपडे को खीच-खीच कर ठीक कर रहा है। एक बार ऐसा लगा कि शेखर बाबू और गिरीश बाबू—दोनो आकर चले गये और कुछ फुसफुसाकर कह भी गये। बाद के कई दृश्यो मे इन लोगो ने अभिनय किया, मैं देखता रहा। उसके बाद वह दृश्य आया

निपुण गृहिणी की तरह काली अपनी लडकी की शादी के सिलसिले मे बहुत व्यस्त है, शेखरदा का एक अदद माला ले जाकर पहुँचाने का भी वक्त उसके पास नही हूँ। लग्न टलता जा रहा है, काली को मरने की भी फुसत नही है। आखिर मे ललिता ही बडी माला लेकर शेखरदा की कोठरी मे जाती है, उसे चौकाकर उसके गले मे माला डाल देती है। शेखरदा ने सोचा था, काली है। दूसरे ही क्षण ललिता पर दृष्टि जाते ही कहा, तुमने यह क्या किया ललिता? तुम्हे मालूम नही कि आज की रात माला पहनाने से क्या होता है?

पूरबीदी ने ललिता की भूमिका मे बडा ही अच्छा अभिनय किया। शेखरदा के शब्द सुनकर उन्हे होश आया, माला पहनाने का महत्त्व उसकी समझ मे आया। यही नही, सचमुच ही पूरबीदी के सुन्दर मुखडे पर शर्म से लाली दौड गयी। शम से पिंड छुडाने के लिए दौडी हुई भागी जा रही थी, लेकिन शेखरदा ने पीछे से पुकारा।

मैं ड्राप क पास फोल्डिंग चेयर पर बैठा-बैठा अभिनय देख रहा था। यह भी देख रहा था कि छत की रेलिंग के किनारे शेखर और ललिता खडे हैं। दोनो न एक-दूसरे की ओर मुग्ध नयनो से देखा। शेखर के द्वारा दी गयी माला को गले मे डालकर ललिता ने व्याकुलता के साथ कहा, "तुमने ऐसा क्या किया ?"

इस तरह मुग्ध होकर मैं अभिनय देख रहा था कि स्वय को शेखर समझकर सभवत दो-चार शब्द भी बोल गया। देखा, ललिता ने शखर-दा को प्रणाम किया। निकट आकर बोली, "अब मैं क्या करू, बताओ।"

इसके बाद शरतचन्द्र द्वारा वणन किये गये तथ्यो के अनुसार शेखर बाबू ने बडा ही सुन्दर अभिनय किया। पहले हँस दिया, उसके बाद दोना हाथो को बढाकर ललिता को छाती से लगा लिया। ललिता के मुखडे पर अपना मुखडा रख दिया, होठों के पास होठ ले गये लेकिन शरतचन्द्र के वर्णन के अनुसार स्पर्श नही कर सके। मेरी आख टली स्कोप की तरह इन दो मुखडो पर फोकश डाल रही थी, कान भी सतर्क थे। मैंने गौर से दोना को देखा। शेखर बाबू ने बहुत आहिस्ता से कहा, "सब के सामने ' डाइरेक्टर एक क्षण मच की ओर आखें दौडाता है और दूसरे ही क्षण श्रोताओं की ओर। उनके शरीर मे उत्तेजना दौड रही है। प्राम्पटर प्रामप्ट करने मे व्यस्त है। ऊपर से लाईटिंग करने मे लाइट-मैन भी व्यस्त है। चाहे इनके कान मे नही पहुँचा हो लेकिन मुझे लगा कि पूरबीदो ने कहा, "शरारत मत करो।' श्रोताओ मे से किसी ने न देखा, न उसकी समझ मे आया। एक अभिनय के अन्तराल मे एक दूसरा अभिनय हो गया। लेकिन बात मुझसे छिपी नही रही।

शुरु मे लुक छिपकर और बाद मे खुले आम शरतचन्द्र की 'परिणीता' कितनी बार पढ चुका हूँ, इसका कोई आदि-अन्त नही। स्कूल-जोवन मे सस्कृत शब्दरूप और कॉलज मे अर्थशास्त्र का सिद्धात मुखस्थ करने बजाय शरतचन्द्र की अधिकाश पुस्तक जबानी याद कर लेता था

और इसमे कोई तकलीफ नही होती थी। यही वजह है कि पूरबीदी और शेखरबाबू की शरारत मेरी आँखो को धाखा नही दे सकी।

और एकाध घण्टे तक मच पर बैठा रहा था। भुवनेश्वरी ने जब सन्दूक से साने का गहना निकालकर ललिता की देह पर लाद दिया और खुशखबरी सुनाने को बडे लडके अविनाश के कमरे मे गयी, उस समय कलाई की घडी की ओर देखा। रात के डेढ बज चुके थे। अभिनय के अन्त मे जब सभी कलाकार मच पर आ सिर झुका कर दशको के उदार आशीर्वाद ग्रहण कर रहे थे, उस समय भी पूरबीदी को शेखर बाबू के पास देखा। सभी श्रोताओ की ओर ताक रहे है। सभी मुग्ध हैं। मैंने देखा, पीछे की ओर शेखर बाबू और पूरबीदी के हाथ आपस मे मिल रहे हैं।

अधिकाश दशको के चले जाने के बाद दीपाली चक्रवर्ती, लतिका गुह, गगा मजुमदार, यूथिका बैनर्जी, तरुलता भट्टाचार्य, प्रतिमा ब्रह्मचारी वगैरह प्रमुख महिलाओ ने आकर पूरबीदी का अभिनन्दन किया। दूसरे दिन सवेरे महिलाओ की एक स्वागत-सभा मे आने को आमन्त्रित किया। पूरबीदी की आपत्ति की परवाह न कर डाइरेक्टर से कहकर कार्यक्रम निश्चित कर लिया और महिलाओ का दल वापस चला गया।

स्टेशन रवाना होने की अनुमति पूरबीदी से लेने गया मगर अनुमति मिली नही। बोली, "बच्चू, तेरा दिमाग क्या खराब हो गया है कि रात दो बजे स्टेशन जायेगा? आज हम लोगो के साथ स्कूल मे सो जा, सुबह उठकर चले जाना।"

पूरबीदी ने स्कूल मे गिरीन बाबू के कमरे मे मेरे सोने का इन्तजाम कर दिया। मैं लेट गया। पलके बोझिल हो गयी है, ऐसे मे दरवाजे पर खट खट् आवाज़ सुनकर मेरी तन्द्रा दूर हो जाती है। पूरबीदी की आवाज़ सुनकर उठ बैठा, दरवाजा खोल दिया। मुझे पुकार कर कहा, "बच्चू, जरा मेरे कमरे मे चला आ।"

गिरीन बाबू नीद मे खो गये थे, दरवाजे के पल्लो को भेडकर मैं पूरबीदी के कमरे मे चला गया।

मैंने ज्यो ही कमरे के अन्दर कदम रखा, पूरबीदी ने दरवाज के पल्ले भेड दिये। स्नेह के साथ मुझे अपनी बगल मे बिठाया। पशानी पर से मेरे बाल की लट हटाते हुए बोली, "बहुत दिनो के बाद तुझसे मुलाकात हुई, है न यह बात ?"

तथाकथित एमेच्यार थियेटर पार्टी की एक्टेसो के सबध मे ढेर सारी कहानिया सुन चुका था, लेकिन पूरबीदी को मैंने उस तरह का नही सोचा था। फिर भी इस गहरा रात मे दरवाजे के पल्ले भेडकर पूरबी दी का मुझे अपने बिलकुल निकट बिठाना सन्देह का कारण हो गया। पूरबीदी को मैं बचपन से ही देखता आ रहा हूँ, इनके परिवार के लोगो से मेरा घनिष्ठ सबध रहा है। कालेज मे दाखिल होते न होते देश के वधमान के मकान मे पूरबादो की शादी मुफस्सिल के एक प्रोफसर से हुई थी। फिर भी गृहस्थी छोडकर शौक से थियेटर मे शामिल हो घूमती फिरती है, यह बात मेरी समझ मे नही आती थी और न समझने की मैंने कभी कोशिश ही की। पूरबीदी का अभिनय इसके पूर्व न देखने पर भी उनके अभिनय की प्रशसा सुन चुका था। बीच बीच मे छोटी मोटी सिनेमा पत्रिका मे उनकी तसवीर भी देख चुका हूँ। शुरू मे पूरबी-दी के रूप-गुण की कहानी सबका मालूम थी। हम भी इस तथ्य से परिचित थे। इधर कई वर्षो के दरमियान पूरबीदी के चाल-चलन मे बदलाव आया है या नहीं, यह मैं नही जानता था। लेकिन आज एक तरह के सन्देह ने मुझे धर दबाया।

अपन मन का सन्दह जाहिर न कर मैंने पूरबादी के सवाल का जवाब दिया। "हाँ, कई साल बाद आपसे मुलाकात हुई।"

पूरबी दी ने मुहल्ले और दसिया व्यक्तियो के साथ माय भाभी का भी हाल चाल पूछा। शपू किये बाला पर कघी की, ड्रेसिंगगाउन का बेल्ट ठीक किया। मैंने पूरबीदी की ओर गौर से देखा। उम्र मे व

मुझसे कई वर्ष बड़ी हैं, परन्तु ऐसा लग नही रहा है। जिस्म आज भी कसा हुआ है, आँखो की दृष्टि मे अब भी आकर्षण है। हल्के बँधे ड्रेसिंग-गाउन के अन्तराल मे पूरबीदी के यौवन के उष्ण प्रस्रवण के छींटे मेरी देह के सभी अंगो को छू रहे थे। लेकिन जो इन अगारा को फॅक रही थी, उनका ध्यान इस ओर नही था। मुझे फिर नये सिरे से डर लगने लगा।

खाट पर हम दोनो अगल-बगल बैठे थे। मेरे हाथ को खीचकर पूरबीदी बोली, "मुझे पता चल गया था कि तू जर्नलिस्ट हो गया है। बहुत ही अच्छे प्रोफेशन मे चले गये।"

मैंने कुछ जवाब नही दिया, चुप्पी ओढे बैठा रहा। अभिनेत्री की बगल मे बैठे रहने के कारण मेरी नीद भाग गयी थी, यह सच है, लेकिन दिन-भर की थकावट भागे तो कहा भागे? दीवार पर पीठ टेक चारपाई पर पाव समेट कर बैठ गया। कहा, "आपकी ऐक्टिंग की तारीफ पहले ही सुन चुका था, आज देखने का मौका मिला। आप इतनी अच्छी ऐक्टिंग करती हैं, मैंने सपने मे भी नही सोचा था।"

"लगता है, तुझे बहुत ही अच्छी लगी।"

"मुझे ही क्यो, सबको बहुत अच्छी लगी," मैंने कहा। जरा शरारत के साथ कहा, "शेखर बाबू ने भी बहुत अच्छा अभिनय किया था, खासकर छत वाले दृश्य मे।"

पूरबीदी बोली, "अभिनय वे अच्छा ही करते हैं, लेकिन "

"लेकिन क्या?"

"अवसर से अधिक लाभ उठाते हैं।" लहमे-भर चुप रहने के बाद बोली, "चूंकि वे अच्छी एक्टिंग करते हैं इसलिए मैं भी कुछ कह नही पाती। आफ्टर ऑल, अच्छा पार्टनर तो चाहिए ही।"

मैंने सन्तुष्ट होने का भाव दिखाया। उसके बाद कहा, "आपने क्यो बुलाया था, यह तो बताया ही नही।"

पूरबीदी और निकट खिसक आयी और अपने दाहिने हाथ को मेरे

कधे पर रख दिया। कोमल स्पर्श के कारण मेरे शरीर मे एक लहर दौड गयी, फिर भी मैं सिकुडा-सिमटा बैठा रहा। पूरबीदी ने कहा, "कई लाख रुपये का इन्तजाम करना मेरे लिए बहुत जरूरी है। बाबू जी ने मेरी शादी के मौके पर तिलक के अलावा पच्चीस हजार रुपया नकद देने का वादा किया था, लेकिन पाँच हजार से ज्यादा दे नही सके। वादा किया कि बाद मे दे देंगे लेकिन बाकी पैसे के लिए मेरे ससुर पागल हो गये। जानते हो भैया, विवाह के दिन ससुर जी ने मेरे बाबू जी को गन्दी-गन्दी गालियाँ दी थी। प्रीतिभाज के दिन पिता जी को अपमानित होकर मेरे ससुराल से लौट जाना पडा था।"

पूरबीदी लहमे-भर के लिए चुप हो गयी, विचारो के सागर मे डुबकी लगाकर किसी वस्तु का मथन करने लगी। आँखो के कोने मे आसू के कुछ कतरे झलमलाने लगे। पूरबीदी बोली, "जानते हो बच्चू, प्रतिहिंसा-वश सास ने मुझे एक दिन भी पति के कमरे मे जाने नही दिया। यही नही, अष्टमगला मे मायके आने के बाद मुझे कोई लिवाने नही आया। मा और बाबू जी जब जिन्दा थे तो कई बार उनके पैरो पर पडकर गिडगिडाये लेकिन उन्हे अपमान और तिरस्कार के अलावा कुछ भी नही मिला।'

मेरे मुह से एक भी शब्द नही निकला। आश्चर्य मे आकर मैं पूरबीदी के चेहरे की ओर देखने लगा।

लबी सास लेने के बाद पूरबीदी बोली, "पति के रहते विधवा-जीवन जीने के मेरे दुख को देखकर माँ-बाप इस दुनिया से विदा हो गये।"

अपने हाथ से मेरा चेहरा अपनी ओर घुमाकर पूरबीदी ने उत्तेजना के साथ कहा, "तुझे एक काम कर देना है। मुझे फिल्म का एक कॉन्ट्रैक्ट मिला है लेकिन अच्छी पब्लिसिटी न मिलने पर नया कॉन्ट्रैक्ट मिलना मुश्किल है। सिनेमा की पत्र-पत्रिकाओ मे ग्लैमर गर्ल की तरह मेरी बहुत सारी तसवीरें तरह तरह के पोजो मे प्रकाशित करवा देनी हैं।" थूक निगलकर बोली, "अपने ससुर की अनन्त तृष्णा को शान्त करने के

लिए मुझे ढेर सारा पैसा चाहिए "

मैंने कहा, "आप यह क्या कह रही हैं ?"

"ठीक ही कह रही हूँ ।"

आँखों में रक्तिम आभा लिए पूरबीदी चिल्ला उठी, "फालतू बात मत कर बच्चू ।" उसके बाद कोमल स्वर मे बोली, "तेरी क्या यह धारणा है कि मैं असूर्यंम् पश्या और चरित्रवती हूँ ?" वीभत्स हँसी हँसते हुए बोली, "किसके लिए इस जवानी को बांधे रखूं ? जरूरत पड़ेगी तो आज इस रात मे मैं "

मैं चिल्ला उठा, "पूरबीदी !"

तेज़ कदमों से चलकर बरामदे पर आकर ठिठक कर खडी हो गयी। पूरबीदी की अविराम रुलाई और दुख-शोक से मैं कैसा-कसा तो हो गया ! पत्थर की मूरत की तरह सिर झुकाये चुपचाप खडा रहा। काफी देर तक इस तरह खडे रहने पर भी अपने कमरे मे नही जा सका। पूरबीदी के कमरे के अन्दर चला गया। तकिये मे मुँह छिपाकर वे तब भी रो रही थी।

मैंने हौले से पूरबीदी का मुखड़ा ऊपर उठाया। उनमे मेरी ओर ताकने की शक्ति न थी। बगैर कुछ कहे पूरबीदी ने मुझे अपने सीने मे भर लिया। बोली, "बच्चू, मुझे क्षमा कर देना। हो सके तो मुझे गलत नही समझना, मुझसे नफरत नही करना।"

मैंने झिड़की-भरे स्वर मे कहा, "आप अनाप-शनाप क्या बक रही है ? आपको गलत क्यों समझूगा या आपसे नफरत ही क्यों करूंगा ?"

पूरबीदी को मैंने उनके बिस्तर पर लिटा दिया। कहा, "सो रहिये।"

"अब नींद नही आयेगी। लेकिन मुझे छोड़कर चले नही जाना। मुझे डर लग रहा है, बेचैनी महसूस हो रही है।"

वह रात पूरबीदी की बगल मे ही बैठकर गुज़ार दी। भोर के समय तन्द्रा ने मुझे दबोच लिया। कब पूरबीदी उठकर मुझे अपने बिस्तर पर सुलाकर चली गयी थी, इसका पता नही चला।

पूरबीदी की पुकार पर जब मेरी आँखें खुली तो आठ जरूर बज चुके थे। वे तैयार हो चुकी थी, मुझे भी जल्द से जल्द तैयार होने को कहा। अन्तत वे मेरे साथ स्टेशन आयी और कलकत्ते को टिकट खरीदी।

पूरबीदी के साथ कलकत्ता वापस आने के कुछ महीने बाद दफ्तर में अचानक बातचीत के सिलसिले मे 'चलन्तिका' और पूरबीदी की चर्चा छिड गयी। अमियदा ने उत्तेजित होकर मुझे पुकारा, "बच्चू, जरा जल्दी आकर सुन जाओ।"

बरामदे के एक किनारे ले जाकर अमियदा ने बहुत ही आहिस्ता से पूछा, "अच्छा, यह तो बताओ कि उसका नाम क्या पूरबी चौधरी है? घर बधमान?"

मैंने कहा, "हाँ, मगर आप यह सब क्यो जानना चाहते हैं?"

अमियदा ने मेरे मुँह पर अपना हाथ रखते हुए कहा। "भाई, उसके बारे मे किसी से और कुछ नही कहना "

फिर भी मैंने कहा, "मगर "

"अगर-मगर नही भाई। किसी से उसके बारे मे कुछ नही कहना। पूरबी मेरी पत्नी है।"

प्रवीण होकर नवीन का स्वागत करें, हममे से अधिसख्यक लोगो मे यह उदारता नही मिलेगी। कॉलेज के फोर्थ इयर के छात्र-छात्राएँ फस्ट इयर के छात्र-छात्राओ को बच्चा समझकर उनके प्रति अनुकपा का भाव रखते हैं। पत्रकारिता की जिन्दगी मे भी मुझे इस अनुभव के दौर से गुजरना पडा था। चीफ रिपोटर तारादा की टिप्पणी, आज के टिकट-कलक्टर और गये दिनो के रिपोटर बाबू का अपमानजनक मतव्य मुझे भूला नही है और न भूलेगा ही।

तारादा या काठी बाबू को मैं इसके लिए जिम्मेदार नही ठहराता। क्योकि यह हमारा जातीय स्वभाव है। सरकारी या व्यावसायिक कार्यालय के कर्मचारी को भी इस अनुभव से गुजरना पडता है।

तारादा या काठी बाबू की तरह मैं अपने पत्रकार-जीवन के अनुजो के प्रति अनुकपा का भाव प्रदर्शित नही करता था। और ऐसा इसलिए नही कि मैं उदार हृदय का हूँ, बल्कि इसलिए कि बीते दिनो की स्मृति मेरे मन मे मौजूद थी। बातचीत मे ज़रा भी त्रुटि होती तो मुझे "दैनिक सवाद" कार्यालय के प्रथम दिन की याद आ जाती। यही वजह है कि अनिल बैनर्जी का जिस दिन पहले-पहल हमारे दफ्तर मे आगमन हुआ, चेहरे पर हँसी ले उसे चाय पिलाये बगैर रह नही सका। अनिल यद्यपि बहुत दिनो तक हमारा सहकर्मी नही रहा लेकिन आज भी विद्या-बुद्धि और रसबोध की याद किये बगैर रह नही पाता।

'दैनिक सवाद' का सवाददाता बनने की खातिर नियमित तौर से बहुतेरे गुणी, ज्ञानी और मूख आते थे और हरिदा उनमे से एक को हम लोगो मे से किसी के हाथ सुपुर्द कर देता था। अनिल इन नवागन्तुको से कहता, "राशन का चावल खाने मे हालाकि तकलीफ पहुँचाता है, मगर लेने के अलावा दूसरा कोई उपाय नही।"

कुछ दिनो के बाद हमे पता चला कि अनिल हम लोगो के ट्रेनिग-डिपार्टमेन्ट का इचाज हो गया है। सवाददाता बनने के ख़याल से कोई आता तो हरिदा अनिल को फोन से कहता, "अनिल, वैद्यनाथ गोस्वामी को भेज रहा हूँ। ज़रा देख लो कि इनसे काम हो सकेगा या नही।" हम लोग अनिल को मजाक मे 'प्रोफेसर' कहते।

और-और छात्रो की नाईं साहित्यिक सवाददाता होने का सपना ले देवतोष चक्रवर्त्ती प्रोफेसर के पास आया।

एक हाथ मे जीवनानन्द की 'वनलता सेन' और दूसरे से धोती की चुन्नट सँभाले देवतोष नीलाजना पछी की तरह वीतराग हो इटरव्यू देने आया।

"लिखाई-पढाई कहाँ तक हुई है ?" प्रोफेसर ने पूछा।

"स्पेशल बेंगाली लेकर बी० ए० पास किया है।"

"वेरी गुड।"

"संवाददाता बनना चाहते हैं ?"

"साहित्यिक संवाददाता।"

अनिल ने आश्चर्य के साथ देवतोष की ओर देखा। बोला, "यह कैसे हो सकता है ? आप अकेले एक ही साथ बहू बाजार और सेंट्रल एवन्यू का चक्कर कैसे काटिएगा ?"

प्रोफेसर का सवाल छात्र को ठीक-ठीक समझ मे नही आया।

"ठीक से समझ नही सका।"

आँख फैलाकर अनिल ने गुरु गभीर स्वर मे कहा, "पत्रकारिता बहू बाजार स्ट्रीट है और सेंट्रल एवन्यू है साहित्यकारो का स्थान। इसीलिए मैंने कहा था कि आप अकेले इन दो रास्तो पर कैसे चहल-कदमी कीजिएगा ? आप अगर दो आदमी होते तो फिर कोई कठिनाई नही होती।"

देवतोष ने सूचित किया कि वह रविवार के मैगजिन सेक्शन मे काम करना चाहता है, जहाँ साहित्य-साधना के साथ-साथ पत्रकारिता का काम भी चलेगा।

मेज थपथपाकर अनिल ने कहा, "आइ सी।"

इसके बाद देवतोष का प्रशिक्षण शुरू हो गया। पहले दिन प्रोफेसर ने कहा, "किले का मैदान पहचानते हैं न ? ठीक है, वहाँ चले जाइये। देखिएगा, खाली मैदान मे पावर लीग का मैच चल रहा है, उसी मैच के बारे मे रिपोर्ट पेश कीजिये।" दूसरे दिन प्रोफेसर ने कहा, "बेलघरिया चले जाइये। वहा के गोपाष्टमी मेले पर कल एक फीचर लिख कर ले आइएगा।"

देवतोष दूसरे दिन नही आया। प्रोफेसर ने सोचा, शायद उम्मीद पर पानी फिर गया। लेकिन बाद वाले दिन फिर आया। देवतोष पर नजर जाते ही अनिल चिल्ला उठा, "कल आप कहा थे ? भवशकर बाड्ज्या आपसे बातचीत करने आये थे और आप आये ही नही ! क्या करते हैं आप !

देवतोष ने स्वय को अपराधी समझा। होठ काटते हुए बोला, "क्या करूँ ! वेलघरिया के बारे मे लेख खत्म न होने के कारण "

प्रोफेसर ने इसके बाद बोलने नही दिया। "ठीक है, परवाह नही। हाथ बढाकर बेलघरिया की रिपोट लेते हुए बोला," आज आपको छुट्टी दी जाती है लेकिन कल और परसा दिन-भर काम है।

कल शनिवार होने से क्या होगा, सवेरे से हो लोग जा रहे है और परसो का तो कुछ कहना ही नही। आप दोनो दिन सुबह ही उठकर चले जाइएगा, क्योकि कोई साधारण बात नही, क्वीन्स कप का खेल है।" प्रोफेसर ने हँसते हुए कहा, "इसके अलावा कोलम्बो से जैक रूबी आ रहा है। जानते हैं न यह बात ?"

सजय भटटाचार्य की कविता की पुस्तक हाथ मे थामे देवतोष बव-कूफ की तरह ताकता रहा। बस इतना ही पूछा, "क्या कहा ?"

"हम लोगा के रेस की बावत कह रहा था। खूब अच्छी तरह रिपोट कीजिएगा। क्वीन्स कप का खेल है। बहुत ही सीरियस मामला है।"

जाने के पहले अनिल ने देवतोष का रेस का काड दिया।

एकाध महीने तक इसी तरह ट्रेनिग चलने के बाद प्रोफेसर ने देव-तोष से स्पोट् स रिपोटर बनने को कहा।

देवतोष चौक पडा। कहा, "यह आप क्या कह रहे है ? मैं लिट-रेचर का छात्र हूँ, स्पोट् स मे जाकर क्या करूँगा ?'

"देवतोष बाबू, इसमे चौकने की कोई बात नही। लिटरेचर के छात्र होने के नाते आप बखूबी स्पोट् स रिपोटर बन जाइएगा। सक्सेस-फुल जर्नलिस्ट हाना मामूली बात नही। एकोनोमिक्स का बढिया छात्र हुए बग`र कोई सिनेमा-एडिटर नही हो सकता, अच्छे स्पोट् समैन ही आमतौर से असिस्टेन्ट एडिटर होते हैं। इसके अलावा पॉलिटिक्स का बढिया नॉलेज रहने पर भी कामयाब स्पोट् स रिपोटर वना जा सकता है। इसके अलावा आपको क्या मालूम है कि किसी तरह का स्पेशल

क्वालिफिकेशन न रहने पर ही अच्छा रिपोटर बना जा सकता है ?"

देवतोष ने घर के लोगो से सलाह-परामर्श लेने के खयाल से कोई वचन नही दिया। बताया कि बाद मे सूचित करेगा। लेकिन देवतोष ने फिर कभी दैनिक सवाद कार्यालय मे पाँव नही रखे। एक-दो वर्ष बाद एक पोस्टकार्ड लिखकर उसने अनिल के प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी और पुरुलिया मॉडर्न स्कूल मे शिक्षक का काम करने की सूचना दी थी।

अनिल के प्रशिक्षण के तौर-तरीके का हम मजाक उडाते थे लेकिन मन ही मन विश्वास भी करते थे कि उसी की बात सच है। क्योंकि ऐसा न होता तो मुझ जैसे नास्तिक को तारादा कभी सनातन महा-समिति के सर्वभारतीय सर्वधर्मसम्मेलन मे नही भेजते। एक सप्ताह तक साधु-सन्यासियो के सत्सग मे रहने की सभावना से मेरा माथा चकराने लगा। तारादा के सामने हाथ जोडने और अनुनय-विनय करने पर भी कोई फायदा नही हुआ। तारादा बोले, "तुम्हारे जैसा विशुद्ध नास्तिक ब्राह्मण कहा मिलेगा ? तुम्हारे अतिरिक्त कोई दूसरा यह काम नही कर सकेगा।"

"क्या ?" मैंने पूछा।

तारादा ने कहा, "धार्मिक व्यक्ति को भेजूगा तो सब कुछ बर्बाद हो जायेगा। इस सप्रदाय के किसी आदमी को भेजूगा तो आनन्द से गद्गद होकर बहुत ज्यादा लिख देगा। किसी दूसरे सप्रदाय का भक्त भेजूगा तो क्रोध और विद्वेष से, हो सकता है, सनातन सम्मेलन के विरुद्ध लिख दे। इसलिए ठीक-ठीक रिपोट लिखने के लिए तुम्हारे सिवा कोई दूसरा आदमी नही है।'

इस महासम्मेलन मे मुझे भेजने का एक और कारण था। स्वय सपादक हरिसाधन मित्तिर इस सम्मेलन की स्वागत-समिति के प्रमुख थे और उन्होने ही कार्ड पर लिख दिया था—तारा, बच्चू को भेजना।

अन्तत एक लबी और जोरदार उसास ले मैं सर्वधर्म सम्मेलन का

काड थामे घर चला आया। दरवाज़ा खोलते ही भाभी ने देखा, मैं गा रहा हूँ—सब कुछ यहाँ तुम्हारी इच्छा, तुम इच्छामयी तारा। अपना कर्म आप तुम करती, सब कहता मैं करता। इसके बाद फिर मैं 'सब कुछ यहाँ' कहकर ज़ोरो से आलाप ले ही रहा था कि भाभी मेरा कान पकड कर बोली, "सच-सच बताओ बच्चू, आज तुम किसकी बर्बादी करके आये हो कि "

मैं उछल पडा। बोला, "छुओ नही, छुओ नही बधु "

"नखरे करने मे तो बहादुर हो!" भाभी ने होठ टेढा कर कहा और चली गयी।

सर्वभारतीय जसे विशाल धर्म महासम्मेलन की रिपोट के लिए मुझे भेजने की बात सुनकर भाभी को आश्चय हुआ।

निरामिष नही, आमिष खाना खाकर ही मैं सात दिन धर्म सम्मेलन गया था। सम्मेलन के दूसरे दिन लाउज मे बैठे-बैठे कुछ पढ रहा था, तभी एक महाराज मेरे सामने आकर बैठ गये। कुछ देर के बाद जान-पहचान हुई। महाराज के नाम और परिचय से अवगत हुआ। अन्त मे महाराज बोले, "बदरीनाथ, शृ गेरी, द्वारका और पुरी के शकर मठ की बात छोड दी जाये तो हम लोगो के मठ से पुराना कोई दूसरा मठ भारत मे नही है। इसके अलावा चार वेदो मे से तीन की मूल टीका हमी लोगो के मठ मे है। कही दूसरी जगह यह चीज़ नही मिलेगी।"

मैं ज़रा दूर बैठा था, महाराज ने स्नेह के साथ मुझे अपने निकट बिठा लिया। बोले, "दूर क्यो, निकट चले आओ।"

घबराकर मैंने सयत स्वर मे निवेदन किया, "एक तो मैं मूख, अख़बार का रिपोटर, उस पर अज्ञानता से परिपूण। आपके पास किस अधिकार से बेठू ?'

महाराज के चेहरे पर मधुर हँसी खेल गयी। मेरे सिर पर हाथ रखकर बोले, "अपने अधिकार-अनधिकार की विवेचना करने का अधिकार तुम्हे किसने दिया ? तुम अपना काम कर रहे हो, में अपना।

तुम्हे तुच्छ समझू, इसका कोई कारण मेरे पास नही है। भगवान् श्रीकृष्ण, बुद्धदेव, ईसा, शकराचाय, रामकृष्ण, चैतन्य, विवेकानन्द—ये लोग हम तुम जैसे रक्त मास के ही मनुष्य थे लेकिन अपनी साधना के कारण वे ईश्वर के रूप मे मारी दुनिया मे पूजे जाते हैं। इसके अलावा गुरु महाराज ! थे तो वे मात्र एक साधारण दुकान-कर्मचारी, लेकिन अन्तर की प्रेरणा के बल पर उन्होने भी अँधेरे मे रास्ता खोज निकाला था और उम चिरानन्दमय परमपुरुष भगवान के दशन किये थे।"

मुँडे माथे और गेरूआ वस्त्र मे स्वामीजी महाराज बहुत ही अच्छे दीख रहे थे। गुरु महाराज की बात शुरू करते ही उनके चेहरे पर सौ गुना दमक आ गयी। देखकर मुझे बहुत ही अच्छा लगा। महामारा मुड कर बैठ गये। बोले, "देखो, प्रत्येक आदमी के मन मे एक लालसा होनी चाहिए कि जो कुछ देख चुका हूँ, जो कुछ प्राप्त हो रहा है, उससे परे कुछ देखना और पाना है। माधारणत मनुष्य मे यह लालसा सहज ही नही आती, लेकिन जब आती है तो बाढ के पानी की तरह सब कुछ बहा देती है।"

महाराज मुसकराये। स्नेह के साथ मेरे माथे के हाथ से सहलाते हुए बोले, "कौन कह सकता है कि तुममे चिनगारी है या नही ?" जरा चुप हो गये, फिर बोले, "किसी दिन हमारे आश्रम मे आओ।"

मैं 'ना' नही कह सका। कहा, "जरूर आऊँगा।'

मैं आस्तिक हूँ या नास्तिक, यह नही जानता। देवी देवताओ के बारे मे कभी सोचता नही था। लेकिन मुसीबत आती तो हाथ जोडकर ईश्वर से दया की भीख माँगने मे दुविधा का अनुभव नही होता था। साधु-सन्यासियो को देखते ही मेरे मन मे भक्ति भाव का उफान नही आता था। लेकिन आज ब्रह्मचारी सन्यासी मुझे बहुत अच्छे लगे। हो सकता है, मेरे मन मे तनिक भक्ति-भाव भी आ गया हो, लेकिन ठीक-ठीक याद नही।

सर्वधर्म महासम्मेलन के समाप्ति-अधिवेशन मे स्वामी जी महाराज

ने एक सारगर्भित भाषण दिया। न मालूम क्यो स्वामीजी महाराज के भाषण की खासी बडी रिपोर्ट मेरी कलम से लिख गयी जो दूसरे दिन के दैनिक सवाद के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित हुई। छपे हुए हरूफो मे अपनी रिपोर्ट देखने के बाद ध्यान मे आया कि बहुत बडी रिपोर्ट लिख गया हूँ।

लगातार सात दिनो तक दोनो वक्त इस महासम्मेलन की कार्यवाही का सवाद लेते लेते बिलकुल थक गया था। तारादा का बिना जताये दो दिन ऑफिस से गायब रहा। तीसरे दिन जरा शर्मिन्दगी के साथ दफ्तर के अन्दर प्रवेश करने जा रहा था, लेकिन कमरे के दरवाजे के पास पहुँचते ही तारादा बोले, "आओ आओ बच्चू। कग्रेचुलेशन फॉर योर ग्रैण्ड कवरेज।"

इतना ही काफी था परन्तु तारादा और दो कदम आगे बढ आये। पुकारा, "लावण्य! बच्चू के लिए डब्ल अडे का एक मामलेट और दो चाय।"

हम लोगो के दफ्तर मे डब्ल मामलेट खाने लायक कोई रोजगार नही करता था, यह बात वनमाली को अच्छी तरह मालूम थी। कभी-कदा बाहर से कोई आ जाता तो इस प्रकार की दुष्प्राप्य वस्तु का आदेश दिया जाता था। यही वजह है कि लावण्य की बात पर वनमाली को यकीन नही हुआ। वनमाली कैन्टिन से भागा-भागा आया और बोला, "तारा बाबू, सचमुच क्या डब्ल अडे का मामलेट भेज दूँ?"

तारादा की डाट सुनते ही वनमाली ने चाय-मामलेट भेज दिया। हम सभी ने शोर-शराबे के साथ मामलेट खाया। मामलेट खाने के बाद अनिल चम्मच चाटते हुए बोला, "कितने दिनो के बाद मामलेट खाने को मिला।"

प्लेट हाथ मे लिए बारीन बोला, "फिर कब खाने को मिलेगा, कौन जाने।"

सिगरेट का कश लेते हुए जब अनिल, बारीन और बाकी लोग बाहर

निकल गये तो मैंने तारादा से पूछा, "बात क्या है ?" "बात और क्या होगी ! साधु सन्यासियो की जमात अखबार में कार्यवाही का सवाद देखकर प्रसन्न है, सभी ने तुम्हारे लेखन की तारीफ की है। कइयो ने तुम्हारी खोज मे हमें परेशान कर मारा। खर, तुम एक बार हरिदा से जाकर मिल आओ।

हरिदा के पास जाने पर सुनने को मिला कि 'अनादि अनन्त आश्रम' के स्वामी जी महाराज ने मुझे बुलावा भेजा है। यह समाचार देकर हरिदा बोले, "अनादि अनन्त आश्रम से पुराना कोई प्रतिष्ठान भारत मे है या नही, इसमे सन्देह है और स्वामी जी महाराज कम से कम दस-पन्द्रह लाख लोगो के हृदय सम्राट हैं।"

हरिदा के कहने का मकसद यही था कि ऐसे महाजन की मैं अवहेलना नही करूँ। मैं चुपचाप रहा। लेकिन अन्तत ऐसी परिस्थिति आ गयी कि टालीगज के इस आश्रम मे गये बिना नही रह सका।

महाराज ने स्वय मेरा स्वागत किया। धम महासम्मेलन के अपने भाषण के विस्तृत प्रकाशन के लिए बहुत बहुत धन्यवाद दिया। बोले, "तुम जैसे रिपोटरा के हाथ में बेहद क्षमता है। इस क्षमता का सदुपयोग किया जाये तो बहुतो की भलाई हो सकती है।

"हम लोगो के हाथ मे कौन-सी क्षमता है ?"

"क्या कह रहे हो तुम ! दस-बीस अच्छी-बुरी चीजें लिखकर अखबार मे छपवा तो सकते ही हो।"

मैंने कहा, "जी हा, इतना ही कर सकते हैं, इससे अधिक कुछ नही।"

महाराज ने सन्तुष्ट होकर कहा, "यही तो सबसे बडा हथियार है।'

समवेत शिष्य-शिष्याओ से महाराज ने मेरा परिचय इस तरह कराया जैसे मैं 'न्यू याक टाइम्स या 'लण्डन टाइम' का सपादक होऊँ।

कीमती फल-मिठाई खाकर उस दिन मैं वहाँ से विदा हुआ।

कुछ दिन बाद एक युवक स्वामी जी महाराज के एक भाषण की रिपोट मेरे डेरे पर आकर दे गया। कई दिन बाद महाराज का टेलीफोन

आने पर समझ गया कि रिपोट का प्रकाशन हो गया है। इसके बाद मेरे आश्रम आने-जाने के सिलसिले और दैनिक सवाद मे महाराज के भाषण के प्रकाशन की मात्रा मे वृद्धि आ गयी। साल पूरा होते न होते महाराज का शिष्य न होने के बावजूद मै उनके इनर कैबिनेट का सदस्य हो गया। धीरे-धीरे शिष्यो का भी अपना आदमी हो गया।

युवावस्था मे इतने बडे आश्रम का एक प्रमुख व्यक्ति हो जाने पर मेरा मन आत्म-सन्तोष से परिपूर्ण हो उठा था। लाखो गुणी-ज्ञानी शिष्यो के रहने के बावजूद महाराज मुझपर अतुल स्नेह उडेलते हैं, यह जानकर मुझे गर्व का अनुभव होता था। शिष्य मडली के बीच जज-बैरिस्टर, वकील-मुक्तार, सरकारी कर्मचारी, मास्टर-प्रोफेसर, डाक्टर-इजीनियर इत्यादि की अपार सख्या रहने के बावजूद एक भी पत्रकार न था। यही वजह है कि शिष्य न रहने के बावजूद अनादि अनन्त आश्रम मे मेरी इतनी पूछ होती थी। इस बात से उन दिनो खुशी होती थी लेकिन आज दुख होता है। लगता है, महाराज से जान-पहचान न हुई होती तो अच्छा रहता। शिष्यो के साथ घनिष्ठता न हुई होती तो मन मे शान्ति का अनुभव होता।

गृहस्थ-जीवन मे हर स्तर के आदमी मे शान्ति का अभाव रहता है। भगवान की विचित्र लीला से सतानहीन करोडपति मात्र एक संतान के लिए कगाल की तरह मारा-मारा फिरता रहता है, और दूसरी ओर दरिद्र आदमी सन्तान-सन्तति के साथ मुट्ठी-भर अनाज की उम्मीद मे उसी सन्तानहीन कोटिपति के दरवाजे पर भिक्षा पात्र लिए इतजार करता रहता है। बेरोजगार आदमी नौकरी के उम्मीद मे मन्दिर जाता है और उसी मूर्त्ति के सामने नौकरीजीवी तनख्वाह बढ़ाने की उम्मीद मे हाथ जोडे खडा रहता है। यही नही, लखपति-करोडपति बनने की उम्मीद मे लोग उसी मूर्त्ति से आशीर्वाद माँगते है। दुनिया मे कही किसी चीज मे शान्ति का वास नही है। परीक्षा मे फेल करने से घोर अशान्ति का अनुभव होता है, पास करने पर नौकरी न मिलने पर भी अशान्ति।

न करने से अच्छा नही लगता लेकिन शादी करने से भी शान्ति नही मिलती। गाहक सोचते हैं, दुकानदार ठग रहा है, दुकानदार सोचता है, महाजन ठग रहा है और महाजन सोचता है इतना रुपया लगाकर कौन-सा लाभ हो रहा है। म्युजिकल चेयर की तरह सभी चक्कर काट रहे है लेकिन आखिर मे सबको यही करना पडता है—

> सरिता का यह तट कहता है लेकर दीर्घ उसास
> सारा सुख उस तट पर बसता मेरा यह विश्वास।
> सरिता का वह तट बैठ-बैठे लबी साँसें भरता
> कहता, जितना कुछ सुख जग में इस तट पर ही रहता।

नदी के इस पार से उस पार पहुँच कर भी आदमी को जब शान्ति नही मिलती, उसकी आत्मा को तृप्ति नही मिलती तो भागकर सन्यासी के चरणो के तले जाकर आश्रय लेता है। आदमी अशान्त मन लेकर मठ जाता है, आश्रम के सन्यासियो के पास जाता है—इस उम्मीद मे कि शकराचार्य, चैतन्य, रामकृष्ण, विवेकानन्द के उत्तर साधको के पास उसे पदचिह्न प्राप्त होगा। ऐसा उम्मीद करना क्या अन्याय है? नही। मात्र बत्तीस वर्ष की उम्र मे शकराचार्य ने हिमालय की गोद मे देह-त्याग किया था, लेकिन दो हजार वर्षों के भारत के इतिहास को नये मोड पर लाकर खडा कर दिया था—पथभ्रष्ट भारतीयो का पथ-प्रदर्शन किया था। और विवेकानन्द? उन्होने भी यौवन और प्रौढत्व के सीमित परिसर मे रुग्ण, मलिन, रोगाक्रान्त, विकारग्रस्त जाति के वक्ष मे प्राणो का सचार किया था। आज के साधु-सन्यासियो मे उन साधको का कण-मात्र अश है? सबके बारे मे तो नही कह सकता लेकिन अधिसख्यको मे नही है—यह मै दावे के साथ कह सकता हूँ।

मठ के शिष्यो मे से किसी को पहचानता नही था लेकिन मठ के प्रमुख गुरुचरण बाबू को देखता तो वे पहचाने-पहचाने जैसे लगते। महाराज के साथ दक्षिण भारत जाने के समय मैंने ट्रेन मे गुरुचरण बाबू से

कहा था, "लगता है आपको कही देखा है मगर ठीक-ठीक याद नही आ रहा है।"

गुरुचरण बाबू ने इस बात को कोई तूल नही दिया था। बोले, "मुझे तो ऐसा नही लगता कि आपको कही देखा होऊँ।'

गुरुचरण बाबू ने भले ही मेरे सन्देह को कोई महत्त्व नही दिया लेकिन एक दिन ऐसा भी आया जब गुरुचरण बाबू का वास्तविक परिचय दिन के प्रकाश की तरह मेरे सामने स्पष्ट हो गया। चुनाव के समय दैनिक सवाद की एक रिपोट को मुद्दा बनाकर दो राजनीतिक दलो के बीच वाद-विवाद छिड गया। समाचार की सत्यता प्रमाणित करने के लिए हम तरह तरह के सूत्रो से समाचार एकत्र करने मे जी-जान से लग गये। तारादा राइटस बिल्डिंग्स की पुरानी दस्तावेज देखने लगे, अनिल दिन-भर नेशनल लाइब्रेरी मे रहने लगा, बारीन पुराने नेताओ के गिर्द चक्कर काटने लगा और मैं दफ्तर मे बैठ कर पुराने अखबार की फाइल लेकर खोज-पडताल करने लगा।

लगभग एक महीने बाद, पुराने अखबार की फाइल उलटने-पुलटने के क्रम मे एक तसवीर पर मेरी नजर गयी। गौर से देखने पर कपाल की दाहिनी ओर चोट की निशानी दीख पडी। अब मेरे मन मे कोई सन्देह न रहा। फिर भी समय और अवसर देखकर बहुत से पुराने लोगो से पूछताछ की। पता चला कि यह उन्ही की तसवीर है।

गुरुचरण हालदार मूलत बाँकुडा के निवासी थे। सातवे या आठवे दर्जे तक पढे थे, लेकिन अपने को मैट्रिकुलेट कहते थे। कुछ दिनो तक अठारह रुपये की स्कूल-मास्टरी और बाद मे अबला डॉक्टर के पास कपाउन्डर का काम करने के बाद गुरुचरण भाग्य की खोज मे सपरिवार कलकत्ता चले आये। जब गुरुचरण कलकत्ते की सडको पर भाग्य की लडाई लड रहे थे, उस समय दुनिया के अधिकाश हिस्से मे भी धरती के भाग्य के लिए लडाई छिड गयी थी। जापान के आकस्मिक आक्रमण से पाल हावर हाथ से निकल गया, दक्षिण-पूर्व एशिया की अमरीकी नौसेना

चौकी पर तारांकित अमरीकी पताका के बदले सूर्य के देश की पताका फहराने लगी। असख्य युद्ध पोतो से घिरे रहने के बावजूद अग्रेज सिगापुर के भविष्य के सबध मे सदिग्ध हो उठे। जापान के विजय-अभियान के साथ-साथ भारत मे भी युद्ध का दबाव बढने लगा। लाल चेहरा और सफेद देहवाले खाकी वर्दीधारी लोगो से पूरा मुल्क भर गया। बगाल के गाव और शहर 'मित्र वाहिनी' की सेना से भर गये। रात-दिन सिर के ऊपर रोगटे खडे करने वाले विमान उडने लगे, जब-तब साइरन की आवाज होने से लोग-बाग परेशान हो उठे।

साम्राज्यवादी सैन्य-वाहिनी की उदर-पूर्ति के लिए अँग्रेज सरकार ने ठेकेदारो से कहा, "हाट-बाजार-दूकान जहाँ भी धान-चावल मिले, इकट्ठा करो। भाग्यवश गुरुचरण को एक ठेकेदार के फर्म मे नौकरी मिल गयी। धीरे-धीरे अपनी ईमानदारी का परिचय देकर वे ठेकेदार और सामरिक अधिकारी के प्रियपात्र बन बैठे। गुरुचरण प्रधान ठेकेदार के उपठेकेदार बन गये। डेढ-दो रुपये का केड्स और रेडीमेड ट्विल की कमीज उतार, गुडचडन हैलडार पैकर्ड कार पर सवार हो बगाल के हाट बाजार से चावल खरीदने लगे।

बगाल और बगालियो की जिन्दगी के चरम-बिन्दु पर पहुँचे अधकार पूर्ण दिनो का लबा इतिहास लिखा नही गया है हालाँकि पाँचवे दशक के मन्वन्तर की कहानी बगाली भूले नही होगे। लेकिन बगाली गुरुचरण हालदार को भूल चुके हैं, उनका कीर्ति-कलाप बिसरा चुके हैं। गुरुचरण की कृपा से ज्याद नही, सिर्फ पच्चीस लाख निष्पाप बगालियो को मृत्यु का वरण करना पडा था।

गुरुचरण के एक निकट आत्मीय से बहुत सारी रोमाचकारी कहानियाँ सुनने को मिली कि शुरू मे पन्द्रह लाख रुपये का चेक पाकर जब गुरुचरण चहकते हुए घर आये तो पता चला उनकी पत्नी तीसरी मजिल से एकाएक गिरकर मौत के मुँह मे समा चुकी है। पच्चीस लाख रुपये के रिजर्व बैंक के चेक की प्राप्ति का नतीजा और अधिक सुखकर

साबित हुआ। दोपहर की डाक से चेक आया था और रात मे एक ही खाट पर सुलाकर गुरुचरण को अपनी दो सन्तानो को केवडातल्ला मसान मे विसर्जित करना पडा था। सुना है, धर्म का नगाडा अपने आप बजता है, लेकिन इतने जोर से, इतनी जल्दी बजता है, इसका मुझे पता नही था।

गुरुचरण जैसे महापापी की जीवन-कथा लिखने को मैं जरा भी आग्रहशील नही था। तब हाँ, इतना आप जान लें कि पच्चीस लाख बंगालियो की हत्या करने के एवज मे गुरुचरण का बैंक-बैलेन्स एक करोड से डेढ करोड हो गया था। और, और उन्हे मात्र एक पत्नी और पाँच सन्तानो से हाथ धोना पडा था। गुरुचरण जैसे सिद्धहस्त व्यवसायी के 'प्रोफिट एण्ड लॉस एकाउन्ट' मे डेढ करोड रुपया लाभ ही दिखाया गया है।

गुरुचरण की कहानी का अन्त यही नही होता। बुढौती मे भी सींग निकल आया। लडके की शादी के लिए लडकी देखने गये तो खुद ही उस लडकी से शादी कर ली। कुछ दिनों के बाद पुत्र वधू और दूसरी पत्नी के एक साथ लडके पैदा हुए।

गुरुचरण को दूसरा लडका बडा ही गुणी निकला। कहा जाता है, उनके पास एक हरम था और सूरज के अस्त होते ही वे किसी मर्द की संगति बर्दाश्त नही कर पाते थे।

आश्रम मे ऐसे गुरुचरण को देखकर मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही। सोचा, कलकत्ते के दंगे के बाद जनाब सुहारवर्दी के मन मे जिस तरह विकार पैदा हुआ था, हमारे भक्त गुरुचरण मे भी शायद उसी तरह के श्मशान-वैराग्य ने जन्म लिया है।

बाद मे मालूम हुआ, नही; बात ऐसी नही है। मामला-मुकद्दमा बीमारी तथा सबसे बढकर लडको की उच्छृंखलता के कारण दस वर्ष के अन्तराल मे गुरुचरण सारी सपत्ति हाथ से जाने की स्थिति गये। बैंक का हिसाब-किताब बहुत दिनो मे देखने की जरूरत

पर भी एकाएक ध्यान मे आया कि बंक मे अब लाख रुपया भी नही है। और इसी समय कलकत्ते के सात मकान भी हाथ से निकल गये। शेर को लोहू का स्वाद मिल जाये तो निश्चिन्तता के साथ बैठ नही सकता। उसी तरह प्रचुरता के आनन्द मे गुरुचरण भविष्य के बारे मे सोच नही सके। 'जिन्दगी उनके लिए असहनीय जैसी हो गयी। लेकिन ठीक उसी समय बचपन के मित्र अमूल्य कुण्डु से मुलाकात हो गयी।

लेकिन यह अमूल्य कौन है ?

यह आज से बहुत दिन पहले की बात है। उन दिनो कलकत्ता भारत की राजधानी था। अविनाश कुण्डु अचानक गाहस्थ्य जीवन, व्यवसाय वगैरह छोडकर सन्यासी हो गये और 'अनादि अनन्त आश्रम' की स्थापना की। सन्यास-ग्रहण करने के बाद अविनाश कुण्डु गुरु जी महाराज के नाम मे विख्यात हो गये। पच्चीस-तीस वर्षों तक आश्रम का सचालन करने के बाद गुरु जी महाराज परलोकवासी हुए लेकिन मरने के पहले ही अपने पुत्र अमूल्य को तख्त-ताऊस पर बिठा गये थे। अमूल्य भी गृहस्थ था और आज भी उसकी गहस्थी है। अमूल्य कुण्डु की मृत्यु के बाद हमारे वत्तमान स्वामीजी ने जन्म लिया। अमूल्य कुण्डु के पुत्र जगदीश महाराज को दक्षिणा मे खासी अच्छी रकम प्राप्त होती है और उनके पाटनर के रूप मे हैं गुरुचरण हालदार। यह देखकर मुझे *हँसने का मन करता था कि पूजा, धूप-धूना के अन्तराल मे गुरुचरण* और अमूल्य बडे ही सलीके से अपने बीते दिनो को छुपाये हुए हैं।

बीच-बीच मे मेरे मन मे अजीब तरह का विचार आता था। सोचता, जब आम लोगो को उपदेश देने के लिए इतने नेता और साधु-सन्यासी नही थे, इतने मठ-आश्रम नही थे तो उस समय आम लोग आज की तुलना मे अधिक ईमानदार, नेक और विश्वासी क्यो थे ? बीते दिनो मे रामकृष्ण जो कुछ कर गये, आज एक लाख सन्यासी भी उसका सौवा हिस्सा कर पाते है ? नही। पहले एक ही विद्यासागर ने अकेले सघर्ष कर समाज का जिस रूप मे सस्कार किया था, आज लाखो समाजसेवी

सरकारी पैसा और सरक्षण पाने के बावजूद, समाज सस्कार के मामले मे उनकी तुलना मे शताश भी सफल क्यो नही हो पाते ? विपिन पाल, देशबधु चित्तरजन या नेताजी सुभाषचन्द्र के एक भाषण से अग्रेज सरकार का दिमाग चकराने लगता था लेकिन दर्जनो पार्टियो के सैकडो नेताओ की रात दिन के चौबीसो घण्टे की चिल्लाहट से सरकार तनिक मात्र विचलित क्यो नही होती ? बहुत दिनो के बाद स्वामीजी महाराज और गुरुचरण ने इन प्रश्नो का उत्तर स्पष्ट कर दिया था। मैं उन लोगो का कृतज्ञ हूँ।

बौना होकर चाँद छूने का प्रयास मैं नही करता था। दैनिक सवाद के पच्चीस रुपये के स्टाफ रिपोटर की सीमा क्या हो सकती है, इसका मुझे अहसास था। इसलिए अपनी सरहद के बाहर पैर रखने के पहले दसियो बार सोच लेता था, दो डग आगे बढता तो भय-सकोच से तीन पग पीछे हट जाता था। लेकिन बीच-बीच मे परिस्थिति मुझे बैशाख की आधी की तरह उडाकर ले जाती थी और अपनी सरहद के बाहर लाकर पटक देती थी। एकाएक इस तथ्य का पता चलता कि अपरिचितो से परिचित हो गया हूँ, अजनबियो को पहचान लिया है। ऐसा न होता तो लॉर्ड गजानन को मैं पहचानता ही कैसे ? कैसे उनसे जान-पहचान और घनिष्ठता हुई होती ? बैशाख की प्रबल आँधी न आयी होती तो मैं मिसेज डैफोडिल चौधरी को पहचानता ? मिसेज पैमेला मिटार को पहचानता ? लॉड से उनकी और उनको जैसी एक दर्जन सोसाइटी गल की दोस्ती और मुहब्बत की कहानी से वाकिफ होता ? दैनिक सवाद के प्रेस कार्ड को मैं प्रणाम करता हूँ, क्योकि मेरे पास यह पारपत्र न होता तो कलकत्ते के इन महात्माओ के सपर्क मे कभी नहो आता। नही जान पाता कि जलदा पाडा गेम्स सचुरी के फॉरेस्ट रेस्ट हाउस और कालिगपाग के चायबगान के मैनेजर की कोठी मे कितना

मजेदार खेल होता है। इसके अलावा पार्क स्ट्रीट और फ्री स्ट्रीट के दो फ्लैटों की रास-लीला से परिचित हो पाता? नहीं, यह सब कुछ भी नहीं जान पाता। जो प्रेस कार्ड दूर के व्यक्ति को निकट ले आया है, अनजाना से जिसने जान-पहचान करायी है, रहस्य का जिसने उद्घाटन किया है, उसे मेरा प्रणाम।

राइटर्स बिल्डिंग के चीफ मिनिस्टर के कमरे के सामने प्रेस-लाउंज में आमतौर से तीसरे पहर मजलिस जमती है। जो लोग सिर्फ स्टेनोग्राफरी सीखकर रिपोर्टर बने हैं, उनकी अपराह्नकालीन खानदानी मजलिस से मुझे कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए सवेरे आकर मैं दोपहर में वापस चला जाता था। इसके अलावा 'जाग्रत', 'जययात्रा पत्रिका', डेली न्यूज इत्यादि अखबारों की तरह हमारे यहाँ अधिक रिपोर्टर नहीं थे। हम तीन व्यक्ति ही सब कुछ करते थे। हर रोज तीसरे पहर को मुझे मीटिंग, प्रेस-कान्फ्रेंस वगैरह के लिए भाग दौड़ करनी पड़ती थी। उस दिन और-और दिनों की तरह दस बजे आकर ग्यारह बजे वापस जाने के समय प्रेस-लाउंज में भीड़-भाड़ देखकर खड़ा हो गया। भीड़ हटाकर देखा, एक लम्बे-चौड़े आदमी के साथ हमारे एक बंगाली साहब रिपोर्टर की बहस चल रही है। दो-चार मिनटों के बाद समझ में आया कि यह बहस नहीं, दोनों में अंग्रेजियत की प्रतियोगिता चल रही है। मैं जब वहाँ पहुँचा तो सब कुछ समाप्त हो चुका था। अपरिचित सज्जन को बोलते हुए देखा, "फालतू बात है, आइ मिन हॉन्टटिक नॉनसेंस अशु। दूसरे के पैसे से शराब पीकर, ऐंग्लो इंडियनों से फ्रेण्डशिप कर और माणिकतल्ला के दर्जी का सिला सूट पहनकर साहबीपना नहीं दिखा।" अशुदा कुछ कहने जा रहे थे लेकिन बाधा पाकर रुक गये। हाथ-पैर नचाकर, तरह तरह की मुख-मुद्रा बनाते हुए आखिर में सज्जन ने अपनी राय जाहिर की, "तुम लोगों के पुरखों की तकदीर अच्छी है कि आजाद मुल्क में वास कर रहे हो। लॉर्ड लिनलिथगो या

वावेल का राज्य होता तो तुम लोगो के साहबीपन पर या तो वे खुदकुशी कर लिये होते या फिर धरती फट गयी होती।"

मैं अब चुप नहीं रह सका, कहा, "यह भी तो हो सकता था कि वे लोग कोट-पैंट छोड़कर धोती-कुरता पहनना शुरू कर देते।"

सज्जन ने क्रोधभरी दृष्टि से मेरी ओर देखा। उसके बाद नजर हटाकर अशुदा से पूछा, "हु इज दिस न्यू फ़ेस?"

भीड़ में से किसी एक व्यक्ति ने कहा, "वह बच्चू है, दैनिक संवाद का रिपोर्टर।"

सज्जन ने हाथ बढ़ाकर मुझसे हैण्डशेक किया। बोले, "तुम्हारा यह आइडिया शुरू में मेरे दिमाग में नहीं आया था। कंग्रेचुलेशन्स फॉर योर नॉवेल आइडिया।"

मैंने बस इतना ही कहा, "थैंक्स।"

इसके बाद सबको संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, "गुडबाइ ब्वॉयज। आइ हैव लंच एप्वाइंटमेन्ट विथ ए स्कॉच लेडी। अब देरी करने से काम नहीं चलेगा। गुड-बाइ।"

साहब को विदा-वाणी का किसी ने उत्तर नहीं दिया, अशुदा ने बस इतना ही कहा, "गुड-बाइ लॉर्ड।"

मिस्टर अशुदत्त कलकत्ते के 'डेली न्यूज' जैसे प्रख्यात अंग्रेजी अखबार के चीफ़ रिपोर्टर थे। उनके साहबीपन पर कलकत्ते का संवाददाता-समाज मुग्ध था। मगर, साहबीपन के खेल में आज अशुदा को 'बोल्ड आउट' होते देखकर, मैं आश्चर्य में खो गया। मन ही मन सोचा, यह महापुरुष कौन हैं जो 'डेलीन्यूज' के चीफ़ रिपोर्टर पर उनके साहबीपन के कारण आवाज़ कसकर चले गये?

बाद में सुनने को मिला, सज्जन का नाम है श्रीयुत बाबू गजानन चक्रवर्ती। अंग्रेजों के ज़माने में बाप के अगाध पैसे और उच्छृंखलता-व्यभिचार के बल पर उन्होंने यथेष्ट ख्याति अर्जित की थी। बड़े-बूढ़े अंग्रेज़ अधिकारियों के साथ रंगरेलियों में लिप्त होकर उन्होंने को

कि लॉड का खिताब मिलेगा, पर ऐसा नही हुआ । इसीलिए लोगो ने मज़ाक मे नाम रख दिया है लॉड गजानन । लॉड गजानन ने मुझसे कहा था, "मुझे लॉड का खिताब देने के लिए वाइसराय ने अपनी अनुशसा सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इडिया के पास भेज दी थी । सेक्रेटरी ऑफ स्टेट ने फाइल मे एक लबा-चौडा नोट लिखा था । आखिर मे अपनी राय ज़ाहिर की थी कि मैं समझ नही पाता कि इनका मामला पहले ही क्यो नही भेजा गया । फाइल बैंकिंघम पैलेस भेज दी गयी थी लेकिन अचानक एम्परोर बीमार हो गये और उस बीच भारत भी आज़ाद हो गया ।"

कुछ दिनो बाद राइटस बिल्डिंग के गलियारे मे लॉड गजानन से आमने-सामने भेंट हो गयी । मैंने लॉड को 'विश' करते हुए कहा, "गुड मॉनिग लॉड ।"

लॉड ने मुसकराहट बिखेरते हुए कहा, "गुड मॉनिग माइ ब्वॉय ।"

लॉड चले गये, मैं पीछे से उनकी ओर देखता रहा । लेकिन इसके बाद जब लॉड गजानन से मेरी मुलाकात हुई तो उन्होने सिफ 'विश' करके ही नही जाने दिया, मुझे पकडकर अपने साथ ले गये । "कम एलॉंग माइ ब्वाय, बि माइ गेस्ट एट लच टुडे ।"

मैंने आपत्ति की परन्तु इसका कोई नतीजा नही निकला । लॉड के साथ मुझे ब्यूक गाडी मे बैठना पडा । डलहौजी स्क्वायर से चलकर राजभवन के पूरब से होती हुई एसप्लेनेड पारकर लाड की गाडी जिस सडक पर आयी उसे पाक स्ट्रीट कहा जाता है । गाडी कैमक मोड के पास आकर रुकी । लॉड नीचे उतरे, मैं भी उतरा । लॉड घर के अन्दर की ओर रवाना हुए, मैं भी उनके पीछे पीछे चलने गया । लॉड लिफ्ट के अन्दर गये, मैं भी गया । हम दोनो तीसरी माला मे उतर गये । लॉड ने कॉलिग बेल दबाकर अपने आगमन की सूचना दी । मैं चुपचाप खडा रहा ।

छुटपन से ही पाक स्ट्रीट का नाम सुनता आया हूँ । इसके पहले

भारत-सम्राट इगलैण्ड-प्रभु और ईसामसीह के जन्म-दिन पर लाट साहब का भवन, मनुमेन्ट और इस इलाके की आलोक-सज्जा देखने आ चुका हूँ। विद्यार्थी-जीवन मे मेम साहबो को देखने के लिए बीच बीच मे इस इलाके मे आता था। याद है, मैंने अनिल, बारीन, श्यामल, वगैरह बचपन के दोस्तो के साथ चोरी-छिपके इसी पाक स्ट्रीट मे पहले-पहल सिगरेट का कश लिया था। अतीत के भारत-भाग्य विधाता अँग्रेज लोग ही इस अचल मे वास करते थे। मेम साहब से शादी कर कुछेक बगाली भी सोलहो आना साहब बनने की उम्मीद मे यहाँ वास करते थे। लार्ड माउटबेटन के शासन-काल मे यद्यपि साडी-ब्लाउज पहने मेम साहबो का आविर्भाव हुआ लेकिन मेम साहबो के प्रति मेरे मन मे अनत जिज्ञासा उमडती-घुमडती रहती थी। आये दिन मैं अकसर यहाँ आता रहता था, कभी-कदा रेस्तराँ के अन्दर भी कदम रखता था, लेकिन फिर भी पाक स्ट्रीट मुझे छलनामयी नारी की तरह रहस्यो से भरी लगती थी। लॉड गजानन के साथ इस तीन मजिले फ्लैट मे खडे होने पर मेरे मन मे बीते दिनो की यह सब बात मँडराने लगी।

इस बीच लॉड दो-तीन बार घण्टी बजा चुके थे।

मुझे विस्मय मे डालते हुए एक महिला ने दरवाजा खोला, जो अपने शरीर पर एक बाथ-टावेल लपेटे थी। मेरी ओर से कटाक्षपूर्ण आँखो को हटाकर लॉड की ओर देखा और मुसकराने लगी। कुछ समझ नही सका, तब हा, कहते सुना, "नॉटी ब्वाय! नहाने के बाद कपडा पहनने तक का वक्त नही दिया, सिफ बेल पर बेल बजा रहे हो।" इसके बाद जरा अभिमान भरे स्वर मे बोली, "देखो न, टावेल लपेटकर आना पडा।"

लॉड बोले, "इडिया जैसे ट्रॉपिकल कन्ट्री मे दिस इज मोर देन सफिसियेन्ट।"

खजराहो की प्रस्तर-मूर्त्ति की तरह लॉड लेडी को बाहुओ मे भरकर ड्राइगरूम के अन्दर पहुँचे, लेकिन अभ्यर्थना के अभाव मे मैं खडा ही

रहा। कमरे के बीचोबीच पहुँचने पर लॉर्ड के ध्यान में आया कि मैं उनकी बगल में नहीं हूँ। पीछे मुड़कर पुकारा, "कम एलाग, बच्चू!" लेडी को भी चेतना आयी, दरवाजे पर आकर मेरा स्वागत किया, "प्लीज डु कम इन।"

मैं भीतर गया। लॉर्ड ने परिचय कराया, "स्वीट लेडी, हियर इज़ माइ यंग प्रेस-फ्रेन्ड ऑफ़ माइन।"

मेरी ओर मुखातिब होकर बोले, "बच्चू, मीट माइ स्वीट लेडी डियर डार्लिंग पैमेला मिटार।"

पैमेला मिटार ने बायें हाथ से तौलिया संभालकर मुझसे दाहिना हाथ मिलाया। "वेरी ग्लैड टु सी यू।"

'एक्सक्यूज मी', कहकर पैमेला मिटार साड़ी पहनने अन्दर चली गयी और मैं लॉर्ड की बगल में बैठ गया। लार्ड ने मेरे कान के सामने फुसफुसाते हुए पूछा, "हाउ डु यू लाइक माइ क्लासस?"

मैंने कहा, "सिर्फ पोशाक ही नहीं, बांधवी के चुनाव के मामले में भी आप में रुचि बोध है और मैं इसे सानन्द स्वीकार करता हूँ।"

गर्व की हँसी हँसते हुए लॉर्ड ने अपने टाई को जरा हिला-डुला दिया। अपने आप कहने लगा, "सिर्फ पैमेला ही क्या, मेरी कोई भी क्लासस बुरी नहीं है।"

आधुनिक युग के रोमांटिक युगल मुझे अच्छे ही लगे लेकिन मन में एक सवाल बार-बार पैदा होने लगा। लॉर्ड की उम्र पचास के खाते में होगी और पैमेला तो युवती है। औरतों की उम्र जानने की कला मुझे मालूम नहीं, फिर भी अच्छी तरह देखने के बाद लगा कि इनकी उम्र पच्चीस-तीस से ज्यादा नहीं है। सोचने लगा, "इन दोनों के मन को फागुनी बयार कैसे छू गयी?"

कुछ देर बाद पैमेला मिटार आयी। देह पर हल्के रंग का एक प्रिण्टेड वायल धारण किये हुए छोटे-छोटे बाल, भौंह और आँखों में शायद हल्की कालिमा की छाप। साज-सज्जा में कोई खासियत नहीं

थी मगर कुल मिलाकर बड़ी ही खूबसूरत दीख रही थी। लॉड की यहाँ मेरी आँखो को भी मोह लिया। लगा, रूप की हाट, सजानेवाली मेरे सामने आयी हैं। लाड उठकर खडे हो गये और दाहिना हाथ आगे बढा दिया, पैमेला मिटार ने भी अपना दाहिना हाथ आगे बढा दिया। दोनो हाथ परस्पर मिले और उन्होने वाल्ट्ज डास का एक चक्कर लगाया। आखिर मे पमेला के थामे हाथ से झमके, जिस्म को अपनी ओर खीच लिया और अपना जिस्म, और, मुखड़ा आगे बढा दिया। लार्ड ने मेरी ओर मुखातिब होकर कहा, "प्लीज फॉर के मोमेन्ट हम लोगो की ओर नही ताको।"

मैंने अपना चेहरा घुमा लिया। दो-तीन मिनट बाद लाड ने घोषणा की, "नो मोर बेन ताउ। अब तुम हम लोगो की ओर देख सकते हो।"

प्रमथ चौधरी ने लिखा है, "पाश्चात्यवासी बुढापे मे बचपना करते हैं और हम लोग बचपन मे बुजुर्ग जैसा भाव प्रदर्शित करते हैं। आज बुढापे मे लॉड की हरकत देखकर, मुझे सन्देह न रहा कि वे सचमुच साहब नही हैं।

बहरहाल चेहरा घुमाने पर लॉड को मैंने एकाकी ही पाया। जरा ध्यान से देखा तो पाया कि पैमेला मिटार कमरे मे कोने मे पेट जैसे मोटे जग मे बियर ढाल रही हैं। दोनो हाथो मे बियर के दो जग थामे पैमेला मिटार आयी और हमे ऑफर किया। धन्यवाद देते हुए मैंने ना कहा। लॉड ने सहर्ष स्वीकार लिया। मेरी अस्वीकृति पर दोनो को आश्चर्य हुआ, एक-दूसरे के चेहरे की ओर देखने लगे। लॉड बोले, 'बियर क्यो नही पीना चाहते ? दिस इज नॉट ड्रिंक एटऑल, सिम्पल एपिटाइजर।'

मैंने कहा, "मुझे मालूम है, मगर एक्सक्यूज मी, आइ डॉट इवन टेक बियर।"

अब उन्होने दबाव नही डाला मगर आतिथेया के अनुरोध पर मैं एक गिलास लेमन स्कैश सानन्द स्वीकार कर उन लोगो का देने

लगा। बाद मे लच लिया, उन लोगो के अनुरोध पर मैंने भी सिगरेट पी। *आखिर मे लार्ड और पैमेला मिटार को एकान्त मे छोडकर वहाँ* से विदा हो गया।

बाद मे लॉड ने मुझसे कहा था, "पैमेला को देखकर तुम पर बेहोशी छा गयी। लेकिन उसे तो खूबसूरती की राख ही कहा जायेगा। किसी दिन तुम्हे डैफोडिल के पास ले चलूगा चन्दना के पास ले चलूगा। देखना खूबसूरती किसे कहते हैं। पुरुष क्यों नारी के मोह मे फँस जाता है, उन्हें देखने पर यह बात तुम्हारी समझ मे आयेगी।"

पुरुष क्यो नारी के मोह मे फँस जाता है, यह जानने का कौतूहल रहने पर भी मैं इसके लिए उत्साही नही था। लेकिन लाड को देखने और उनसे घुलने मिलने पर उन्हें जानने का मुझमे *असीम कौतूहल* और उत्साह पैदा हुए थे। उनकी समृद्धि की नुमाइश, नारी-प्रेम की नग्न अभिव्यक्ति, शराब की तीव्र आसक्ति, समाज के ऊँचे तबके मे बेरोक टोक पैठ और सरकारी विभाग मे रौब-दबदबा मुझे आश्चर्य मे डाल देते, सोचने को विवश करते। लाड गजानन को मैं अपने बीच और आसपास पाता लेकिन अपने आदमी के तौर पर नही। उन्हें पकडना चाहता तो वे हाथ से फिसलकर निकल जाते। बहुत दिनो के बाद *ही सही लेकिन ऐसा सुयोग आया था, उस दिन की* मुझे *चाह नही* करनी पडी थी, लॉड गजानन ने स्वय की आत्मकथा बतायी थी

लॉड आकठ शराब पीकर धुत्त हो गये। मैंने अखरोट, सैण्डविच और टमाटर जूस से अपना पेट भर लिया। रात भी काफी गहरा चुकी थी, लॉर्ड हिले-डुले लेकिन उठकर खडे होने का कोई भाव नही दिखाया। दूर की मेज पर दो-चार फिरगी महिलाएँ गाहक की उम्मीद मे बैठी थी, आखिर म वे भी बार छोडकर चली गयीं। एक बत्ती के अलावा बाकी सारी बत्तियो को बुझाकर वेटर और बेयरा होटल के अन्दरूनी हिस्से मे चल गये।

"उठिएगा नही ?" मैंने आहिस्ता से पूछा।

11

लॉड ने जवाब नही दिया। मैंने दुबारा कहा, "रात काफी हो चुकी है, घर नही जाइएगा ?"

उन्होने कोई जवाब नही दिया। पूछा, "आज सात अगस्त है न ?"

प्रश्न सुनकर समझ गया कि लाड ने यद्यपि शराब पी है मगर धुत्त नही हैं वरना सही तारीख कैसे बताते ? मैंने छोटा-सा उत्तर दिया, "हाँ, आज सात अगस्त ही है।"

लाड अपने खयाल मे डूबे ह्विस्की के खाली गिलास को नचा रहे थे। लाड के चेहरे की ओर देखने पर लगा, वे किसी सुदूर अतीत के गलियारे मे चहल-कदमी कर रहे हैं। सोचा, पूछूँ कि क्या सोच रहे हैं मगर मैंने ऐसा नही किया। इसी तरह काफी वक्त गुजर गया। एकाएक देखा, काच को मेज पर दो बूद पानी ढुलक कर गिर पडा। शुरू मे सोचा, गिलास से ह्विस्की की आखिरी दो बूदें गिरी है, लेकिन गौर से देखने पर पता चला कि यह ह्विस्की नही, लॉर्ड की आँख के आसू हैं। मैं अवाक् हो गया। लाड गजानन की आँखो मे आँसू देखूगा, यह मैंने पिछले दिनो मोचा तक न था और आज इस पर यकीन करने मे मुझे कष्ट का अनुभव हो रहा है। मेरे मन मे प्रश्न-उत्तर का खेल चलने लगा कि तभी लाड के आसू फिर मेज पर टपक पडे।

"आप रो रहे हैं ?"

लाड हँस दिये, बोले, "रो रहा था, यही न ? आज एकाएक चालीस साल पहले की कहानी याद आ गयी कि ठीक चालीस साल पहले सात अगस्त को ही मेरे निर्दोष पिताजी को आठ साल की सश्रम कारावास की सजा मिली थी। झूठा इल्जाम लगाकर कुछेक बदमाशो ने उनकी लाख रुपये से अधिक की जायदाद लूट ली थी और उन्हे समाज के सामने घोर अपमानित होना पडा था।"

लाड ने मेरी नजर बचाकर एक लबी साँस ली, बोले, "बन्धू, मुझे देखकर मेरे पिता की तसवीर का तुम अन्दाज नही लगा सकते।

वे मेरी तरह लम्पट, बदमाश, दुश्चरित्र, शराबी और धोखेबाज नहीं थे। वे सही अर्थों में एक मानव थे।"

सिर उठाकर मेरी ओर देखा, शायद मेरी आखों में उन्हें अपने जीवन की प्रतिकृति दिखायी पड़ी। बोले, "जानते हो भाई, मेरे उस तरह के पिताजी जेल गये भाग्य। उन्हें जेल में रहना नहीं पड़ा। छिपाकर अपने जूते में पोटासियम साइनाइड ले गये थे। जेल के अन्दर पहुँचते ही गुसलखाने के अन्दर चले गये और वही पोटासियम साइनाइड खाकर अपमान के हाथ से हमेशा के लिए छुटकारा पा लिया। चालीस साल पहले इसी तरह की एक सात अगस्त की शाम दमदम जेल में मेरे जीवन नाटक के एक चरम अध्याय की समाप्ति हुई थी।

गजानन के पिता श्रीधर चक्रवर्ती विलायत से पढ़कर लौटे हुए इंजीनियर थे। विलायत में ही कलकत्ते के एक विख्यात साहबी कंपनी के लिए उनकी नियुक्ति हो गयी। पाँच साल काम करने के बाद श्रीधर बाबू ने महसूस किया कि अँग्रेजों के अधीन आत्म-सम्मान को बरकरार रखते हुए नौकरी करना असंभव है। तत्कालीन साढ़े आठ सौ रुपये की नौकरी छोड़कर उन्होंने अपने कुछ मित्रों के साथ एक कारखाना खोला। दस-बारह साल के दरमियान तीन पार्टनरों को तीस लाख रुपये की बचत हुई। श्रीधर चक्रवर्ती ने अमहर्स्ट स्ट्रीट में विशाल मकान खरीदा, बेहला में बगीचे से संलग्न मकान और वर्धमान काटोया में जगह-जमीन। इसके अलावा इंपीरियल बैंक में बेहिसाब रुपया-पैसा जमा किया। पुत्र गजानन के जन्म दिन पर हजारों सगे-संबंधी, दोस्त-मित्रों की दावत के अलावा अमहर्स्ट के फुटपाथ पर दिन-भर भोज चलता रहा।

श्रीधर चक्रवर्ती के दो पार्टनर उनकी तरह जीवन जीनेवाले व्यक्ति नहीं थे। 'खाओ, पियो, मौज करो' सिद्धान्त का पालन करते हुए जिन्दगी जीते थे, जितना कमाते थे उससे अधिक खर्च करते थे। इसलिए श्रीधर चक्रवर्ती की संपन्नता और प्रचुरता उनसे बरदाश्त नहीं हुई।

पार्टनरों के अनुरोध पर श्रीधर बाबू भी एक महिला के घर पर बीच-बीच में अड्डेबाजी करने जाते थे। श्रीधर बाबू इस महिला को एक पार्टनर की आत्मीयता के रूप में ही जानते थे। इसलिए पार्टनरों के साथ उनके घर पर जाना निन्दा का कारण हो सकता है, श्रीधर चक्रवर्ती के दिमाग में यह बात एक क्षण के लिए भी नहीं आयी थी।

एक दिन दफ्तर में बैठकर श्रीधर चक्रवर्ती जब काम कर रहे थे एकाएक उन्हें कोर्ट का सम्मन मिला और वे अचकचा उठे। पार्टनर दौलतराम की आत्मीया महिला उनकी स्त्री है? भरण-पोषण का दावा करते हुए मुकदमा दायर कर दिया है? जायदाद के आधे हिस्से पर दावा किया है? हाथ की कलम फर्श पर गिर पड़ी। दिमाग चकराने लगा मगर किसी तरह दीवार थाम कर अपने को सँभाल लिया। थोड़ी देर बाद दौलतराम के घर पर गये, भेंट नहीं हुई। दूसरा पार्टनर भी लापता था।

धर्म के नाम पर शपथ खाकर दौलतराम की आत्मीया कोर्ट के कठघरे में खड़ी होकर बोली, "श्रीधर चक्रवर्ती ने मुझसे शादी की है और अब छोड़ दिया है।" उसके बाद महिला ने अपनी लाछना का इतिहास सुनाया।

दौलतराम, दूसरे पार्टनर, कारखाने के कुछ कर्मचारी के अलावा एक पुरोहित ने भी कहा कि श्रीधर चक्रवर्ती इस महिला के पति हैं। पुरोहित ने कहा कि शालिग्राम शिला को साक्षी बनाकर हिन्दू मत के अनुसार उन्होंने ही इस शादी में पुरोहित का काम किया था।

शर्म और नफरत से श्रीधर बाबू ने अपने किसी सगे-संबंधी या मित्र को अपनी ओर से गवाही देने नहीं बुलाया था। लेकिन फिर भी काफी लोग आये थे।

न्यायाधीश ने श्रीधर चक्रवर्ती को धोखाधड़ी और विवाहिता पत्नी के साथ अमर्यादित व्यवहार करने के कारण आठ साल की सश्रम कारावास की सजा दी। आमहर्स्ट स्ट्रीट के मकान और इंपीरियल

के श्रीधर बाबू के एकाउन्ट का तीन लाख रुपया भी कोट के आदेश पर इस सिंधी महिला को मिला।

वेहला का बगीचावाला मकान और वधमान-कटोया की जमीन-जगह के मालिक श्रीधर बाबू नही, उनकी पत्नी थी। बैंक मे दो लाख रुपया नावालिग गजानन और उनकी माँ के नाम जमा था।

लॉड बोले, "पिताजी की मृत्यु के बाद मा लगभग डेढ़ साल तक जिन्दा रही। उसके बाद मेरी एक मौसी मेरी देखभाल करने वेहला आयी। उस समय मेरी उम्र तेरह या चौदह साल थी। इस कम उम्र मे ही मेरे दिमाग मे बुद्धि आयी। स्कूल नागा कर बुरे लडको के साथ तरह-तरह की जगहो मे चक्कर लगाना शुरू कर दिया।"

आखो को सिकोडकर लॉड ने मुझसे कहा, "जानते हो बच्चू, उतनी कम उम्र ही मे मैंने तय किया कि मैं बुरा से बुरा बनूगा, अव्वल दर्जे का शैतान बनूगा लेकिन समाज के ऊचे तवके के बीच सीना तानकर चलूगा।"

मात्र सोलह वर्ष की उम्र मे गजानन ने कालीघाट के बदनाम मुहल्ले मे चक्कर लगाना शुरू कर दिया। एकाध साल बाद शराब भी पीना शुरू कर दिया। शुरू मे शाम के बाद एक-दो घण्टा गुज़ार कर लौट जाते थे लेकिन कुछ दिन बाद अधिक आनन्द के लोभ मे अधिक पैसा चुकाकर बीच-बीच मे रात वही गुज़ारने लगे। अठारह वर्ष के हो जाने पर गजानन चक्रवर्ती ने विधवा मौसी को तीर्थाटन करने भेज दिया और बैंक का चेक काटने लगे। बेहला के मकान को अपने कब्जे मे ही रखा लेकिन कटोया की सारी जगह-जमीन बेच दी। जब गजानन बीस बाईस साल के हुए उसी समय उनकी ख्याति कलकत्ते के सर्वोच्च तबके के लोगो के बीच फैल चुकी थी। होटल बार और नृत्य की महफिल मे गजानन के अलावा सबको अँधेरा ही अँधेरा दीखता था। सर स्टिफन और सर जेम्स विवकली की दोनो लड़कियाँ गजानन के नाम पर मरती थी। गवनमेंट हाउस के 'यू इयर्स इव' पर आयोजित

नृत्य-समारोह मे मिस लॉरेन्स लॉर्ड के साथ रात-भर नाचती रही। वाइसराय स्वय उस रात आये थे, उन्होंने आगे बढकर लॉर्ड को बधाई दी थी।

लॉर्ड ने मुझसे कहा, "इन महारथियो से हेल-मेल रहने के कारण मेरा व्यवसाय दिन-दिन तरक्की करता गया। सर स्टिफेन लॉरेन्स ने मुझे बुलवाकर डेढ करोड रुपये का एक ठेका दिया। मैंने स्वयं कुछ भी नही किया, ऑल इडिया मोटर-रबर कपनी को ठेका दे दिया। पर बैठे-बैठे मुझे पच्चीस लाख रुपया मिल गया। हैमिल्टन दुकान से एक डायमण्ड नेकलेस खरीद कर मिस डरोथी लॉरेन्स के गले मे पहना दिया, उसका पैतृक ऋण चुका देने के ख्याल से। जानते हो बच्चू, डरोथी ने चिल्ला-चिल्लाकर तमाम अलीपुर मुहल्ले मे इस बात की घोषणा की थी।"

वाक्य-प्रवाह मे बाधा पहुँचाते हुए मैंने कहा, "आपने क्या किया?"

लॉर्ड हँसकर बोले, "डरोथी जानती थी कि मैं उससे शादी करूँगा और मेरे इस वादे पर वह अपने आपको निःस्व कर सब कुछ सौंप देती थी।"

"शादी आपने की थी?"

"पागल हुए हो", लॉर्ड चालाकी की हँसी हँसते हुए बोले। "मुझे यह मालूम था कि सर स्टिफेन दो साल के दरमियान अपने मुल्क लौटकर चले जायेंगे। इसीलिए मैंने डरोथी से कहा था, हिन्दू मत का कहना है कम से कम पाँच वर्ष हिन्दू लड़का किसी दूसरे धर्म की लड़की के निकट सपर्क में रहने के बाद ही उससे शादी कर सकता है। डरोथी मेरी बात पर यकीन कर पाँच वर्ष तक मेरे निकटतम संपर्क में आने से आनाकानी नही करती और यह बंगाली की औलाद उसका पूरा-पूरा [illegible] पर सदुपयोग करता।

"जानते हो बच्चू, कहने में शर्म लगती है लेकिन फिर भी [illegible] करता हूँ कि सैकड़ो लड़कियों के साथ आँखमिचौनी [illegible]

उपहार दिया है लेकिन मुझे दुश्चरित्र कहे, ऐसा साहस किसी को नही है।

जरा चुप रहे उसके बाद फिर अपनी जीवन-गाथा सुनाना शुरू कर दिया।

"मेरे पिताजी को शराब का स्वाद मालूम नही था, अपनी स्त्री के अलावा किसी दूसरी औरत को उन्होने छुआ तक नही; लेकिन उन्हे बदनाम होना पडा था। मैं सबके सामने शराब पीता हूँ, सबको मालूम है कि बार से लडकी उठाकर अपने महीने-भर के लिए रिजर्व पार्क-स्ट्रीट के कमरे में ले जाता हूँ। मैं दुनिया का हर तरह का काम करता हूँ लेकिन कोई कुछ कहने का साहस नही कर पाता। कहेगा ही कौन? मै बहुत से लोगों के साथ मौज-मस्ती मनाता हूँ, बहुतो की मौज-मस्ती की रसद का इन्तजाम करता हूँ। पाक स्ट्रीट के मेरे फ्लेट मे बहुत सारे प्रात स्मरणीय महापुरुषो का आगमन होता है, इसलिए मुझे पकडेगा ही कौन?"

बाद में पता चला, लॉर्ड का अपना कोई व्यावसायिक प्रतिष्ठान नही है, फिर भी व्यावसायिक जगत के वे एक आदरणीय व्यक्ति हैं। अपना शेयर नही है किन्तु दूसरे के नाम बेनामी शेयर धारणकर अनगिन कंपनी कि "बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स" के सदस्य बने हुए हैं। अपना कारखाना नही है लेकिन उद्योगपति हैं। अपने व्यवसाय-वाणिज्य की खोज-खबर नहीं रखते लेकिन ढेर सारे ठेके और परमिट मिल जाते हैं।

एक बार मैंने पूछा था, "यह तो बताइये लॉड, यह सब कैसे सभव हो पाता है?"

लॉर्ड ने मुस्कराते हुए कहा था, "हिंदुस्तान स्नेक चार्मर और रोपट्रिक्स का मुल्क है और उसी मुल्क की संतान होने के नाते अफसरो को मैं 'चार्म' नही कर पाऊँगा? तब क्या कहते हो! अजी ओ नवजवान, सुन लो! ग्रैंडहोटल के साथ चाय पीना होता है तो एक सौ रुपया देना पडता है, लंच में दो सौ और लच खाने की फीस तीन सौ।

उसके बाद वाले घण्टे के लिए नक्द एक हजार। और, इस तरह उर्वशी मेरी बांदी है।''

आखिर के कुछ शब्द कहते वक्त लॉर्ड के दात बज उठे।

पार्क स्ट्रीट के मोड पर अवस्थित डैफोडिल के फ्लैट के अन्दर जा चुका हूँ। उन्मत्त पद्मा नदी जैसे उसके यौवन मे जलसाघर का उभार देखने को मिला था। यह सही है कि उसमे सौंदर्य है लेकिन सौंदर्य की अपेक्षा उसका जिस्म ही अधिक आकर्षक है, और उस जिस्म मे है यौवन के उभार का आमत्रण। जानता हूँ, उस आमत्रण के बुलावे मे शरीक होना मामूली बात नही है—खासकर वह आमत्रण यदि लार्ड के आदेश और स्वार्थ के कारण अयाचित ही प्राप्त हो जाये।

बहुत दिनो तक कितनी ही जगह तरह-तरह के विचित्र माहौल मे लॉर्ड को देख चुका हूँ—उन्मत्त प्रमत्त अवस्था मे, डैफोडिल के बाहुपाश मे, पैमेला के पास अपने आपको लुटाते। लेकिन चाहे किसी भी हालत मे क्यो न हो, अपना व्यतीत भूल नही पाते हैं, अपने बाप की बात और मा की याद बिसरा नही पाते है। दुनिया के तमाम स्थानो मे अनाचार, अविचार, व्यभिचार करते हैं लेकिन बेहला के बगीचेवाले घर मे नही। कहते हैं, यह मकान नही, मन्दिर है। इस मन्दिर मे मेरे माँ बाप की प्रतिमा स्थापित है। शराब पीकर होटल मे अनाचार कर सकता हूँ, सभ्रात अतिथियो को गाली-गलौज कर सकता हूँ, बेयरा लोगो के कपड पर कै कर सकता हूँ लेकिन बेहला के मकान के अन्दर पैर रखते ही मैं अपनी मा का मुन्ना बन जाता हूँ। लगता है, बाबूजी चहल कदमी कर रहे हैं, मा पूजा कर रही है, लहमे-भर मे मैं अपने माँ-बाप के द्वारा दी गयी सत्ता मे वापस आ जाता हूँ।''

अमहर्स्ट वाला मकान लॉर्ड ने बाद मे काफी रुपया लगाकर खरीद लिया था। उसमे खुद नही रहते है, दान कर दिया है।

लॉर्ड को देखकर ऐसा नही लगता कि उनमे कोई स्नेह प्यार, माया-ममता या दुर्बलता है। औरत और शराब के प्रति आसक्ति है

लेकिन दुबलता नही। मैं जान गया था कि लॉर्ड मे दो-चार बहुत बडी बडी कमजोरिया है। अनाथ बच्चे को देखते तो लॉड स्वय को सयत नही रख पाते थे, आवश्यकता से अधिक देकर उनकी सहायता करते थे। और, अगर उन्हे मालूम हो जाता कि कोई बेकसूर मुकद्दमे मे फँसा दिया गया है तो लॉड सब कुछ बिसरा कर उसकी मदद करने लगते थे।

राइटस बिल्डिग के पेस लाउज मे अपने अधिकाश सहकर्मियो को लॉड की खुलकर निन्दा करते देख चुका हूँ, लेकिन किसी को भी उनकी व्यतीत जीवन-कथा की भूमिका की समग्रता मे उनके जीवन के विषय मे सोचते नही देखा है। रेत से भरे फल्गु के टूटे किनारे को देखकर मैं वापस नही आ सका था, थोडी देर तक प्रतीक्षा की थी, कोशिश की थी और मुझे शराबी-दुश्चरित्र लॉड की जीवन नदी की प्रशान्त धारा का पता चल गया था।

अनगिनत रगो के पैवन्द लगी फकीर के अल्खालुक को जैसी मेरी विचित्रताओ से भरी ज़िन्दगी मज मे गुज़र रही थी। दूसरो के सुख दुख की अनुभूतियो से स्वय को परिपूर्णकर लिया था। लेकिन दूर की दृष्टि को जब सहेजकर घर ले आता, जब अपने लोगो को अच्छी तरह देखता तो मेरा खुशियो से भरा मन उदास हो जाता। दैनिक सवाद कार्यालय मे जो लोग मेरे आसपास थे, सुख दुख मे जिनसे रात दिन मिलना-जुलता था, उनके अभिशापित जीवन की उष्ण उसास के स्पर्श से मेरा कलेजा छलनी-छलनी हो जाता था, उनकी खासी की आवाज़ मेरे अन्दर बादलो की गडगडाहट की तरह बजने लगती थी।

बाईस वर्ष से अखबार मे काम करने के बाद भी रजतदा को हमारे दफ्तर मे पंतीस रुपये तीन किस्ता मे मिलते थे। सी० आर० दास का भाषण सुनने के बाद वे दुबारा क्लास-रूम के अन्दर नही गये, स्वराज

पार्टी का झण्डा ले निकल पडे थे। कुछ साल बाद एक स्वदेशी विद्यालय मे शिक्षक का काम करने लगे। आखिर मे बन गये पत्रकार। बाईस वर्ष पहले 'साप्ताहिक जययात्रा' के जिस यात्रा पथ पर निकले थे, उसका आखिरी पडाव किसी दिन नही आयेगा। रजतदा तेरह समाचार-पत्रो के जन्म-मरण के साक्षी है। बच्चो की मृत्यु के बनिस्वत समाचार-पत्रो की मृत्यु की सख्या ही हमारे देश मे अधिक है। समाचार-पत्रो की मृत्यु के साथ ही सवाददाताओ की मृत्यु हो जाती तो बहुत सारी समस्याओ का समाधान हो जाता, लेकिन ऐसा होता नही, दमा, पेचिश और यक्ष्मा की बीमारी से पीडित हो ये लोग जीवन मृत्यु के झूले पर झूलते रहते है। शुरू-शुरू मे जब दैनिक सवाद मे आया था तो रजतदा की सास की तकलीफ और जानलेवा खाँसी देखकर मै डर जाता था, लेकिन बाद मे मेरे लिए यह चीज सहनीय हो गयी। रजतदा को खासी का दौरा आता तो मैं उनका सिर थाम लेता था। बाद मे कै करने पर जब उन्हे शान्ति मिलती तो एक गिलास पानी पिलाकर कुरसी पर चित लेटा देता था।

वे तकरीबन अठारह बरसो से पीडित थे मगर इलाज कराने का कभी मौका नही मिला। विश्वास तो था नही मगर जब पत्नी ने दबाव डाला तो गण्डा तावीज धारण कर लिया। हम लोगो के दफ्तर मे काम कर पतीस रुपया पाने के अलावा दो-चार पत्र पत्रिकाओ मे छोटा-मोटा काम कर तीस-चालीस रुपया अलग से कमा लेते थे, लेकिन कलकत्ता जैसी जगह मे इस आय से तीन तीन प्राणियो की गृहस्थी चलाना मुश्किल है। यही वजह है कि बीच बीच मे घर पर कह आते, "अजी, सुनती हो, आज मुझे लौटने मे देर होगी। तुम लोग खाना खा लेना, मैं कैन्टीन मे खा लूगा।" इसी तरह महीने मे पन्द्रह दिन भूखे रहकर किसी तरह गृहस्थी चलाते थे और दफ्तर आकर वनमाली के केबिन मे दो प्याली चाय पीते थे।

अभाव से पीडित आदमी यह भूल जाता है कि मेहनत करने के

बाद शरीर को आराम देना जरूरी है, भूख लगने पर भोजन आवश्यक है, रोगाक्रान्त होने पर दवा-दारू की जरूरत पड़ती है। प्रकृति के खिलाफ यह संघर्ष ज्यादा दिनों तक टिक नहीं पाता। रजतदा भी इसमें सफल नहीं हो सके थे।

एक दिन दफ्तर आने पर चारों तरफ सन्नाटा दिखायी पड़ा, जैसे किसी को कोई मतलब न हो। व्यस्तता में डूबे अखबारों के दफ्तर में इस तरह की प्रशान्ति का भाव असह्य जैसा लगता है। क्षण-भर में ही ऐसा लगा, जैसे चारों तरफ विसर्जन के बाजे बज रहे हैं। दिमाग चकराने लगा, लेकिन अपने आपको संयत कर मैं जैसे ही दो डग आगे बढ़ा हूँगा कि वनमाली की आवाज सुनायी पड़ी। मैंने चिल्लाकर पुकारा, "वनमाली!"

वनमाली खड़ाऊँ खटखटाते हुए मेरे सामने आया और माथा झुका कर खड़ा हो गया।

"क्यों वनमाली, तुम खामोश क्यों हो? दफ्तर के सभी लोग कहाँ चले गये?"

वनमाली ने जवाब नहीं दिया, उसी तरह सिर झुकाये खड़ा रहा। एक बार जी में आया कि वनमाली को कसकर डाटूं, लेकिन ऐसा नहीं कर सका। चुपचाप खड़ा रहा। एकाएक देखा, वनमाली की आंखों से आँसू की दो बूंदें फर्श पर लुढ़क पड़ी हैं। मैंने ज्योंही उसके चेहरे की ओर देखा, उसने कहा, "बच्चू बाबू, रजत बाबू नहीं रहे।

लगा, पैरों के नीचे की धरती हिल रही है। वनमाली ने कहा, "बच्चू बाबू, अब आप खड़े नहीं रहिये। इतनी बेला हो चुकी, सब कुछ खत्म होने-होने पर होगा। जल्दी चले जाइये।'

किसी तरह अपने आपको घसीटते हुए, ट्राम बस पर छलांग लगाकर चढ़ते हुए जब मैं नीमतल्ला पहुँचा तो रजतदा की लाश रजत शुभ्र राख में परिणत हो चुकी थी। मिट्टी के घड़े में बारी-बारी से सभी लोग गंगा जल भर कर ले आये और रजतदा की चिता पर ढाल-ढाल कर

उनकी तमाम निशानी मिटाने लगे। वासन्ती भाभी ने घडे से गगाजल ढाला। नौ साल के मुन्ना ने भी।

उसके बाद।

उसके बाद वासन्ती भाभी मे खासा अच्छा बदलाव आ गया। नये नाटक की नयी भूमिका मे उतरने के लिए साडी के बदले बिना किनारे वाला सफेद वस्त्र धारण किया। शख की चूडी तोड दी, सिंदूर पोछ लिया। हम लोगो ने निर्वाक् हो वासन्ती भाभी को अपने वसन्त को विदा करते देखा, चैत महीने की रुक्षता और समागत वैशाख की आधी का पागलपन देखा।

उस रात एक हाथ से आसू पोछकर और दूसरे मे कलम थामे दूसरे दिन प्रात काल के लिए हमने अखबार प्रकाशित किया। मनुष्य के जीवन मे ईश्वर का सबसे बडा आशीर्वाद है स्नेह, प्यार, मोह-ममता, प्रेम। बीच-बीच मे लगता, ईश्वर के इस दुर्लभ आशीर्वाद से सवाददाता वचित है, क्योकि ऐसा न होना तो उस रात रजतदा को चिरकाल के लिए विदा करने के बाद स्वाभाविक तौर से काम करते हुए हमने अखबार का प्रकाशन कैसे किया? दिमाग शान्त होने के बाद सोचकर देखा कि बात ऐसी नही है। सवाददाताओ के मन मे भी स्नेह-प्यार, मोह-ममता और प्रेम वास करते है लेकिन हृदय के इस ऐश्वर्य को व्यक्त करने का उनके पास समय, सुयोग या सामर्थ्य कहा है?

नन्दीदा और वीरेन माइती भी हम लोगो के साथ आखमिचौनी खेलते खेलते छिप गये थे। नौ साल तक यक्ष्मा से पीडित रहने के बाद नन्दीदा यादवपुर अस्पताल के प्लेट फार्म से विदा हो गये। नन्दीदा की बूढी मा के लिए घर के अन्दर आने मे मौत को शायद शर्म लग रही थी। तभी तो नौ बरसो के दरमियान पहली बार अस्पताल जाने पर चौबीस घण्टा भी इन्तजार नही करना पडा। पाच घण्टे तक जलते रहने के बाद उनकी देह केवडातल्ला महाश्मशान मे पचतत्व मे विलीन हो गयी। तारादा ने कहा था, "देह इतनी सूख गयी है कि आग मे भी

जलना नही चाहती।"

इन स्मृतियो और चारो तरफ के मृत्यु के अग्रदूतो को अपने साथ ले काम करने मे बीच-बीच मे मुझे भय का अहसास होता था। लगता, शायद मैं भी खाँसते-खाँसते कै कर बैठूगा, पेचिश के दद से छटपटाऊँगा, बेहोश हो जाऊँगा, गले से रक्त बाहर निकलेगा। हो सकता है कि आइने के सामने खडा न हो पाऊँ, कालिख से भरी आखें और छाती की पसलियाँ देखकर कही चिहुँक न उठू। लगता, रजतदा की चिता पर मैं लेटा हुआ हूँ, वासन्ती भाभी की जगह मेरी स्त्री बैठी है और वासन्ती भाभी की तरह वह भी साडी उतार, सफेद बिना किनारी का वस्त्र पहने खडी है, सिन्दूर पोछ रही है, शख की चूडियाँ तोड रही है। रात मे नीद की बाँहो मे खो जाता तो सपना देखता, भय और आतक से चिल्ला उठता। पसीने से सारा शरीर लथपथ हो जाता और पसीने के स्पश से महसूस होता कि मृत्यु का शीतल स्पश आहिस्ता-आहिस्ता मुझे बेबस करता जा रहा है। नीद टूटने की थोडी देर बाद ही मुझे होश आता। अहसास होता कि मैं मरा नही हूँ, जिन्दा हूँ, मेरी शादी नही हुई है।

सवाददाता लाखो आदमी के जीवन-त्योहार के उत्साही दशक और समर्थक होते है। कोई दूसरा आदमी चुनाव जीतता है तो हम डब्ल कालम मे हेडिंग देते हैं, डलहौजी स्क्वायर के लोग मँहगी भत्ते की बढोत्तरी के लिए आदोलन करते हैं तो हम जोरदार शब्दो मे उनका समर्थन कर उन्हे जीत हासिल करने मे सहायता पहुँचाते है, नेताओ की सालगिरह पर उन्हे श्रद्धा ज्ञापित करते हैं और फूला के जलसे की तसवीर छापते हैं। लेकिन प्रारब्ध के निष्ठुर परिहास के कारण सवाददाताओ को अपने जीवन त्योहार मे आनन्द-विभोर होने का मौका नही मिलता। फिर भी वैसा दुर्लभ अवसर अनिल और अजलि के जीवन मे आया था।

प्रेम मुग्ध आनन्द से भरे जीवन मे उनका चेहरा खुशियो से दमक

उठा था। प्रभात के सूर्य के रक्तिम प्रकाश की तरह इन लोगों के प्रेम की छटा से मेरा मन भी रंगीन हो उठा था, हृदय की तंत्रियों में मीठे स्वर की झंकार बज उठी थी, नये जीवन का शुभ संकेत और दमा, पेचिश, यक्ष्मा से मुक्त निर्मल जीवन का आमंत्रण मिला था।

मेडिकल कॉलेज के रियुनियन की कार्यवाही का संवाद लेकर लौटने के बाद रिपोर्ट लिखते वक्त अनिल को मैंने गुनगुनाते हुए पाया। चेहरे पर दबी हुई मुसकराहट, आँखों में ज़रा अधिक चमक। उसके मन का उद्गार भी मेरी दृष्टि की ओट न रह सका। दैनिक संवाद के हम लोगों के बचलर-ब्रिगेड के तमाम सदस्य जीवन की सूखी नदी में भटक रहे थे, अकस्मात् हमें ऐसा लगा जैसे अनिल के प्राणों की गंगा में ज्वार आ गया है और पाल हवा में फड़फड़ा रहा है।

आज के डॉक्टर जिस तरह रक्त, पेशाब, खून, थूक वगैरह की जाँच किये बगैर ठीक-ठीक यह निर्णय नहीं कर पाते कि कौन-सी बीमारी है, उसी तरह बगैर इलाज किये मैं अनुभवी होमियोपैथ की तरह अनिल के 'सिम्पटम' पर ही ध्यान रखने लगा। बीमारी का ठीक-ठीक पता नहीं लगा सका, फिर भी बारीन के कान में फुसफुसाकर कहा, "शायद उसके दरवाज़े पर वसन्त का आगमन हुआ है।" हमें मालूम न था कि मेडिकल कॉलेज की छात्रा अंजलि भी मृगनाभि हरिणी की तरह चंचल हो उठी। कॉलेज के डॉक्टर, प्रोफेसर और सहपाठियों के परिचित चेहरे बुझ गये थे, सगे-संबंधी और दोस्त-मित्र उसे खुशामदी टट्टू जैसे लग रहे थे। बाईस वर्ष की जीवन-परिक्रमा के बाद मिस नियोगी को एकाएक महसूस हुआ, उसने अब तक स्वयं का निरीक्षण नहीं किया है।

चंचलता बढ़ जाने के कारण अनिल के काम में थोड़ी बहुत ढिलाई आ गयी। किसी तरह रिपोर्ट लिखकर भागने लगा। किसी-किसी दिन

हम लोगो के जाने के वक्त दफ्तर आकर रिपोट लिखने के दौरान अजलि का रेखाचित्र खीचने लगता और गुनगुनाकर गाने लगता—कल रात गीत मेरे मन आया, तुम न साथ थे उस क्षण मेरे ।

दो-तीन महीने के बाद लगा, अनिल की चचलता दूर हो चुकी है और उसके जीवन मे प्रशान्ति का आगमन हुआ है। बारीन ने कहा, "बादल छँट गये लेकिन पानी नही बरसा।" हम मे से किसी ने यह नही सोचा था कि वारिश की तेज झडी अनिल के जीवन की सारी थकावट बहाकर ले गयी है और उसके जीवन के रूखे प्रान्तर मे हरयाली का मेला लग गया है।

तीनेक साल बाद हम भूल ही चुके थे कि अनिल के जीवन मे किसी दिन एकाएक ज्वार आया था, उसका मन रगीन हो उठा था और कण्ठ से गीत के बोल मुखर हुए थे।

सिलीगुडी से जीप से दार्जलिंग जाने के दौरान एक दुर्घटना घटने के कारण मेरी जाघ की हड्डी टूट गयी थी और मैं सिलीगुडी अस्पताल मे पडा था। पलस्तर करने के बाद मुझे बन्दी बनाकर अस्पताल के केविन मे रखा गया था। अस्पताल की कैद से छुटकारा पाने मे तब कुछ विलाब था। हरिदा को पत्र लिखकर छुट्टी की अवधि और दो सप्ताह तक बढाने का अनुरोध कर चुका था। भाभी की वहन का भी पत्र आठ-दस दिनो से नही मिला था। मैं बेकरारी के साथ खत का इन्तजार कर रहा था।

सिस्टर जसे ही कमरे के अन्दर आयी, मैंने पूछा, "मेरी काई चिट्ठी नही है?"

एक दिन मेरे विस्तर की चादर बदलने के वक्त सिस्टर को मेरी भाभी के बहन का एक खत मिला था, तोशक के नीचे कुछ नीले लिफाफे भी। उसे पता था कि मैं उसी तरह के नीले वजनदार लिफाफे की उम्मीद मे दिन गिन रहा हूँ।

उस दिन सवेरे की डाक से एक भी खत न आने की वजह से मैं

बिलकुल बुझ-सा गया, दोपहर के वक्त कोई खास भोजन भी नहीं किया। कागज-पत्तर, किताब वगैरह हटाकर क्रोध, दुख और अभिमान से होठ काटते हुए करवट ली। कब सो गया, इसका पता नही चला। तीसरे पहर सिस्टर ने बहुत बार पुकारा लेकिन दवा खाने के डर से मैंने जवाब नही दिया। आखिर मे यह सुनकर कि खत आया है, अपनी कैदी जैसी स्थिति को भूलकर उठने जा रहा था, लेकिन सिस्टर ने मुझे पकडकर सुला दिया और हाथ मे एक मोटा लिफाफा थमाकर वहा से विदा हो गयी।

लिफाफा खोलने पर देखा, यह भाभी की बहन का बहु प्रतीक्षित पत्र नही है। छुट्टी की मजूरी का भी खत नही है। अनिल ने लिखा है।

भाई बच्चू, जो बात आज कई साल से सबसे छुपाकर रखी है, वह तुमसे कहे बगैर चैन नही मिल रहा है। तुम्ही हाथ पकडकर किसी दिन मुझे दैनिक सवाद मे ले आये और सवाददाता बना दिया। समाचार-विभाग की मेज पर बैठ टेलिप्रिंटर के अतराल से दुनिया देखने पर मुझे तृप्ति नही मिलती थी। तुम्हारी तरह ही जगली परिन्दा बनकर उडने के लिए मेरा मन छटपटाता रहता था। तुम्हें मेरे मन की छटपटाहट का अहसास हुआ था और इसीलिए तारादा से कहकर मुझे उपसपादक से रिपोटर बनवा दिया। नये सिरे से जिन्दगी देखने का तुमने जो माहौल तैयार करा दिया, इसके लिए मैं तुम्हारा हमेशा कृतज्ञ रहूँगा। मुझ अपूर्ण को पूण बनाने का जो सुयोग आया है, तुम मुझे रिपोटर नही बनवाते तो वह सुयोग कभी नही आता। इसीलिए आज सबसे पहले तुम्ही को अपनी जीवन-गाथा का एक अज्ञात अध्याय सुना रहा हूँ।

मेडिकल कॉलेज के रियुनियन का रिपोर्ट करने वहाँ गया था। आयोजन के अन्त मे चाय पीने के समय अजलि नियोगी से परिचित होने का मौका मिला। और भी कितने ही आदमी थे लेकिन उस दिन

मेरी आखो ने किसी दूसरे को नही देखा । अजलि ने जैसे मेरे प्राणो मे आग सुलगा दी । लगा, जन्म जन्मातर से मैं उमी के रास्ते पर पलक पाँवडे बिछाकर बैठा हूँ ।

दूसरे दिन रियूनियन की रिपोट पढकर अजलि ने धन्यवाद देने की खातिर मुझे फोन किया । अप्रत्याशित टेलीफोन पाकर मेरी वाक्-शक्ति जैसे खो गयी । इतनी बात एक साथ कहने की इच्छा हुई कि मैं एक भी शब्द बाल नही सका । बस इतना ही कहा, "टेलीफोन से धन्यवाद ज्ञापित करने के बदले किमी दिन मिठाई खिला दीजिएगा ।" उसने कहा था—ज़रूर । कल तीसरे पहर आइये न ।

दूसरे दिन तीसरे पहर मैं पद्मपुकुर स्थित अजली देवी के घर पर गया । चाय पी, नाश्ता किया । यही नही, चार बजे से रात के आठ बजे तक गपशप करता रहा । उसकी बुआ के सामने मन की बात व्यक्त न कर पाने के कारण एक अव्यक्त पीडा लेकर घर लौट आया । मेरा चेहरा देखकर वह मेरे मन की पीडा समझ गयी थी । दफ्तर लौटते ही फोन आया ।

"आज आपका काफी वक्त बरबाद चला गया ?'

"क्यो नही ।"

उधर के फोन से हसी की आवाज़ सुनायी पडा । उसके बाद पूछा, "जाने के वक्त आप कुछ भी नही बोले ।"

जानते हो बच्चू, मैंने क्या कहा ? कहा, "आपने जो कुछ सुनना चाहा था वह तो बताया ही नही ।"

"अगर कुछ नहो कहा तो कहना नही है ?"

"ज़रूर, तब हा बुआ जी को साक्षी बनाकर नही ।"

तोनेक दिन बाद समय निर्धारित कर पाक सकस मैदान गया । पहली बार उसे अकेले मे पाया । खुशी के मारे कितना कुछ कह गया, वह आज याद नहो । तब हा, उसका हाथ अपने हाथ मे थाम लिया था और मुझे लगा था, बहुत दिनो से उसे पहचानता हूँ—अचानक मैं भीड

मे खो गया था लेकिन वह फिर मिल गयी है।

बाद मे वह कितनी ही बार अकेले मे मिली, इसकी कोई गिनती नही। इतना अधिक मिलने-जुलने के बाद मेरे उच्छ्वास मे जितनी ही वृद्धि आयी है। वह उतनी ही प्रशान्त होकर मुझमे समाहित होती गयी है। बेलुडमठ से नाव से दक्षिणेश्वर जाने के समय मेरे हाथ को नचाती हुई बाली, "उच्छ्वास और आनन्द एक नही हैं। नील, तुम पुरुष हो, उच्छ्वास दिखा सकते हो मगर मुझे वह अधिकार नही। मैं मन ही मन आनन्द का अनुभव करती हूँ और अगले दिन का सपना देखती हूँ।"

गगा के दोनो तीर से गोधूलि के शख की ध्वनि हमारे कानो मे तैरती हुई आयी। बेलुडमठ और दक्षिणेश्वर मन्दिर मे बत्तियाँ जल उठी। गोधूलि बेला के अन्तिम प्रकाश मे दूर के पछी लौटकर अपने-अपने बसेरे मे चले गये और उस रोशनी मे मैंने एक बार अजलि को अच्छी तरह देखा। उसके कपाल से बाल की लटे हटा दी, उसे अपने निकट खीच लिया।

"अजु, तुम कौन-सा सपना देखती हो ?'

वह हँस दी, जवाब नही दिया। नाव वाली पुल के नीचे आयी, शाम का इकहरा अँधेरा दोहरा हो गया। अजु बोली, "नील, आख बन्द करो।'

"क्या ?"

"करो न।"

क्या करूँ, आँख बन्द करना पडा। जानते हो बच्चू, अजु ने क्या किया ? उसने मेरे पैर छूकर प्रणाम किया। मैं चिहुँक उठा। देखा, वह गले मे आचल लपेट माथा झुकाये बैठी है। मैंने जैसे ही उसका मुखडा उठाया, उसने असहाय की तरह मेरी ओर देखा और मेरे सीने पर माथा टेक दिया। "नील, मुझे फटकारो नही, कैफियत नही माँगो।"

"यह तो समझा, लेकिन एकाएक प्रणाम क्यो किया ?"

गगा कल-कल ध्वनि करती हुई प्रवाहित हो रही थी, उसकी

धारा की ध्वनि से तुक मिलाते हुए उसने कहा, "आमतौर से धार्मिक अनुष्ठान पर ही प्रणाम करने का रिवाज है। वह सुयोग मेरे जीवन मे आया नही, लेकिन उसकी प्रतीक्षा मे बैठी रहूँ, ऐसा काम कर मैं अपने आपको छलूगी नही।

अजु का सपना दिन के प्रकाश की तरह मेरे समक्ष स्पष्ट हो गया। इसके बाद एक ही क्षण मे मेरा तमाम उच्छ्वास हवा हो गया। अगले दिन के लिए मैं स्वय को प्रस्तुत करने मे लग गया।

तुम्हे तो मालूम ही है कि पिता जी की मृत्यु के बाद से मा की सेहत बिगडी हुई है। पोस्ट ऑफिस के पासबुक और कुछ गहनो को सबल बनाकर यथासभव मा का इलाज कराता रहा। मा की सेहत मे सुधार न आने के कारण मैं स्वय का अपराधी महसूस कर रहा था। अजु को एक दिन अपने डेरे पर ले आया।

"मा, आप डॉक्टर अजलि नियोगी है, तुम्हे देखने आयी हैं।"

मा के सामने अजु ने मुझसे कहा, छि छि छि, मा से आप झूठ बोलते हैं? उसके बाद मा को ओर मुखातिब होकर बोली, "नही मा, मैं डॉक्टर नही, मेडिकल की छात्रा हूँ। अबकी फाइनल इम्तिहान दूँगी।"

अजु की बात पर मा चौक उठी थो, मन ही मन खुश भी हुई थी। अजु को साथ ले मा कमरे के अन्दर चली गयी, लेकिन कुछ देर बाद दरवाजा बन्द कर दिया तो मुझे डर लगने लगा। बहुत दर बाद दोनो कमरे के बाहर आयी।

मा को प्रणाम कर अजु वहा से जाने लगी, मा ने लाड से उसे हृदय स लगाकर विदा किया।

अजु को बस पर बिठाकर ज्यो ही मैं घर लौटा, मा ने मुझे आश्चर्य मे डाल दिया। इतने दिनो से घुलने-मिलने के बाद भी अजु के इतिहास स मैं परिचित नही हो सका था, लेकिन मा को पहली मुलाकात मे ही इसका पता चल गया कि मातृहीन अजु के लिए जब सौतेली मा का जुल्म बरदाश्त के बाहर हो गया तो वह बुआ के पास चली आयी।

माँ से बातचीत करने के बाद अजु और अधिक गभीर हो गयी। कुछ दिन के बाद ही कहा, "देखो नील, जीवन से खिलवाड नही किया जा सकता है। न तो तुम अपने जीवन मे खिलवाड करो और न ही मैं करूँगी। हर क्षण का सदुपयोग करते हुए भविष्य मे सुन्दर जीवन का निर्माण करने की कोशिश करो। प्रतिज्ञा करो कि मा को सुखी बनाओगे।"

एम० बी० का फाइनल इम्तिहान देने के तीन महीने पहले से ही अजु ने मुझसे मिलना-जुलना बन्द कर दिया। पहले पहल जब यह प्रस्ताव सुना तो मैंने कहा था, "तुम पागल हो गयी हो? तीन महीने तक मिलना जुलना बन्द रहेगा?"

"नही।" उसके बाद कहा था, तुम क्या यह चाहते कि तुम्हारे साथ चक्कर काटती रहूँ और फाइनल मे फेल कर जाऊँ?

"नही, ऐसा नही चाहता, तब हाँ—"

"तब और कुछ नही।"

अजु तीन महीने तक मा से लुक छिप कर मिलती रही परन्तु मुझसे एक दिन भी नही मिली। परीक्षा के अन्तिम दिन जुरिसप्रुडेन्स देकर सिनेट हॉल से नीचे आते ही मुझसे कहा, "चलो, जरा चाय पी आयें। दिलकुशा केबिन के अन्दर जाते ही अजु ने मुझे प्रणाम किया। कहा, "अशीर्वाद दो कि परीक्षाफल अच्छा रहे।"

फिस फ्राइ के आखिरी टुकडे को मुँह मे डालकर बोली, "बहुत दिनो के बाद तुम्हे अपने निकट पा रही हूँ। छुरी-काटे को नीचे रख अपना सिर मेरे सीने पर आहिस्ता से रखती हुई बोली, "अब किसी दिन तुमसे अलग नही रहूँगी।"

मैं जवाब नही दे सका, खुशियो से मेरी जबान गूगी हो गयी थी।

अनिल का खत पढने के दौरान प्रसन्नता के कारण मैं अपनी कैदी जैसी हालत भुला बैठा। काच की सलाख के अन्तराल से तराई का जगल पारकर हिमालय पहुँच गया। लगा, अजलि ने पार्वती का रूप धारण

कर लिया है और मुझसे मिलने मे सकुचा रही है।

अनिल ने अपने लबे पत्र के अन्त मे सूचित किया है, "मैंने यह सोचा भी नही था कि माँ को सब कुछ मालूम हो गया है। लेकिन बाद मे पता चला कि जिस मा के गर्भ से मैंने जन्म लिया है, उनसे कोई बात छिपाकर रखना असभव है। माँ हम दोनो को बगैर जताये अजु के फूफा और बुआ के पास गयी और सब कुछ ठीक कर आयी। कब नादु की दुकान पर गयी और बिछुआ-हार तुडाकर अजु के लिए गहने बनवा कर ले आयी, इसका भी मुझे पता नही चला। यही नही, सुनील को भेजकर एक बोर्ड पर लिखा लायी है—डाक्टर (मिसेज) अजलि बैनर्जी, एम० बी०। मुझे कोई जानकारी नही थी, मुन्नी से सबकी नजर बचाकर मुझे एक दिन सारी चीजें दिखायी।

बातचीत के दौरान एक दिन मैंने अजु को अपने दफ्तर के बारे मे सब कुछ बताया था—अपनी और अपने सहकर्मियो के अभाव, दुख दारिद्रय की कहानी सुनायी थी। सब कुछ सुनने के बाद अजु अपने एक हाथ से आख के आँसू पोछती हुई बोली, "उन लोगो के लिए दुख मत करो, उन्हे चैन से सोने दो। मैं डॉक्टर बन जाऊँगी तो तुम लोगो के दफ्तर से किसी रजतदा को विदा नही होने दूँगी।' जरा रुककर कहा था, "तुम्हे पच्चीस-तीस रुपया माहवार मिल रहा है, इसके लिए दुख नही करो। जीवन आज के लिए नही, आनेवाले कल के लिए है। इसके अलावा यह भूल नही जाना कि दुख विपत्तियो के दिनो मे सकट के सामने तनकर खडे होने से ही मनुष्य के भाग्य का निर्माण होता है।"

भाई बच्चू, अजु का घर लाने के पहले तुम्हारी अनुमति चाहता हूँ। तुम्हारी शुभेच्छा और सहयोग के बल पर मैंने जिस जीवन की शुरुआत की थी, उसमे किसी के सुख दुख को एकान्त रूप मे आत्मसात करने के लिए तुम्हारी अनुमति अत्यन्त आवश्यक है।

अनिल के पत्र के साथ अजलि का भी एक छोटा-सा पत्र था। "बच्चूदा, आपके बारे मे इतना कुछ सुन चुकी हूँ कि मन की गैलरी मे

एक खूबसूरत पेंटिंग रखने मे मुझे कोई कठिनाई नही हो रही है। आप लोगो के हाथ से मैं अनिल को छीन लेना नही चाहती, बल्कि आप जैसे पाँच व्यक्तियो के बीच स्थान पाना चाहती हूँ। जीवन का सब कुछ होम करने पर भी जिन्हे कुछ नही मिला वैसे ही लोगो की पत्नी और बाल-बच्चो की सेवा करते हुए मैं आप लोगो के समक्ष एक बहन के रूप मे खडी होना चाहती हूँ। उस अधिकार से मुझे वचित होना पडेगा?

दूसरे दिन मनमोहनदा के एक पत्र से पता चला कि अजलि ने प्रैक्टिस करना शुरू कर दिया है। मनमोहनदा के छोटे लडके का अजलि ने इलाज किया है और तीन दिन के दौरान सेहत मे कुछ सुधार आया है।

शाम के बाद जब डॉक्टर बोस राउण्ड पर आये तो उनका हाथ थाम कर मैंने कहा, "प्लीज, अब मुझे रिहाकर दीजिये। डॉक्टर बोस ने कहा, "एक्स-रे प्लेट मे कोई खामी दिखायी नही पडी। लगता है, ठीक हो गया है।'

दो दिन बाद पलस्तर काटा गया तो बगैर विलब किये मै नाथ बेंगाल एक्सप्रेस मे जाकर बैठ गया।

ट्रेन के डिब्बे मे बैठने पर इजन की बेसुरी आवाज मेरे कानो मे तैरती हुई नही आयी। लगा, नौबतखाने मे शहनाई बज रही है, अनिल के माथे पर मोर है, अजलि बनारसी साडी पहने है और हमलोग बरात मे शरीक हो रहे हैं। बगल के पेड-पौधे और पत्तो पर धुँधलका छा गया तो लगा, रजतदा, नन्दीदा भी दौडे-दौडे आ रहे हैं और तमाम बुराइया आतक मे आकर हमारे आसपास से दूर भागी जा रही हैं। ऐसा महसूस हुआ जैसे अँधेरे से कोई हमे प्रकाश की ओर जाने का सकेत कर रहा है, नये जीवन के आनन्द दिवस का निमत्रण-पत्र हमारे बीच बाँट रहा है। मेरे कण्ठ से अपन आप छलक पडा—

अँधेरे मे तुम
थामे हुए हो मेरे हाथ
कब आये तुम हे नाथ,
धीरे-धीरे चरणो को रखते हुए।
सोचा था, हे जीवन-स्वामी
तुम्हे कही खो न दू
तुम मुझे खो नही सकते
इसका अहसास आज रात हुआ।
जिस रात मैं अपने ही हाथ मे
बुझा देता प्रकाश
जलाते हो तुम उसमे
अपना ध्रुवतारा।
पथ चलने का तुम्हारा श्रम जब थम गया।
देखा उस क्षण
मेरे पथ पर स्वय तुम्ही
चल रहे मेरे साथ!

कुछ बहुचर्चित उपन्यास

•••

- खरीदी कौड़ियो के मोल (दो खण्डो मे) — बिमल मित्र
- बेगम मेरी विश्वास (दो खण्डो मे) — बिमल मित्र
- विषय नर-नारी — बिमल मित्र
- ढोढ़ाय चरितमानस — सतीनाथ भादुड़ी
- जीवन-सध्या — आशापूर्णा देवी
- नटी — महाश्वेता देवी
- मरुभूमि — शकर
- आसावरी — अरुण बागची
- उल्टा दांव — प्रबोध कुमार सान्याल
- कोयले का रग लाल — निमल घोष
- स्नेह-वर्षा — सुनील गगोपाध्याय
- मैं वही हूँ — सुनील गगोपाध्याय
- मेम साहब — निमाई भट्टाचार्य

•